प्रस्तावना ।



जब कि, यवन बादशाहोंके महान् अत्याचारसे बलात्काररूपी घोर राहु अपने तीव्र तिमिरसे भारतभण्डारके विमल सूर्यरूपी सुग्रन्थ ज्योतिष-विद्याको चारों ओरसे आच्छादित कर रहा था, बडे बडे त्रिकालज्ञ ऋषि मुनीश्वरोंके प्रणीत ग्रंथ बलवान् मुसलमान अग्निकुंडमें हवन कररहे थे, जिन ग्रन्थोंके अवलंबसे ज्योतिषी त्रिकालज्ञ कहलाते थे, ऐसी अपूर्व घटनाको अवलोकन कर उससे पार पानेके हेतु ' जीवनाथनामा ज्योतिर्विद् ' जो उस कालमें परमसिद्ध पुरुष कहलाते थे, ज्योतिषविद्यामें अद्वितीय ज्ञान होनेसे लोग उनकी जिह्वामें सरस्वतीका वास बतलाते थे, उन्होंने यह निर्मल शब्दरूपी अमृतपुंजसे " भावकुतूहल " ज्योतिष फलादेशरूपी धारा निकाली है, इसमें निमग्न होने (पढने) से मनुष्य सर्वज्ञाता हो सकता है, तीनों कालकी बातको जान सकता है, उत्तम रीतिसे कुण्डलीका फलाफल कह सकता है. यह ग्रन्थ संस्कृतमें होनेसे सबके समझमें नहीं आता था इसलिये अनभिज्ञ बालकोंके प्रसन्नार्थ टीहरी (गढवाल) निवासी ' महीधर ' नामा ज्योतिषी निर्मित अत्युत्तम भाषाटीकासहित इसे अपने "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेसमें मुद्रित कर प्रसिद्ध किया ।

अबकी बार चतुर्थावृत्तिमें फिर भी बृहज्जातकादि ग्रन्थोंके आश्रयसे शास्त्रियोंसे भली भांति संशोधन कराय मुद्रित कर प्रकाशित किया है. आशा है कि अनुग्राहक ग्राहक इसे ग्रहण कर स्वयं लाभ उठावेंगे और मेरे परिश्रमको सफल करेंगे ।

आपका कृपाकांक्षी-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

" श्रीवेङ्कटेश्वर " स्टीम्-यन्त्रालयाध्यक्ष-मुंबई.



श्रीः ।

अथ भावकुतूहलविषयानुक्रमणिका ।

इति भावकुतूहलविषयानुक्रमणिका समाप्ता ।

॥ श्रीः ॥

अथ भावकुतूहलम् ।

भाषाटीकासमेतम् ।



प्रथमोऽध्यायः ।

मंगलाचरणम् ।

महः सेतुं हेतुं सकलजगतामंकुरतया
सदा शंभोरम्भोभवभवभयत्राणजनकम् ॥
अहं वंदे तस्यासुरसुरमनोमोदनिकरं
चिदानन्दं पादामलकमललावण्यमधिकम् ॥ १ ॥

प्रणम्य कान्तां परमस्य पुंसो हृदब्जसंस्थां परदेवतां ताम् ॥
करोति भाषामथ बालतुष्ट्यै महीधरो भावकुतूहलीयाम् ॥ १ ॥

भाषाकार ग्रंथादिमें मंगलाचरणरूप प्रणाम करता है-कि,परम पुरुष; परमात्माकी कांता (परब्रह्ममहिषी) जो हृदयकमलमें नित्य संस्थित परम देवता अर्थात् साक्षात् परब्रह्म निर्विकल्प स्वरूप आपही होरही एवं जिससे परे अन्य कोई नहीं है ऐसी उस परमइष्ट देवता साक्षात् योगमायाको प्रणाम करके महीधरनामा (ज्योतिषी टिहरीगढवालनिवासी)अथ(मंगलार्थ)अब भावकुतूहलके अनभिज्ञ बालकोंके प्रसन्नतार्थ इसकी भाषाटीका सरल देशभाषामें करताहै-

ग्रंथकर्ता ग्रंथादिमें अपने इष्टदेवता शिवजीको प्रणाम करता है कि-(अहं) मैं जीवनाथनामा ज्योतिषी उस सदाशिवके जलसे उत्पन्न संसार यद्वा ब्रह्माकी उत्पन्नकी हुई सृष्टिमें जो जन्म मरणका एकमात्र भय है उससे रक्षा करनेवाले अर्थात् मुक्ति देनेवाले तथा दानव, एवं देवताओंके मनके आनंदकी खानि "आनंदो ब्रह्मणो

रूपम्" इस वचन प्रकारसे बोधन हुआ कि, देव दानव परब्रह्म स्वरूप जिस शिवका मनमें ध्यान करते हैं तथा (चिदानंद)निराकार केवल प्रकाशमय सत्तामात्र एक आनंदस्वरूप, समस्त जगतोंका उद्धार करनेवाले(सेतु) पुल संसारके उत्पन्न करनेका(हेतु) बीज ऐसे शिवजीके चरणकमलोंका (अधिक लावण्य) आनंदामृतास्वादपरिपूर्ण जो अनुपम कोमलता है उसको (महः) उत्सवपूर्वक प्रणाम करता हूं ॥ १ ॥

ग्रन्थकर्तुः प्रतिज्ञा ।

विचारसंचारचमत्कृतं यन्मतं मुनीनां प्रविलोक्य सारम् ॥ श्रीजीवनाथेन विदां हिताय प्रकाश्यते भावकुतूहलं तत् ॥ २ ॥

जो प्राचीन मुनियोंके अनेक मतोंके ग्रंथ बड़े बड़े हैं उनमें जब बहुतसा विचार फैलाया जाय तब उसका चमत्कार मिलता है उसका सारांश देखकर थोडेहीमें वही चमत्कार मिलनेके हेतु विद्वानोंके उपकारार्थ श्रीजीवनाथ ज्योतिर्वित् करके यह "भावकुतूहल" प्रकाश किया जाता है ॥ २ ॥

धात्रोदितं यवनकर्कशशब्दसङ्गादाधिव्यथाविदलितं परमं फलं यत् ॥ मत्कोमलामलरवामृतराशिधारास्नानं करोतु जगतामपि मोदहेतोः ॥ ३ ॥

ज्योतिषका परम होराफल जो ब्रह्माआदिकोंने कहाथा अर्थात् प्राचीन उत्तम ग्रंथ ऐसे चमत्कारी थे कि,जिनके प्रभावसे ज्योतिषी त्रिकालज्ञ कहाते थे परंतु बीचमें मुसल्मान बादशाह ऐसे मतवादी हुए कि सनातनधर्मसंबन्धी हिंदूधर्ममें अत्यंत अत्याचार किया यहां पर्यंत कि हिन्दुओंके पास जो जो उत्तम ग्रंथ थे,वे बलात्कारसे नष्ट भ्रष्ट कर दिये और "यथा राजा तथा प्रजा" सर्वसाधारणमें

यावनी भाषा प्रचलित होगई संस्कृतका ह्रास होता गया ऐसे कारणोंसे ज्योतिषसंबंधी चमत्कारी फलादेश भी व्यर्थताको प्राप्त होकर यावनीभाषासे दलित होगया. इसके उद्धारार्थ इस ग्रन्थकी भूमिकामें ग्रंथकर्त्ता पंडित जीवनाथ कहते हैं कि, मेरे कोमल एवं निर्मल शब्दरूपी अमृतपुञ्जसे जो यह भावकुतूहल ज्योतिष फलादेशरूपी धारा निकलती है इसमें उक्त फलादेश (यवनोंसे मलिन होरहा) स्नान करे जिससे निर्मल होकर पुनः अपने उसी पदको प्राप्त हो तथा संसार भी उसकी उन्नतिसे हर्षित हो ॥ ३ ॥

अथ द्वादशभावसंज्ञा।

तनुकोशसहोदरबन्धुसुतारिपुकामविनाशशुभा विबुधैः ॥ पितृभं तत आप्तिरपाय इमे क्रमतः कथिता मिहिरप्रमुखैः ॥ ४ ॥

लग्नादिक्रमसे १२ भावोंके नाम। तनु (१) प्रकारांतरसे लग्न, मूर्ति, अंग, उदय, वपु, कल्प, आद्य। कोश (२) प्र० स्वं, कुटुंब, धन। सहोदर (३) प्र० सहज, भ्रातृ, दुश्चिक्य, विक्रम। बंधु (४) प्र० अंबा, पाताल, मित्र, तुर्य, हिबुक, गृह, सुहृत्, वाहन, सुख, अंबु, जल। सुत (५) प्र० तनय, बुद्धि, विद्या, आत्मज, औरस, तनय, मंत्र। रिपु (६) प्र० द्वेष्य, वैरि, क्षत, रोग, मातुल। काम (७) प्र० यामित्र, अस्त, मदन, स्मर, मद, द्यून। विनाश (८) प्र० रंध्र, आयु, छिद्र, याम्य, निधन, लय, मृत्यु, संग्राम। शुभ (९) प्र० गुरु, मार्ग, भाग्य, धर्म। पितृ (१०) प्र० राज्य, कर्म, मान, आकाश। आप्ति (११) प्र० लाभ, भव। अपाय (१२) प्र० व्यय, रिष्फ, नाश। और त्रिकोण ९।५। त्रित्रिकोण ९। केंद्र १।४।७।१०। पणफर २।५।८।११। आपोक्लिम ३।६।९।१२। ये भी संज्ञा हैं ॥ ४ ॥

राशिस्वामिनः ।

कुजकवी बुधचन्द्रदिवाकरा बुधसितावनिजा गुरुसूर्यजौ ॥ शनिगुरू च पुरातनपण्डितैरज-मुखादुदिता भवनाधिपाः ॥ ५ ॥

राशियोंके स्वामी कहते हैं कि, मेषका स्वामी मंगल, वृषका शुक्र, मिथुनका बुध, कर्कका चंद्रमा, सिंहका सूर्य, कन्याका बुध, तुलाका शुक्र, वृश्चिकका मंगल, धनुषका बृहस्पति, मकर और कुंभका शनि, मीनका बृहस्पति ये राशिस्वामी हैं ॥ ५ ॥

ग्रहमैत्र्यादिकथनम् ।

अङ्गारकेन्दुगुरवो रविचन्द्रपुत्रावादित्यचन्द्रगु-रवःकविचण्डभानू ॥ भौमार्करात्रिपतयो बुधसू-र्यपुत्रौ शक्रेन्दुजौ दिनकरात्सुहृदो भवन्ति॥६॥

सौम्यः समा हि सकलाः कविभानुपुत्रौ
मन्देज्यभूमितनया रविजः क्रमेण ॥
भौमेज्यकौ सुरगुरू रिपवोऽवशिष्टा-
स्तात्कालिका व्ययधनायदशत्रिबन्धौ ॥ ७ ॥

ग्रहोंके मित्र, सम, शत्रु कहते हैं कि, सूर्यके चं. बृ० मं०, चंद्रमाके सू० बु०,मंगलके सू०चं० बृ०, बुधके शु० सू०, बृहस्पतिके सू० चं० मं० शुक्रके बु० श०, शनिके बु० शु० मित्र हैं। तथा सूर्यका बुध सम, चंद्रमाके मं० बृ० शु० श०, मंगलके शु० श०, बुधके श० बृ० मं०, बृहस्पतिका श०, शुक्रके मं० बृ०, शनिका बृहस्पति सम है। अन्य सब शत्रु हैं, अर्थात् सूर्यके शु० श०, चंद्रमाका कोई शत्रु नहीं, मंगलका बुध, बुधका चंद्र, बृहस्पतिका बु०शु०,शुक्रके सू०चं०,शनिके सू०मं०चं०शत्रुहैं और अपने स्थित

भावसे १२।२।११।१०।३।४स्थानोंमें तात्कालिक मित्र होते हैं६।७

ग्रहमैत्र्यादिचक्रम् ।

नाम	रवि	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
शत्रु	शनि शुक्र	०	बुध	चन्द्र	बुध शुक्र	सूर्य चन्द्र	रवि चद्र भौम
सम	बुध	शुक्र गुरु भौम श	शुक्र शनि	भौम गुरु शनि	शनि	गुरु मंगळ	गुरु
मित्र	चद्र गुरु मगल	, रवि बुध	चद्र गुरु सूर्य	सूय शु	सूर्य चद्र मगळ	बुध शनि	बुध शुक्र

ग्रहोच्चनीचकथनम् ।

परमोच्चमजे दशभिर्वृषभे शिखिभिर्मकरे गजयुग्म-लवैः ॥ तिथिभिर्युवतीभवने विधुभे किल पंचभिरेव झषे त्रिघनैः॥८॥कृतिभिश्चतुलाभवने रवितःकथितं मदने खलु नीचमतः ॥ मिथुने तमसः शिखिनो धनुषि प्रथमे बुधभे गुरुभे भवनम् ॥ ९ ॥

सूर्यका परम उच्च मेषके दश अंशपर,चद्रमाका वृषके३अंशपर एवं मंगलका मकरके२८,बुध कन्याके१५;बृहस्पति कर्कके५;शुक्र मीनके२७;शनि तुलाके२० अंशपर उच्च होते हैं और उच्चसे सप्तम राशिमें उक्त अंशोंकरके नीच होते है। राहु मिथुनके प्रथमांश और केतुका धनके प्रथमांशपर परम उच्च होता है और कन्या राहुके मीन केतुके स्वगृह हैं ॥ ८ ॥ ९ ॥

अथ षड्वर्गसाधनम् ।

होरा राशिदलं समे प्रथमतश्चन्द्रस्य भानोरतो व्यत्यासाद्विषमे दृकाणपतयःस्वाक्षाङ्कभावाधिपाः । मेषादादिमभे वृषे तु मकराद्युग्मे घटादिन्दुभे कर्कादेव नवांशकानि गदिताःस्युर्द्वादशांशाःस्वभात्

षड्वर्गमें प्रथम होरा कहते हैं–राशिका आधा होरा है,वह समराशिके प्रथमदल१५अंशपर्यंत चन्द्रमाकी; उत्तरार्द्धमें१५अंशसे३०

पर्यंत सूर्यकी, तथा विषमराशिमें पूर्वार्द्ध १५ अंशपर्यंत सूर्यकी उत्तरदल १५ अंशसे ३० पर्यंत चन्द्रमाकी होरा होती है; जैसे मेषके १५ अंशपर्यंत सूर्यकी, १५ से ऊपर चंद्रमाकी, वृषके १५ पर्यंत चन्द्रमा ऊपर सूर्यकी होरा है, ऐसेही सबके जानना। द्रेक्काण प्रथम त्रिभाग १० अंशपर्यंत उसी राशिके स्वामीका, द्वितीयभाग १० अंशसे २० अंशपर्यन्त उस राशिसे पंचमराशिके स्वामीका और तृतीय भाग २० से ३० पर्यंत उस राशिसे नवम राशिके स्वामीका द्रेष्काण होता है। जैसे मेषके १० अंश पर्यंत मेषके स्वामी मंगलका, १० से २० लौं उससे पंचम सिंहके स्वामी सूर्यका, २० से ३० पर्यंत उससे नवम धनके स्वामी बृहस्पतिका द्रेक्काण होता है। नवांशक मेष, सिंह, धनको मेषसे, वृष, कन्या, मकरको मकरसे, मिथुन। तुला, कुंभको मिथुनसे। कर्क, वृश्चिक, मीनको कर्कटसे गिनना अर्थात् चर, स्थिर, द्विस्वभाव राशि तीन तीनका १। ९। ५ त्रिकोण मेल है, इनमें (चरादि) जो चरराशि हो उससे नवांश गिनाजाता है एक राशिके ३० अंशके ९ भाग नवांश कहाते हैं, वह विभाग ऐसे हैं कि, ३ अंश २० कलाका एक नवमांश है, ६। ४० पर्यंत दूसरा, एवं १०। ० तीसरा, १३। २० चौथा. १६।४० पंचम, २०।० छठा, २३।२० सातवां, २६। ४० आठवां ३०।० नवम भाग है. जैसे मेषके मेषहीसे गिनता है तो ३ अंश २० कलापर्यंत मेषका; ६ अं० ४० क० पर्यंत वृषका, १०।० में मिथुनका. तथा वृषमें मकरसे गिनती है तो ३। २० पयत मकरका, ६।४० लौं कुंभका इत्यादि। मिथुनमें ३। २० में तुलाका ६।४० में वृश्चिकका इसी प्रकार जानना। द्वादशांश एक राशिके बारह

नवांशगणना।

चं० १	स्थं १०	स्थं ७	स्थं ४
१।५।९	२।६।१०	३।७।११	४।८।१२

नवांजविभागः।

भाग.	१	२	३	४	५	६	७	८	९
अंश.	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	३०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	५०	०

भाग द्वादशांश होते है । २ अंश ३० कलाका एक द्वादशांश होता है यह अपनीही राशिसे गिनाजाता है. जैसे-मेषके २ अंश ३० कलापर्यंत मेषका. ५ । ० पर्यंत वृषका एवं ७।३० मिथुनका, १० ।० कर्कका, १२।३० सिंहका, १५ । ० कन्यका, १७ । ३० तुलाका, २०।०वृश्चिकका, २२।३० धनका, २५।० मकरका, २७।३० कुंभका, ३० । ० में मीनका द्वादशांश जानना । ऐसेही वृषमें वृषसे, मिथुनमें मिथुनादि । द्वादशांश सभी राशियोमें जानने ॥ १० ॥

षड्वर्गसाधनचक्रम् ।

ग्र	र	च	म	बु	बृ	शु	श	रा	के
उच्चराशि	१	२	१०	६	४	१२	७	३	९
अंश	१०	३	२८	१५	५	२७	२०	१	१
नीचरा	७	८	४	१२	१०	६	१	९	३
अंश	१०	३	२८	१५	५	२७	२०	१	१
गृह	५	४	१/८	४/६	९ १२		१०/११	६	१२
मूलत्रिको	५	२	१	६	९	७	११	३	१२
रंग	र श्या	गौर	रक्तगौ	पूवा	पीत	चित्र	कृष्ण	कृष्ण	धूम्र
वर्णरंग	ताम्र	श्वेत	अतिर	हरित	पीत	चित्र	कृष्ण	कृष्ण	धूम्र
देवता	अग्नि	जल	कुमार	विष्णु	चंद्र	इंद्राणी	ब्रह्मा	राक्षस	रा
दिशापति	पू०	वा०	द०	उ०	ई	आ	प	नै	नै
पापशुभ	पाप	शुभ क्षी पा	पाप	शुभ पा यु	शु	शु	पा	पा	पा
पु स्त्री नपु	पु	स्त्री	पु	नपु	पु	स्त्री	न	पु	न
महाभूत	अग्नि	जल	अ	भूमि	आका	वायु	आ	आ	आ
वर्णाधिश	राजा	अन्य	रा	वैश्य	ब्रा	ब्रा	अंत्यज	अं रा	अं रा
सत्वादिगु	सत्त्व	सत्त्व	तम	रज	सत्व	रज	तम	तम	तम
स्थान	देवा	जलाशा	अग्नि	क्रीडाभू	भंडार	शयन	स्वात	छिद्र	छिद्र
वस्त्र	मोटा	नया	दग्ध	जलन	अदृढ	दृढ	स्फुटित	मलि	मलि
धातु	ताम्र	मणि	सुवर्ण	रौप्य	सुव	मोती	ल्ये	शीश	शीश
ऋतु	ग्रीष्म	वर्षा	ग्री०	शरद्	हेम	वस	शि	ग्री०	ग्री०
नि दृ	३	१०	९	५	८	४	७	७	७

पंचपंचाष्टशैलाक्षास्त्रिंशांशा विषमे क्रमात् ॥
भौमभानुजजीवज्ञशुक्राणामुत्क्रमात्समे ॥११॥

त्रिंशांशपाल.

विषमराशि	५	५	८	७	५	५	७	८	५	५	समराशि
	मं.	श	बृ.	बु	शु	शु	बु.	बृ.	श	मं.	
	५	१२	२०	२५	३०	५	१२	२०	२५	३०	

त्रिंशांश–विषम राशिके ५ अंशपर्यंत मंगलका पांचसे ऊपर १० अंशपर्यंत शनिका, एवं १८ पर्यंत बृहस्पतिका, २५ लों बुधका, ३० पर्यंत शुक्रका त्रिंशांश और समराशिमें (व्युत्क्रम) विपरीत जैसे ५ अंशपर्यंत शुक्रका, १२ पर्यन्त बुधका, २० प० बृहस्पतिका, २५ प० शनिका, ३० पर्यंत शुक्रका होता है ॥ ११ ॥

ग्रहदृष्टिविचारः ।

चरणविवृद्ध्या खेटा दशमसहोत्थेत्रिकोणभे जनने॥
चतुरस्रेथ कलत्रे प्रयताःपश्यन्ति तत्फलंक्रमतः॥१२॥

ग्रहदृष्टि–जिस भावमें ग्रह है उससे तीसरे दशवें स्थानमें एक चरण दृष्टि देखता है, ९ । ५ में दो चरण, ८ । ४ में तीन चरण सप्तममें पूरे चार चरण दृष्टि देखता है, ऐसाही फल भी दृष्टिका देता है, कोई ऐसाभी अर्थ करते हैं कि, सूर्य तीसरे, चंद्रमा दशममें, मंगल नवमें, बुध पंचममें, बृहस्पति अष्टममें, शुक्र चतुर्थमें, शनि सप्तममें पूर्ण देखते हैं यह निसर्ग दृष्टि है ॥ १२ ॥

राशीनां चरादिसंज्ञा ।

चरस्थिरद्विस्वभावाः क्रूराक्रूरावजादितः ॥
नरनारी क्रमादेव विषमाख्यसमावपि ॥ १३ ॥
मिथुनं धन्विपूर्वार्द्धतुलाकन्याघटा नराः ॥
चतुष्पदा धनुः सिंहवृषमेषा मृगादिमः ॥१४॥
मूलत्रिकोणमर्कादेः सिंहो वृषभ आदिमः ॥
कन्याधनुस्तुलाकुंभः प्रवदंति पुरातनाः ॥१५ ॥

इति भावकुतूहले संज्ञाध्यायः प्रथमः ॥ १ ॥

मेषादि राशि क्रमसे चर, स्थिर, द्विस्वभावसंज्ञक हैं. मेष चर, वृष स्थिर, मिथुन द्विस्वभाव, कर्क चर इत्यादि (प्रकट) १।४।७। १० चर, २।५।८।११ स्थिर, ३।६।९।१२ द्विस्वभाव हैं।ऐसेही मेष क्रूर, वृष सौम्य, मिथुन क्रूर, इत्यादि (प्रगट) १।३।५।७।९। ११ क्रूर,२।४। ६।८ । १० । १२ सौम्य हैं । ऐसेही मेष पुरुष, वृष स्त्री, मिथुन पु० इत्यादि (प्रगट) विषम राशि पुरुष, सम स्त्रीसंज्ञक हैं । ऐसेही विषम सम क्रमसे जानने, जैसे मेष विषम, वृष सम इत्यादि(प्रगट)१।३।५।७।९।११ विषम,२।४।६।८।१०-१२ सम हैं और मिथुन धनका पूर्वार्द्ध, तुला, कन्या (द्विपद मनुष्य)धनका उत्तरार्द्ध सिंह, वृष, मेष, मकरका पूर्वार्द्ध चतुष्पद उपलक्षणसे मकरका उतरार्द्ध, कुंभ, मीन जलचर हैं । कर्क, वृश्चिक कीट हैं और सूर्यका मूलत्रिकोण सिंह चन्द्रमाका वृष, मंगलका मेष, बुधका कन्या, बृहस्पतिका धन, शुक्रका तुला, शनिका कुंभ है यह प्राचीन आचार्योंने कहे हैं ॥ १३–१५ ॥

राशिभेदचक्रम् ।

राशयः	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि०	धन	मकर	कुम्भ	मीन
वषमा	वि०	स०	वि०	स०	वि०	स०	वि०	स०	वि०	स०	वि०	स०
पु स्त्री	पु०	स्त्री०	पु०	स्त्री०	पु०	स्त्री०	पु०	स्त्री०	पु०	स्त्री०	पु०	स्त्री०
क्रूर क्रूर	क्रूर	सौ०	क्रूर	सौ०	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौ०
चरादि	चर	स्थिर	द्विस्व	च०	स्थिर	द्वि०	च०	स्थिर	द्वि०	चर०	स्थिर	द्वि०
दिशा	पू०	द०	प०	उ०	पू०	द०	प०	उ०	पू०	द०	प०	उ०
संज्ञा	चतुष्पद	चतु०	द्विपद	कीट	चतु०	द्विपद	द्विपद	कीट	द्वि० चतु०	चतु० जल०	द्विपद	जल

इति भावकुतूहले माहीधरीभाषाटीकायां संज्ञाऽध्यायः प्रथमः ॥ १ ॥

द्वितीयोऽध्यायः ।

अथ लग्न चिह्नज्ञानम् ।

जनुषि लग्नगतो वसुधासुता मदनगोपि गुरुः कविरेव वा ॥ भवति तस्य शिरो व्रणलांछितं निगदितं यवनेन महात्मना ॥ १ ॥

अब यहांसे जन्मलग्न निश्चय करनेके लिये चिह्न कहे जाते हैं:–

जिसके जन्मलग्नमें मंगल तथा सप्तम बृहस्पति अथवा शुक्र हों तो उसके शिरमें चोट लगनेसे यद्वा व्रणादिसे (दाग) खोट होवे, यह योग महात्मा यवनका कहा है ॥ १ ॥

भवति लग्नगते क्षितिनन्दने भृगुसुतेऽपि विधा-
विह जन्मिनाम्॥शिरसि चिह्नमुदाहृतमादिभि-
र्मुनिवरैर्द्विरसाब्दसमासतः ॥ २ ॥

मंगल लग्नमें शुक्र चंद्रमा सहित जिस मनुष्यका हो उसके शिरमें दूसरे अथवा छठे वर्षमें चिह्न होवे यह पूर्व मुनियोंने कहा हैं. इसमें स्मरण रखना चाहिये कि, मंगल बली हो तो (व्रण) दाग और शुक्र चंद्रमा बली हों तो तिल (मशक) लाखन आदि चिह्न होते है ॥ २ ॥

भार्गवे जनुरङ्गस्थे चाष्टमे सिंहिकासुतः ॥
मस्तके वामकर्णे वा चिह्नदर्शनमादिशेत् ॥ ३ ॥

जन्मलग्नमें शुक्र तथा अष्टम स्थानमें राहु हो तो माथेमें अथवा बायें कानमें कुछ प्रकार चिह्न होवे ॥ ३ ॥

मदनसदनमध्ये सिंहिकानन्दनो वा
सुरपतिगुरुणा चेदङ्गराशौ युते नुः ॥
प्रकथितमिह चिह्नं चाष्टमे पापखेटे
कविरपि गुरुरङ्गे वामबाहौ मुनीन्द्रैः ॥ ४ ॥

सप्तम भावमें राहु लग्नमें बृहस्पति हो अथवा लग्नमें बृहस्पति राहु युक्त हो अष्टमभावमें पापग्रह हों अथवा शुक्र बृहस्पति लग्नमें

अष्टममें पाप ग्रह हों तो भी मनुष्यके बांये (बाहु) भुजापर चिह्न होवें । यह योग मुनिश्रेष्ठोंने कहा है ॥ ४ ॥

लाभारिसहजे भौमे व्यये वा शुक्रसंयुते ॥
वामपार्श्वे गते चिह्नं विज्ञेयं व्रणजं बुधैः ॥ ५ ॥

लाभ (११) अरि (६) सहज (३) अथवा व्यय (१२) वें स्थानमें मंगल शुक्रसहित हो तो बांये बगलकी ओर (व्रण) खोटका चिह्न होवे ॥ ५ ॥

लग्ने क्षितिसुते मन्दे शुक्रदृष्टे त्रिकोणभे ॥
लिङ्गे गुदसमीपे वा तिलकं संदिशेद्बुधः ॥ ६ ॥

लग्नमें मंगल तथा शनि ५ । ९ स्थानमें हों परन्तु इसपर शुक्रकी दृष्टि भी हो तो (गुदा) मलद्वारके समीप अथवा लिंगस्थानमें तिलका चिह्न होवे ॥ ६ ॥

सुतालये भाग्यनिकेतने वा कविर्यदा चाष्टमगौ ज्ञजीवौ ॥ शनौ चतुर्थे तनुभावगे वा तदा सचिह्नं जठरं नरस्य ॥ ७ ॥

शुक्र पञ्चम वा नवम हो, अष्टमस्थानमें बुध बृहस्पति और लग्नमें वा चतुर्थस्थानमें शनि हो तो मनुष्यके (उदर) पेटपर चिह्न होवे ७

धने कवावष्टमलग्नभे वा दिवाकरे मन्दकुजौ तृतीये ॥
कटिप्रदेशे प्रवदेन्नराणां चिह्नं विशेषादिह जातकज्ञः॥८

धन (२) स्थानमें शुक्र, तीसरे शनि मंगल हों अथवा अष्टम भावमें वा लग्नमें सूर्य और तीसरे शनि मंगल हों तो जातकशास्त्र जाननेवाला मनुष्योंके कमरमें चिह्न कहे ॥ ८ ॥

पातालस्थौ राहुशुक्रौ लग्ने मन्दः कुजोऽपि वा ॥
पादमूलेऽथवा पादे वामे चिह्नं विनिर्दिशेत् ॥ ९ ॥

चतुर्थ स्थानमें शुक्र राहु, लग्नमें शनि अथवा मंगल हो तो पैरके नीचे अथवा पैरपर चिह्न होवे, यह वांये पैर यद्वा पैरके वांये ओर कहना ॥ ९ ॥

व्यये गुरौ विधौ भाग्ये लाभारिसहजे बुधे ॥
गोलकं गुदमध्यस्थं व्रणं वा प्रवदेद्बुधः ॥ १० ॥

बारहवें भावमें बृहस्पति, नवममें चंद्रमा, तथा ११।६।३ मेंसे किसीमें बुध हो तो (गुदा) मलद्वारमें गोलाकार चिह्न अथवा(व्रण) किसी प्रकारका दाग पंडित कहे ॥ १० ॥

भ्रातृ–मातृनाशयोगः।

दिनपतौ नवमे हरिभे यदा सहजहानिरवश्यमिहाङ्गिनाम् ॥ धनगते रविजे तनुगे गुरावगुरुगे जननी नहि जीवति ॥ ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्ममें सूर्य नवम सिंहका हो तो अवश्यमेव उसके भाइयोंकी हानिहोवे और दूसरा शनि लग्नमें बृहस्पति निर्बल नीच शत्रु राशि अंशकादिकोंमें अथवा अस्तंगत पापपीडित हो तो उस बालककी माता नहीं बचे ॥ ११ ॥

सहजसुखविचारः।

सुरगुरौ धनभावगते यदा कुजयुते शशिनापि च जन्मिनाम् ॥ अगुयुते सहजे सहजासुखं निगदितं यवनैः प्रथमोदितम् ॥ १२ ॥

बृहस्पति धनभावमें मंगल तथा शशिसे युक्त हो और तीसरा भाव राहुसे युक्त हो तो भाइयोंका सुख न हो प्रत्युत भ्रातृपक्षीय (असुख) क्लेश होवें, अथवा सहजा बहिनीका सुख अर्थात् बहिन हों भाई न हों यह भी अर्थ है यह योग यवनोंने पूर्वाचार्य संमतिसे कहा है ॥ १२ ॥

भ्रातृनाशयोगः ।

अरिनिकेतनगेऽवनिनन्दने भवति राहुयुते निधने शनौ ॥ निगदितं सहजो जनिमात्रतो यमपुरं व्रजतीति पुरातनैः ॥ १३ ॥

इति भावकुतूहले लग्नाचिह्नाध्यायो द्वितीयः ॥ २ ॥

छठा मंगल तथा अष्टम शनि राहुयुक्त हो तो उसके जन्म होनेहीमें उसका भाई मर जावे यह प्राचीनाचार्य्योंने कहा है ॥ १३॥

इति भावकुतूहले माहीधरीभाषाटीकायां द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

तृतीयोऽध्यायः ।

बालकस्यारिष्टविचारः ।

तुहिनकिरणहोरिका च संध्या भचरमगाः खलखेचरा जनौ चेत् ॥ मृतिरथ जनीशपापखेटैरखिलचतुष्टयगैर्विनाशमेति ॥ १ ॥

बालकका सबसे प्रथम अरिष्ट विचार करना चाहिये—बाल्यारिष्टोंसे बचजानेपर अन्य ज्योतिषोक्त फलादेशभी कहा जासकता है. अरिष्टयोग जानकर उसका उपाय दीर्घायुकारक वैदिकतांत्रिकोक्त प्रकारसे मनुष्य करसकते हैं. इस निमित्त अरिष्टयोग कहते हैं कि, संध्याकालमें जन्म हो उस समय लग्नमें चंद्रमाका होरा हो तथा पापग्रह राशिके अंत्य नवांशकमें हों तो वह बालक नहीं बचेगा अथवा पापयुक्त चंद्रमा केंद्रमें हो तथा अन्य तीनों केन्द्रोंमें पापग्रह हों तो भी वही फल कहना । पूर्वोक्त योगमें संध्या कही है उसका प्रमाण सूर्यास्तसे वा सूर्योदय डेढघडी पूर्व डेढ पीछेकी समस्त ३ घडी पर्यंत संध्या जानना ॥ १ ॥

अशुभेषु शुभेषु चक्रपूर्वापरभागेषु गतेषु कीट-

लग्ने ॥ विरतिं समुपैति बालकोऽयं खलखेटैरपि कामिनीतनुस्थैः ॥ २ ॥

(राशिचक्र) लग्नकुण्डलीमें लग्नसे सप्तमपर्यंत चक्रपूर्वार्द्ध और अष्टमसे द्वादश पर्यंत उत्तरार्द्ध है, चक्रके पूर्वार्द्ध पापग्रह उत्तरार्द्धमें शुभग्रह हों और लग्नमें (कीटराशि ४ । ८) हों तो बालक मर जावे तथा पापग्रह स्त्रीसंज्ञक (सम) राशियोंका लग्नमें हो तो भी वही फल जानना ॥ २ ॥

खलखगसहितो निशाकरोऽयं तनुमृतिमारगतो हि जन्मकाले ॥ मृतिपदमुपयाति देवबालोऽपि च सकलैरविलोकितो न सौम्यैः ॥ ३ ॥

पापयुक्त चंद्रमा लग्न (१) मृति (८) मार (७) भावमें जन्मकालका हो, उसे पापग्रह देखें, शुभग्रहोंकी दृष्टि उसपर न हो तो वह बालक मृत्युपदको प्राप्त होगा ॥ ३ ॥

अशुभावगोदयगतौ शुभदैरवलोकितो न खलु युक्तविधुः ॥ मृतिरंत्यगे कृशविधौ कुगजागभगैः खलैरपि विकेन्द्रशुभैः ॥ ४ ॥

दो पापग्रह स्थिरराशि लग्नमें, चंद्रमा और शुभग्रहोंकी दृष्टि न हो, और शुभग्रहोंसे युक्त भी न हो, तो बालककी मृत्यु होवे और क्षीण चंद्रमा बारहवें, लग्न अष्टमभावोंमें स्थिर राशियोंके [illegible] पापग्रह हों, केन्द्रोंमें शुभग्रह न हों तो वही फल जानने ॥ ४ ॥

शीतांशावरिविरतिस्थिते विनाशः पापःस्यात्सपदि युतेक्षितेपि जन्तोः॥ अष्टाब्दैःशुभखचरैश्च मिश्रखेटैर्वेदाब्दैरपि मुनिभिर्निरुक्तमेतत् ॥ ५ ॥

चंद्रमा छठा आठवां पापग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो तो शीघ्र मृत्यु देता है, यदि वह शुभग्रहोंसे युक्त दृष्ट हो तो ८ वर्ष पर्यंत बचता है, यदि शुभ और पाप दोनहूंसे युक्त दृष्ट हो तो ४ वर्ष जीता है यह मुनियोंका निरूपण किया हुआ है ॥ ५ ॥

अरिविरतिगते शुभेचदृष्टे बलसहिते खलेन मासमायुः ॥ मदनसदनगेऽपि लग्ननाथे खलविजिते ध्रुवमस्य मासमायुः ॥ ६ ॥

छठे आठवेंमें ही शुभग्रह हो उसे बलवान् पापग्रह देखे उपलक्षणसे युक्तभी हों तो उस बालककी एक ही महीनेकी आयु होवे । तथा लग्नेश सप्तमपापग्रहोंसे(विजित) युद्धमें हाराहुआ वा नीचादि निर्बल होकर पापपीडित हो तो निश्चय वही फल जानना॥ ६ ॥

कृशशशिनि तनौ खलेष्टकेन्द्रे मृतिरथ शीतरुचौ खलान्तराले ॥ मुनिहिबुकलयस्थितेऽपि लग्ने मुनिलयगैश्च सहाम्बया खलः स्यात् ॥ ७ ॥

क्षीण चन्द्रमा लग्नमें, पापग्रह आठवें तथा केंद्रोंमें हों तो शीघ्र मृत्यु होवे,और चन्द्रमा पापग्रहोंके बीचमें होकर भी ४। ७ । ८ मेंसे किसीभावमें हो तथा ७ । ८ भावोंमें पापग्रह भी हों तो वह बालक मातासहित मर जावे ॥ ७ ॥

भविरतिगतशोभनैरदृष्टे शशिनि नवेषुगतैः खलैर्मृतिः स्यात ॥ तनुगतहिमगौखलेनगस्थे मृतिरुदिता मुनिभिः शिशोरवश्यम् ॥ ८ ॥

चन्द्रमा पर लग्न और अष्टम स्थान गत शुभग्रहोंकी दृष्टि न न हो तथा ९ । ५ भावोंमें पापग्रह हों तो शीघ्र ही बालककी मृत्यु होवे और चन्द्रमा लग्नमें पापग्रह सप्तममें हो तो मुनियोंने अवश्य बालककी मृत्यु कही है ॥ ८ ॥

असुरसुखगते खलेन युक्ते तनुगविधौ समम-
न्वया लयारे॥मृतिरथ तनुगे रवौ सशस्त्रं ग्रहणगते
खलसंयुतेऽपि मृत्युः ॥ ९ ॥

राहुके साथ यद्वा ग्रहणसमयका चंद्रमा पापयुक्त होकर लग्नमें हो मंगल अष्टम स्थानमें हो तो मातासहित बालक मरे. इस योगमें यदि सूर्यभी लग्नमें हो तो शस्त्रसे उनकी मृत्यु होवे. सूर्य वा चंद्रमा ग्रहण समयका शनिसे युक्त लग्नसे हो तौभी वही फल है ॥ ९ ॥

सवलशुभखगैर्युते न दृष्टे तुहिनकरे दिनपेऽथवा
तनौ चेत् ॥ निधननवसुताश्रिताः खलाः स्यु-
र्निधनमिहाशु वदंति वै मुनीन्द्राः ॥ १० ॥

सूर्य अथवा चंद्रमा लग्नमें पापयुक्त हए हो उसे बलवान् शुभ-ग्रह न देखे न युक्त हो तथा ८।९।५ भावोंमें पापग्रह हो तो बालककी मुनीन्द्र शीघ्र ही मृत्यु कहते हैं ॥ १० ॥

शनिरविविधुभूमिजैः क्रमेण व्ययनवलग्नलयाश्रितै-
र्मृतिःस्यात् ॥ सवलसुरपुरोहितेन दृष्टैर्नहि मरणं
गदितं तदा मुनीन्द्रैः ॥ ११ ॥

बारहवां शनि, नवम सूर्य, लग्नका चन्द्रमा, अष्टम मंगल हो तो बालककी मृत्यु होवे, परंतु उक्त मृत्युकारक योगोंपर बलवान् बृहस्पतिकी दृष्टि हो तो मृत्यु नहीं होती और उपलक्षणसे दुष्ट-योग शुभग्रहोंकी दृष्टि एवं योगसे मृत्यु नहीं करते अरिष्ट देते हैं कदाचित् उपायोंसे अरिष्टोंकी शांति करते हैं ॥ ११ ॥

लयमारलग्नवधीव्ययगः खलखेचरेण सहितः
शितगुः ॥ अवलोकितो नहि युतश्च शुभैर्नियतं
भवेत्स मरणाय तदा ॥ १२ ॥

चंद्रमा पापग्रहसहित ८ । ७ । १ । ६ । ५ । १२ मेंसे किसी भावमें हो तथा उसपर शुभग्रहकी दृष्टि न हो न उसके साथ शुभ ग्रह हो तो मृत्यु निश्चय करके शीघ्र ही होती है ॥ १२ ॥

वलियोगकारकखगाश्रितभे जनिभे तनावपि यदास्ति विधुः ॥ वलसंयुतः खलजदृक्सहितः शरदन्तरेव मृतिदः स तदा ॥ १३ ॥

इति भावकुतूहले बालारिष्टाध्यायः ॥ ३ ॥

उक्त योगोंमें जिनके फलका समय नहीं कहा गया उनके लिये कहते हैं कि—बलवान् योगकारक ग्रह जिसमें बैठा है उसपर जब बली चंद्रमा आवे अथवा जन्मराशिपर जब आवे अथवा लग्नराशि पर आवे परंतु इसपर पापग्रहकी दृष्टि या पापग्रह युक्त हो तो उस समय अरिष्टयोगका अरिष्ट होता है, यह विचार एकवर्षके भीतर है ऊपर नहीं ॥ १३ ॥

इति भावकुतूहले माहीधरीभाषाटीकायां बालारिष्टाध्यायस्तृतीयः ॥ ३ ॥

चतुर्थोऽध्यायः ।

अथ पित्रारिष्टम् ।

आदित्याद्दशमे पापः पीडितो दशमाधिपः ॥ तदा पितुर्महाकष्टं निधनं वेति कीर्तितम् ॥ १ ॥

सूर्यसे दशम पापग्रह हो तथा लग्नसे दशमभावका स्वामी (पीडित) पापयुक्त हो तो बालकके पिताको बडा कष्ट वा मृत्यु हो॥१॥

मात्रारिष्टम् ।

भवति यदि शशाङ्कः पापयोरन्तराले जनुषि सुखनगस्थैः पापखेटैः शशांकात् ॥

विधुरपि बलहीनो नष्टकान्तिर्जनन्या
निधनमपि विशेषादाहुराचार्यवर्य्याः ॥ २ ॥

चंद्रमा पापांतर्गत हो तथा चन्द्रमासे ४। ७ भावोंमें पापग्रह हों और चंद्रमा बलरहित एवं क्षीण भी हो तो ऐसा योग जन्ममें होनेसे श्रेष्ठ आचार्योंने बालककी माताकी मृत्यु कही है ॥ २ ॥

भ्रात्ररिष्टम् ।

यदा पापखेचारिणो जन्मकाले धरानन्दनाक्रान्तभावात्सहोत्थे ॥ तदैवाशु नाशं सहोत्थस्य धीरा मणित्थादयः प्राहुराचार्यमुख्याः ॥ ३ ॥

यदि जन्मसमयमें पापग्रह मंगलस्थित राशिसे तीसरे हों तो शीघ्र ही भाइयोंका नाश होवे- यह मणित्थ आदि मुख्य आचर्योंने कहा है ॥ ३ ॥

मातुलारिष्टम् ।

बुधारातिभावे तु पापा भवंति वृतो ज्ञोऽपि नीचः श्रितो नष्टवीर्यः ॥ तदा मातुलानां विनाशो विशेषादिति प्राहुराचार्यवर्य्या नराणाम् ॥ ४ ॥

बुधसे छठे स्थानमें पापग्रह हों बुध पापांतस्थ वा पापयुक्त तथा बलहीन नीचराशि अंशकमें हो तो विशेषतः मनुष्योंके (मातुल) मामाओंका विनाश होवे यह श्रेष्ठ आचार्योंका मत है ॥ ४ ॥

पुत्रहानियोगः ।

बृहस्पतेः पञ्चमभावसंस्था महीजमन्दागुदिवाकराश्चेत् ॥ गुरोरपत्याधिपतिः सपापस्तदात्मजानां विरतिं वदन्ति ॥ ५ ॥

बृहस्पतिसे पंचम स्थानमें मंगल,शनि, राहु, सूर्यमेंसे कोई भी

ग्रह हो तथा बृहस्पति पंचम भावका स्वामी पापयुक्त हो तो उस मनुष्यके पुत्र न हो अथवा पुत्रहानि होवे ॥ ५ ॥

स्त्रीहानियोगः ।

चेत्कवेरङ्गनागारगामी कुजातो विनाशोऽङ्गनायाः सपापो निरुक्तः॥ नैधने मन्दतः पापखेटा बलिष्ठा नृणां नैधनं सत्वरं संदिशन्ति ॥ ६ ॥

इति भावकुतूहले चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

शुक्रसे सप्तम स्थानमें मंगल पापयुक्त हो तो स्त्रीहानि करता है और शनिसे अष्टम पापग्रह बलवान् हों तो मनुष्योंकी अल्पमृत्यु करते हैं ॥ ६ ॥

इति भावकुतूहले माहीधरीभाषाटीकायां चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

पंचमोऽध्यायः ।

अरिष्टभङ्गविचार ।

भवतीन्दुरथो शुभान्तराले परिपूर्णः किरणैश्च जन्मकाले ॥ विनिहन्ति तथाशु दोषसंघानिभसंघानिव केसरी बलिष्ठः ॥ १ ॥

पूर्वोक्त बालारिष्ट योगोंके परिहार अरिष्टभंगयोग कहते हैं कि, जन्मसमयमें चंद्रमा शुभ ग्रहोके बीचमें तथा पूर्णभी हो तो उक्त प्रकार दोषसमूहको नाश करता है, जैसे बलवान् सिंह हाथियोंके झुण्डको नाश करता है, तैसे ही यह चंद्रमा करता है ॥ १ ॥

यदि जनुषि निशाकरोरिभावं गुरुकविचन्द्रजवर्गगो विशेषात्॥ शमयति बहुकष्टजालमद्धा मुरहरनाम यथाघसंघतापम् ॥ २ ॥

जो जन्ममें चंद्रमा छठे स्थानमें (शुभग्रह) बृहस्पति, शुक्र,

बुधके (वर्ग) राशि अंशकादियोंमें हों तो विशेषतासे बहुत कष्टोंके जालको साक्षात् शमित करदेता है, जैसे मुरदैत्यके मारनेहारे श्री भगवान्का नामकीर्तन पापसमूहको शमित करता है ॥ २ ॥

यदि सकलनभोगवीक्ष्यमाणो लसिततनुर्जनुरिन्दुरेव सद्यः ॥ दिविचरजनितं निहन्ति दोषं खगपतिराशु यथा भुजङ्गजालम् ॥ ३ ॥

यदि जन्ममें चंद्रमा पूर्णमूर्ति हो तथा उसे सभी ग्रह देखें तो यही एक ग्रह ग्रहोंसे उत्पन्न (दोष) अरिष्टको तत्कालही नाश कर देता है जैसे सर्प (जाल) समूहको गरुड शीघ्र नाश करता है ॥३॥

भवति यदि तनोः क्षपाकरोऽयं मृतिभवने शुभखेटवर्गगश्चेत ॥ गदविकलतनुं पितेव बालं किल परितः परिरक्षति प्रसन्नः ॥ ४ ॥

यदि चंद्रमा लग्नसे अष्टम स्थानमें शुभग्रहके(वर्ग) राशि अंशादिकोंमें हो तो समस्त अरिष्टोंसे बचाता है जैसे रोगीबालकको उसका पिता सर्वतः रक्षा करता है ॥ ४ ॥

शुभभवनगतस्तदीयभागे जनिसमये कविनाऽवलोकितश्चेत् ॥ शमयति सकलं शशी त्वरिष्टं जलमिव पावकमङ्गिनामतीव ॥ ५ ॥

यदि चंद्रमा जन्मसमयमें शुभग्रहके राशिमें एवं अंशकमें हो वा शुक्र उसे देखे तो समस्त अरिष्टोंको शमित करता है जैसे जल अग्निको शमित कर देता है ॥ ५ ॥

बलवानपि केन्द्रगो विशेषादिह सौम्यो यदि लाभगो दिनेशः ॥ शमयत्यखिलामरिष्टमालामपि गाङ्गं हि जलं यथाघजालम् ॥ ६ ॥

यदि बुध उपलक्षणसे अन्य शुभग्रह भी बलवान् हों विशेषतः केंद्रमें तो तथा लाभभावमें सूर्य हो तो संपूर्ण अरिष्टकी मालाको शमित करताहै जैसे गंगाजल समस्त पापजालको शमित करताहै६

भवति हि जनुरङ्गपो बलिष्ठः सकलशुभैरवलोकितो न पापैः ॥ इह मृतिमपहाय दीर्घमायुर्वितरति वित्तसमुन्नतिं विशेषात् ॥ ७ ॥

जन्मलग्नेश बलवान् हो तथा उसे समस्त शुभग्रह देखें पापग्रह न देखें तो मनुष्यकी मृत्यु हटाकर दीर्घायु कर देता है तथा विशेष करके धनकी उन्नति (वृद्धि) भी करता है ॥ ७ ॥

सुरपतिगुरुरङ्गधामगामी निजपदगोऽपि च तुङ्गतामुपेतः ॥ बहुतरखगजं निहंति दोषं हरिरिभयूथमुपागतं हि यद्वत् ॥ ८ ॥

लग्नमें बृहस्पति अपनी राशि वा अंशमें हो अथवा अपने उच्चराशि (४)अंशकमें हो तो बहुत प्रकार ग्रहदोषोंको नाश करता है जैसे सिंह हाथियोंके झुण्डमें जाकर उनका नाशकरता है ॥ ८ ॥

गुरुसितबुधवर्गगा हि पापाः सकलशुभैरवलोकिता यदि स्युः ॥ खगकृतमपि वारयंति रिष्टं तृणराशीनिव वह्निविन्दुरेकः ॥ ९ ॥

पापग्रह बृहस्पति, शुक्र, बुधके राशि अंशमें हो तथा उन्हें शुभग्रह देखें तो अरिष्टाध्यायोक्त अरिष्ट दूर होते हैं जैसे अग्निका एक (विंदु) कण तृण घासके पुंजको फूँक देता है ॥ ९ ॥

सहजरिपुगतोऽथ लाभगो वा सकलशुभैरवलोकितो युतो वा ॥ अगुरिह विनिहन्ति रिष्टजालं लगजाधीश इवाधितापराशिम् ॥ १० ॥

राहु जन्मलग्नसे ३ । ६ । ११ भावोंमेंसे किसीमें हो और समस्त शुभग्रह उसे देखें अथवा शुभग्रह युक्त हो तो अरिष्टरूपी जालको नाश करता है जैसे (नगजा) पार्वतीके पति शिव तीन प्रकारके ताप शांत करते हैं ॥ १० ॥

अधिकबलयुता जनुर्नभोगा यदि सकला नरराशिगा भवंति ॥ हितभवननिजोच्चगेहगा वा बहुतरमाशु लयं प्रयाति रिष्टम् ॥ ११ ॥

इति भावकुतूहलेऽरिष्टभंगाध्यायः पञ्चमः ॥ ५ ॥

जन्मसमयमें बलवान् ग्रह (पुरुष) विषम राशियोंमें सभी हों अथवा मित्रके घरमें, अपने उच्चराशिमें हों तो बहुत प्रकारके अरिष्ट नाश होते हैं ॥ ११ ॥

इति भावकुतूहले माहीधरीभाषाटीकायामरिष्टभंगाध्यायः पंचमः ॥ ५ ॥

षष्ठोऽध्यायः ।

पुत्रकारकयोगः ।

नन्दनाधिपतिना युतेक्षितं नन्दनं शुभनभोगसंयुतम् ॥ नन्दनागमनमेव सत्वरं व्यत्ययेन नहि नन्दनागमः ॥ १ ॥

गृहस्थको संतान उत्पन्न करना मुख्य कर्तव्य है परंतु यह दैवाधीन है इसलिये प्रथम संतान भाव विचार करते हैं कि,पंचमभावेश पंचम भावमें हो अथवा पंचमभावको देखे तथा पंचमभाव शुभग्रहसे युक्त हो तो शीघ्र पुत्र उत्पन्न होगा-यदि उक्त प्रकारसे विपरीत अर्थात् पंचमेश तथा शुभग्रह पंचममें न हों उसे न देखें पापग्रह पंचममें हों तथा पंचमको देखें तो पुत्रसुख न होवे, ऐसे योग जन्म, वर्ष, प्रश्न, सभीमें देखे जाते हैं ॥ १ ॥

अङ्गाधिपे लग्नगते तृतीये धनालये वा प्रथमं सुतः स्यात्॥सुखे यदा लग्नपतौ नरस्य कन्या सुतो वेति सुतश्च कन्या ॥ २ ॥

लग्नेश लग्न, धन, तृतीयमेंसे किसीमें हो तो प्रथम पुत्र पीछे कन्या होगी, यदि लग्नेश चतुर्थ हो तो मनुष्यके प्रथम कन्या पीछे पुत्र, पुनः कन्या पुनः पुत्र होते हैं। अथवा कन्या पुत्र यमल होते हैं परंतु इसमें लग्न, लग्नेश, पंचम, पंचमेश द्विस्वभावगत हों तो ये फल होते हैं ॥ २ ॥

सन्तानसंख्याविचारः ।

यावन्मितानामिह पुत्रभावे नरग्रहाणामिह दृष्टयः स्युः ॥ तावन्त एवास्य भवंति पुत्राः कन्यामितिः स्त्रीग्रहदृष्टितुल्या ॥ ३ ॥

पंचमभावमें जितने पुरुष ग्रहोंकी दृष्टि हो उतने पुत्र तथा जितने स्त्रीग्रहोंकी दृष्टि हो उतनी कन्या होती हैं परंतु योगकारक ग्रह यदि स्वगृह उच्चादि बलसहित हों तो द्विगुण त्रिगुण उत्पन्न करते हैं, नीचशत्रुराशिगत उतने संख्याके गर्भहानि करते हैं ॥ ३ ॥

सुतहानियोगः ।

सहजभावपतिः सहजे यदा तनुगतो धनगो व्ययगोऽपि वा ॥ सुतगतः सुतहानिकरो नृणां बुधवरैरुदितो मिहिरादिभिः ॥ ४ ॥

तृतीय भावका स्वामी तीसरा, लग्नमें दूसरा, बारहवां अथवा पंचम हो तो संतानहानि करता है। यह वराहमिहिरादि श्रेष्ठपंडितोंने कहा है ॥ ४ ॥

पुत्रप्राप्त्यप्राप्तिविचारः ।

शुक्राङ्गारनिशाकरा द्वितनुगाःसन्तानसौख्यं नृणा-
मादौ संजनयंति जन्मसमये चापं विना प्रायशः ॥
मीने वा धनुषि प्रमाणपटवः सन्तानभावे यदा
सन्तानं न तदामनन्ति विबुधाःपुंसां विशेषादिह॥५॥

शुक्र, मंगल, चंद्रमा द्विस्वभाव राशियोंमें विशेपतः पंचमभावमें हों तो प्रथमहीसे संतानका सुख देते हैं, परंतु विशेपतः धनके होनेमें उक्त फल नहीं देते, बृहस्पतिके राशि मीन अथवा धन पंचमभावमें हो तो मनुष्योंको पंडितजन संतान सुखविशेष नहीं कहते ॥ ५ ॥

नपुंसकयोगः ।

अर्के कर्कगते हरौ भृगुसुते मन्दे तुलायामजे चंद्रे
यस्य नरस्य जन्मसमये वीर्यच्युतोऽसौ भवेत् ॥
लग्ने चन्द्रयुते गुरौ रविसुते पुत्रेऽपि वीर्यच्युतो
जीवेङ्गे सरवौ मृतावपि कुजे क्लीवर्क्षगे कण्टके॥६॥

जिस मनुष्यके जन्मसमयमें सूर्य कर्कका, शुक्र सिंहका, शनि तुलाका, चंद्रमा मेषका हो तो वह(वीर्यच्युत)नपुंसक किंवा धातुक्षीणवाला होवे अर्थात् क्लीवतासे संतान न होने पावैं तथा लग्नमें चंद्रमासहित बृहस्पति, पंचममें शनि हो तो वीर्यक्षीण होवे अथवा बृहस्पति लग्नमें सूर्यसहित तथा अष्टममें मंगल हो और नपुंसक ग्रहकी राशि केंद्रमें हो तो नपुंसक होवे ॥ ६ ॥

कन्याराशिगते लग्ने बुधमन्दावलोकिते ॥
शनिक्षेत्रगते शुक्रे वीर्यहीनो नरो भवेत् ॥७॥

लग्नमें कन्या राशि हो उसपर बुध, शनिकी दृष्टि हो तथा शुक्र

शनिके क्षेत्र १० । ११ में हो तो वह मनुष्य वीर्य्यहीन (नपुंसक) होवे ॥ ७ ॥

पुत्रसुखाभावयोगः ।

नीचे गुरौ भृगौ वापि समे ज्ञे विषमे रवौ ॥
तदा पुत्रसुखं न स्यादित्युक्तं गणकोत्तमैः ॥ ८ ॥

बृहस्पति अथवा शुक्र नीचका हो तथा बुध सम राशिमें, सूर्य विषम राशिमें हो तो पुत्रका सुख न होवे यह उत्तम ज्योतिषियोंका कथन है ॥ ८ ॥

षष्टिवर्षादूर्ध्वं पुत्रप्राप्तियोगः ।

कर्कटे तु कलानाथे पापयुक्तेक्षिते यदा ॥
मन्दहृष्टे दिवानाथे पुत्रः षष्टिमितेऽब्दके ॥ ९ ॥

चंद्रमा कर्कटका हो उसे पापग्रह देखे पापयुक्त भी हो और सूर्यपर शनिकी दृष्टि हो तो ६०वर्षकी अवस्थामें पुत्र उत्पन्न होवे ॥९॥

त्रिंशद्वर्षादूर्ध्वं पुत्रप्राप्तिः ।

पापभे पापसंयुक्ते जन्मलग्ने रवावलौ ॥
युग्मभे वसुधापुत्रे खगुणाब्दात्परं सुतः ॥ १० ॥

जन्मलग्न पापग्रहकी राशि हो तथा पापग्रहसे युक्त हो और सूर्य वृश्चिकका, मंगल मिथुनका हो तो ३० वर्षसे ऊपर संतान होवे ॥ १० ॥

सन्तानाभावयोगः ।

अलौ गुरुकवी लग्ने भवेतां चंद्रजार्कजौ ॥
न पश्यति सुतं गेहे कदाचिदपि मानवः ॥ ११ ॥
मन्देन्दुदृष्टो रिपुसंयुतोज्ञाधिपो रविश्शत्रुधने विपुत्रः॥
मन्दोरिगेह्वुधसूर्यचन्द्रैर्दृष्टो विलग्ने खलवीक्षितवा१२

वृश्चिक राशिमें बृहस्पति और शुक्र हों, लग्नमें बुध, शनि हों तो वह मनुष्य गृहमें कदापि पुत्रको नहीं देखे। लग्नेश शत्रुगृही वा शत्रु युक्त हो शनि चंद्रमा उसे देखें तथा सूर्य छठा वा दूसरा हो तो अपुत्र होवे अथवा शनि शत्रुभावमें बुध, सूर्य चंद्रमासे दृष्ट हो यह ऐसाही लग्नमें पापदृष्ट हो तो भी अपुत्र करता है ॥ ११ ॥ १२ ॥

मन्दालयेऽर्केखलदृष्टियुक्ते लग्नेपि वा पापखगस्य वर्गः अपत्यहानिःकुलदेवकोपात्पुरातनैरंगभृतां निरुक्ता १३

शनिकी राशि १० । ११ में सूर्य पापग्रहोंसे दृष्ट या युक्त हो अथवा पापग्रहके (वर्ग) राशि अंशकोंके लग्नमें हो तो कुलदेवताके कोपसे संतानकी हानि कहनी,यह फल मनुष्योंको प्राचीनाचार्योंने कहा है ॥ १३ ॥

अपत्यभावे यदि मंगलः स्यादपत्यराशिं विनिहन्ति सद्यः ॥ अस्तांशके पापयुते सुतेशे तदा न सन्तानसुखं वदन्ति ॥ १४ ॥

पंचम स्थानमें मंगल हो तो जितने पुत्र हों सभीको नाश करता है, यदि सप्तमभावांशपति एवं पंचमेश पापयुक्त हों तो संतानका सुख नहीं होता ऐसा आचार्य कहते हैं ॥ १४ ॥

गुरोः सुतागारपतिः सपापो वलेन हीनो मनुजो विपुत्रः ॥ अरावपापे निधने तदीशः सुतेन हीनो मनुजस्तदानीम् ॥ १५ ॥

बृहस्पति पंचमभावका स्वामी पापयुक्त एवं बलहीन हो तो मनुष्य अपुत्र होता है तथा छठे भावमें शुभग्रह,षष्ठेश अष्टम हो तो भी वही फल है ॥ १५ ॥

तथैव भानुः खलु पंचमस्थो जातं च जातं विनिहन्ति बालम् ॥ लग्नेश्वरः पापयुतः सुतेशो व्ययाष्टमे पुत्रसुखेन हीनः ॥ १६ ॥

निर्बल सूर्य पंचम हो तो जितने बालक हों उन सबको नाश करे वा लग्नेश पापयुक्त और पंचमेश८।१२ में हो तो पुत्रसुखसे रहित रहै ॥ १६ ॥

यदागुसूर्यारशनैश्चराणां दोषोऽथ वै जन्मनि मानवानाम् ॥ वंशेशकोपेन सुतस्य नाशं तदा वदन्तीति पुराणविज्ञाः ॥ १७ ॥

यदि जन्मकालमें संतान हानिकारक राहु,सूर्य, शनैश्चरका दोष हो अर्थात् ये ग्रह संतानहानिकारक हों तो (वंशेश) कुलदेवताके कोपसे संतानका नाशजानना,उसके मनोहर पूजादि करनेसे संतानका सुख होता है यह पुराणाचार्य्योंका मत है ॥ १७ ॥

पुत्रार्थं देवतोपासना ।

बुधशुक्रकृते दोषे सुताप्तिः शिवपूजनात् ॥
गुरुचन्द्रकृते दोषे यंत्रमंत्रौषधीबलात् ॥ १८ ॥

यदि बुध संतानहानि दोषकारक हो तो शिवके (पूजन)आराधन करनेसे पुत्रप्राप्ति होवे । बृहस्पति,चंद्रमाका दोष हो तो अनेक प्रकार यंत्र, मंत्र, साधन तथा दिव्य औषधिके प्रयोगसे संतानसुख होता है ॥ ॥ १८ ॥

राहुणा कन्यकादानं भानुना हरिकीर्त्तनम् ॥
शिखिना कपिलादानं मन्दाराभ्यां षडंगकम्॥१९॥

संतानबाधाकारकराहु हो तो किसीको किसीप्रकार कन्यादान करना, सूर्यका दोष हो तो विष्णुका कीर्तन भगवान्का आराधन

विशेषतः हरिवंशका पाठ करना, केतु हो तो कपिला गोदान करना, शनि, मंगल बाधक हों तो (षडंग) रुद्राध्यायका अनुष्ठान रुद्राभिषेक घटीस्नानादि करना ॥ १९ ॥

सर्वदोषविनाशाय सन्तानहरिपूजनम् ॥
कुर्य्याद्भौमव्रतं चापि कामदेवव्रतं नरः ॥ २० ॥

इति भावकुतूहले पुत्रभावविचाराध्यायः ॥ ६ ॥

समस्त दोषशांतिके लिये संतानगोपालका अनुष्ठान पूजन करना तथा भौमव्रत अथवा कामदेवव्रत शास्त्रोक्त प्रकारसे करना,और भी उपाय धर्मशास्त्र आगम शास्त्रोंसे जानने ॥ २० ॥

इति भावकुतूहले माहीधरीभाषाटीकायां पुत्रभावविचाराध्यायः ॥ ६ ॥

सप्तमोऽध्यायः।

सार्वभौमराजयोगः।

खेटा यदा पंच निजोच्चसंस्थाः स सार्वभौमः खलु यस्य सूतौ ॥ त्रिभिः स्वतुंगोपगतैः स राजा नृपालबालोन्यसुतस्तु मंत्री ॥ १ ॥

जिसके जन्ममें पांच उपलक्षणसे चार भी ग्रह उच्चके हों तो राजवंशी समस्त पृथ्वीका राजा चक्रवर्ती होवे अन्य कुलोत्पन्न राजा ही होवे। यदि तीन ग्रह उच्चके हों तो राजपुत्र राजा होवे, अन्यजात मंत्री होवे- अथवा स्वकुलानुमान श्रेष्ठता पावे ॥ १ ॥

गुरावुच्चे केन्द्रे भवति दशमे दानवगुरौ
जनुः काले मुद्रा विलसति समुद्रावधि भृशम् ॥
गुरौ कर्के चापे भवति च सचन्द्रे दिनमणौ
बुधे तुङ्गे लग्ने बलवति खगे वा नरपतिः ॥ २ ॥

जन्मसमयमें उच्चका बृहस्पति केंद्रमें हो शुक्र दशम में हो तो उस की (मुद्रा) मोहर छाप समुद्रपर्यंत चले अर्थात् समुद्रांत पृथ्वीको राजा होवे । यदि बृहस्पति कर्क वा धनका चन्द्रमासहित होवे तथा बुध वा सूर्य अपने उच्चमें होकर लग्नमें अथवा कोई बलवान् ग्रह लग्नमें हो तो राजा होवै॥ २ ॥

गुरावंगे कर्के मदनसुखभावे दिनमणेः
सुते शुक्रे वक्रे प्रभवति जनैर्यस्य समयः ॥
महाम्भोधेर्नीरं गमनसमये तस्य करिणां
चलद्घण्टानादाद्व्रजति चपलत्वं हि परितः ॥ ३ ॥

बृहस्पति कर्कका लग्नमें (सूर्यपुत्र) शनि ४।७ भावोंमेंसे किसीमें हो तथा शुक्र वक्रगति हो,ऐसा योग जिसके जन्मसमयमें हो वह ऐसा राजा होवै कि,जिसकी सवारी निकलनेमें चारों तरफसे हाथियोंके घंटाओंके नादसे समुद्रका जल भी चारोंतरफ उछलनेलगे३

अजे जीवादित्यौ दशमभवने भूमितनय-
स्तपस्थाने शुक्रो बुधविधुयुतो यस्य जनने ॥
गजानामालीभिर्विजयगमने तस्य सहसा ग-
समाक्रान्ता पृथ्वी व्रजति चकिता मोहपदवीम्॥४॥

जिसके जन्मसमयमें बृहस्पति सूर्य मेषके,मंगल दशम स्थानमें शुक्र नवम भावमें और चंद्रमा बुध सहित हो तो उसके शत्रुपर चढाई करनेके गमनमें एकाएकी हाथियोंकी पंक्तिसे पृथ्वी भरकर (चकित) आश्चर्ययुक्त होके मोहको प्राप्त हो जावे ॥ ४ ॥

कन्यांगे सबुधे झषे सुरगुरौ भूपुत्रसूर्यौ वली
मन्दे कर्कगते शरासनगते शुक्रे यदीया जनिः ॥

तस्यालं शिरसा वहंति वसुधाधीशाः सदा शासनं
ह्यानंदाद्विकचारविन्दकलिकामालामिव प्रायशः॥५॥

कन्याका बुध लग्नमें, बृहस्पति मीनका सप्तम हो, सूर्य, मंगल किसी स्थानमें बलवान् हों, शनि कर्कका, शुक्र धनका हो ऐसे राजयोगमें जिसका जन्म हो उसकी आज्ञा (हुकुम) को राजालोग सर्वदा आनंदपूर्वक ऐसे ग्रहण करते हैं जैसे खिले हुए कमलोंकी मालाको विशेषतासे गलेमें धारण प्रसन्नतासे करते हैं ॥ ५ ॥

भाग्ये भानुसुतो मृगे धरणिजो जीवज्ञशुक्राः सुते
तिष्ठंति प्रबला दिवाकरकरव्यासंगमुक्ता यदा ॥
तत्रोद्भूतजनस्य यानसमये प्रोत्तुङ्गराजिव्रजव्य-
स्तन्यस्तपदप्रचाररजसाच्छन्नं नभोमण्डलम् ॥६॥

नवम स्थानमें शनि,मकर राशिका मंगल, तथा बृहस्पति,बुध, शुक्र पंचम हों और उक्तग्रह बलवान् हों सूर्यकिरणोंके व्यासंगसे मुक्त हों अर्थात् अस्तंगत न हों उदयी हों ऐसे योगमें जिस किसीका जन्म हो तो उसकी सवारी निकलनेमें इधर उधरसे जो साथ चलनेवाले (जलवेदार)हैं उनकी पंक्तियोंके उलटे सीधे पैर पृथ्वीपर रखनेसे जो (रज) धूलि उडती है उससे आकाश भी ढक जावे इतना बडा राजा होवै ॥ ६ ॥

यदि तुलामकराजकुलीरभे रविमुखाः सकला
विलसंति चेत् ॥ इह चतुष्कमहोदधिसंज्ञकः
सुरपतेः समतां तनुते नृणाम् ॥ ७ ॥

यदि७।१०।१।४राशियोंमें समस्तसूर्यादिग्रह हों तो इस योगमें जन्मनेवाला मनुष्य चार समुद्रपर्यंतके राजाकी तुल्यता पावे ॥७॥

राज्यस्वामी निजोच्चे भवति तनुधनापत्यपाताललकांतापुण्यानामुच्चराशौ पतय इह यदा वीर्यवंतो भवंति॥ राजानो यस्य तस्य प्रबलबलघटादंतिघंटाधनुर्ज्याटंकारव्रातभीता जगदुदरगताः कंपभावं भजंति ॥ ८ ॥

जिसके जन्मसमयमें दशम स्थानका स्वामी अपने उच्चमें हो तथा लग्न, धन, पंचम, सप्तम, चतुर्थ,नवम भावोंके स्वामी अपने अपने उच्चोंमें हों अथवा बलवान् हों तो उस मनुष्यके (प्रबल) बडी भारी सेना (फौज) की घटासे एवं सेनाके हाथियोंकी घंटा तथा धनुषोंकी (ज्या) चिल्लाके टंकारशब्दोंके समूहसे भययुक्त होकर राजालोग पृथ्वीके भीतर कंदरा (खात) तैखाना आदियोंमें डरते कांपते हुए छिप जावें ॥ ८ ॥

येषामर्को निजोच्चे प्रभवति मकरे मंगलो वैरिभावे दैत्येज्यः कर्मगामी शनिरपि सहजे जन्ममात्रेण तेषाम् ॥ पृथ्वी सद्दानतोयार्णवजनितयशश्चंद्रकांत्यर्ज्जुनाभा मत्तोन्मत्तप्रचंडप्रबलरिपुशिरोमंडले वज्रपातः ॥ ९ ॥

जिन मनुष्योंका सूर्य अपने उच्च (१) में, मंगल मकरमें,छठा शुक्र दशम शनि तीसरा हो तो उनके जन्महीसे पृथ्वी शुभदान देनेके संकल्पके समुद्ररूपी जलसे परिपूर्ण होवे । यशरूपी चंद्रमाके कांतिसे अर्जुनके समान यद्वा (अर्जुनाभ) धवलित (श्वेत; स्वच्छ) हो जावे और ऐश्वर्यवान् तथा राजमदसे उन्मत्त अतिबलवान् बडे बडे शत्रुओंके शिरोंमें वज्रपात जैसा खटकने लगे ॥९॥

सम्बन्धो दशमाधिपस्य नवमाधीशेनयेषां जनुः
काले पंचमभावपेन च बलोपेतस्य तुल्येन चेत् ॥
प्रस्थाने सति लीलया तनुभृतां वश्यारिविश्वंभरा
गर्जद्घोटकमत्तवारणघटाक्रांता समंताद्भवेत् १०॥

ग्रहोंके सम्बन्ध चार प्रकारके होते हैं-परस्पर दृष्टि होनेमें दृष्टिसम्बन्ध (१) एकके राशिमें दूसरा, दूसरेमें पहिला,अन्योन्याश्रयसंबंध (२), दोनों भावोंके स्वामी अपनी अपनी राशियोंमें स्थानसंबंध (३), कारकसंबंधी (४),जिनके जन्म समयमें नवमेश दशमेशका किसी प्रकार संबंध हो अथवा पंचमेशके साथ उनका संबंध हो परन्तु संबंधकारकग्रह बलवान् हों तो संबंध भी (तुल्य) बलवान् एवं अधिकारीहीके साथ करें तो उनके युद्धार्थ प्रस्थानमें वा अन्य सवारी निकलनेमें पृथ्वी गजरते हुए घोडोंकी, मतवाले हाथियोंकीघटाओंसे चारोंओरसे आक्रांत होवे तथा लीला से शत्रुकी पृथ्वी (राज्य) विनाही युद्ध किये वशमें हो जावे ॥१०॥

अत्युत्कृष्टराजयोगः ।

राज्येशो यदि देवतालयपदे पारावतांशे तपःस्था-
नेशो धनगोऽपिगोपुरलवे लाभाधिपो जन्मिनाम् ।
चंचत्तुंगतुरङ्गकुंजर-घटाघंटा-धनुर्ज्यारवैर्वित्रस्ताग-
मनोत्सवे दिगवला भ्रांतिं भजंति क्षणात् ॥

यदि मनुष्योंके जन्मसमयमें दशमभावेश नवमस्थानमें पारावतांशकमें स्थित होवे, नवमेश द्वितीयस्थानमें होवे तथा लाभेश गोपुरांशकमें हो तो उनके(प्रयाणोत्सव) सफरकी तैयारीमें चपल तथा उच्च घोडे और उन्मत्त हाथियोंकी घंटाओंके शब्दोंसे एवं

धनुषोंके टंकार शब्दोंसे भयभीत होकर दिशारूपी (अबला) स्त्री क्षणमात्रमें (भ्रांत) घबराहटयुक्त हो जाती हैं ॥ ११ ॥

सिंहासनयोगः ।

कन्यामीनवृषालिभे यदि खगाः सिंहासनः कीर्तितः
किंवा चापनृयुग्मकुंभहरिभे खेटे हि सिंहासनः ॥
यः सिंहासनयोगजो हि मनुजो भूपाधिराजो बली
गर्जत्कुञ्जरवाजिराजिमुकुटारूढो धरामण्डले ॥१२॥

यदि ६ । १२ । २ । ८ राशियोंमें सभी ग्रह हों तो सिंहासनयोग होता है,यद्वा ९ । ३ । ११ । ५ राशियोंमें हो तौभी यही योग होता है, जिस मनुष्यका जन्म सिंहासनयोगमें हो वह पृथ्वीमें गर्जन करनेवाले हाथी घोडोंकी पंक्तिके (मुकुट) श्रेष्ठोंपर बैठनेवाला राजाओंका भी राजा होवै ॥ १२ ॥

चतुश्चक्रयोगः ।

अजे सिंहे कन्याकलशमिथुनान्त्यालितुरगे
समाजः खेटानामिह भवति जन्मन्यपि नरः ॥
चतुश्चक्रे योगे सकलसुखभोगेन मिलितो
महीपानामाली मुकुटमणिपाली विजयते ॥ १३ ॥

जिस मनुष्यके जन्ममें १।५।६।११।३।१२।८।७ राशियोंमे सभी ग्रह हों तो इस योगका नाम चतुश्चक्र है इसमें जिसका जन्म हो वह समस्त सुखभोगोंसे युक्त होकर राजाओंके मुकुटमणियोंकी पंक्तिको जीतकर स्वयं अधिराज होता है ॥ १३ ॥

एकावलीयोगः ।

एकैकेन खगेन जन्मसमये सैकावली कीर्तिता
मुक्तालीव समस्तभूपमुकुटालंकारचूडामणिः ॥

तज्जातो रिपुपुंजभंजनकरो गन्धर्वदिव्याङ्गना-
वृन्दानन्दपरो गुणव्रजधरो विद्याकरो मानवः॥१४॥

यदि एक एक ग्रह एक एक स्थानोंमें बराबर हों जैसे मोतियोंकी माला पृथक् पृथक् एक एक दानेकी रहती है, तो इस योगको एकावली कहते हैं. इसमें जन्मा हुआ मनुष्य समस्त राजाओंके मुकुटकी शोभा देनेवाला (चूडामणि)उत्तम नग सरीखा श्रेष्ठ होता है. तथा शत्रुओंके समूहोंका भंजन करनेवाला, गंधर्वकन्या और स्वर्गकी स्त्रियोंके समूहका आनन्द करनेवाला,गुणोंके समूहको धारण करनेवाला तथा चतुर्दश विद्याओंकी खान होता है ॥ १४ ॥

शत्रुविजययोगः ।

कुलीरे कन्यायामनिमिषधनुर्युग्मभवने
जनुःकाले यस्य प्रभवति नभोगो रविमुखः ॥
प्रचण्डप्रोत्तुङ्गप्रबलरिपुहन्ता क्षितिपतिः
समन्तादाधिक्यं व्रजति धनदानेन महताम् ॥१५॥

कर्क, कन्या, मीन, धन, मिथुन राशियोंमें सूर्यादि सभी ग्रह जिसके जन्मसमयमें हों वह अति प्रबल (बढीहुई) तीक्ष्णयोधाओंवाली बडी भारी शत्रुसेनाको जीतनेवाला राजा होता है तथा धन देनेसे सभी प्रकार बडे बडे लोगोंसेभी अधिकता पाता है ॥१५॥

नृपमुकुटयोगः ।

अथादित्यः सिंहे विधुरपि कुलीरे रविसुतो
मृगे मीने जीवो हिमकरसुतो यस्य मिथुने ॥
तुलायां शुक्रश्चेदजभवनगो भूमितनयो
नृबालो भूपालो नृपमुकुटभूषामणिवरः ॥ १६ ॥

जिसके जन्मसमयमें सूर्य सिंहका, चंद्रमा कर्कका, शनि मकरका, बृहस्पति मीनका, बुध मिथुनका, शुक्र तुलाका और मंगल

मेषका हो तो वह मनुष्यबालक राजाओंके मुकुटका श्रेष्ठ मणि ऐसा श्रेष्ठ राजा होवे ॥ १६ ॥

सामान्यराजयोगः ।

दिवानाथः सिंहे गवि हिमकरो मेषभवने
महीजः कन्यायाममृतकरसूनुः सुरगुरुः ॥
भवेच्चापे कुम्भे दिनमणिसुतस्तौलिनि कवि-
र्जनुःकाले यस्य प्रभवति नरोऽसौ क्षितिपतिः १७॥

जिसके जन्मसमयमें सूर्य सिंहका, चंद्रमा वृपका, मंगल मेपका, बुध कन्याका, वृहस्पति धनका, शनि कुंभका और शुक्र तुलाका हो तो वह राजा होवे ॥ १७ ॥

बली पुण्यस्वामी दशमभवनाधीशभवने
तपःस्वाम्यागारे भवति दशमेशोऽपि भविनाम् ॥
तदा गर्जद्दन्तावलनिकरघण्टाघनरवै-
र्दिगन्तं वित्रस्तो विजयगमने यात्यरिगणः ॥ १८॥

जिस मनुष्यके जन्ममें नवमेश बलवान् होकर दशम वा दशमेशके राशिमें तथा दशमेश नवम वा नवमेशके राशिमें हो तो वह ऐसा प्रतापी राजा हो कि, जिसके शत्रुविजयार्थ गमन (शत्रुपर चढाई) मे गर्जन करते हुए हाथियोंके घंटाओंके घने शब्दसे डरकर शत्रुसमूह दिगंतोमें भाग जावें ॥ १८ ॥

शत्रुत्रासकरयोगः ।

यदा पुण्यस्वामी दशमभवने पुण्यभवने
बली कर्माधीशो भवति भविनामेव जनने ॥
समुद्रान्तं कीर्तिर्विजयगमने वैरिपटली-
धनुर्ज्याटंकारैर्भजति चकिता भीतिपदवीम् ॥१९॥

यदि जन्मधारियोंके जन्मसमयमें नवमेश दशमस्थानमें और दशमेश नवमस्थानमें हो, वा दोनों बलवान् हों तो समुद्रपर्यंत कीर्ति फैलानेवाला राजा होवे तथा उसके शत्रुविजयार्थ गमनमें धनुषकी (ज्या) कमानके टंकारशब्दोंसे शत्रुसमूह आश्चर्ययुक्त होकर भयके मार्गको प्राप्त होता है ॥ १९ ॥

प्रतापाधिकयोगः ।

भवेदङ्गाधीशो जननसमये पुण्यभवने
तथा कर्मस्वामी भवति च विलग्ने जनिमताम् ॥
तथा गर्जद्दन्तावलकरभवाजिव्रजपदैः
समाक्रान्ता पृथ्वी व्रजति गमने मोहपदवीम्॥२०॥

जिसके जन्मसमयमें लग्नेश नवमस्थानमें एवं दशमेश लग्नमें हो तो वह राजा होकर गर्जन करनेवाले हाथी घोडे ऊँट आदिकोंके समूहसहित जब गमन करै तो सेनाके बोझोंसे दबी हुई पृथ्वी मोह पद (घबराहट) को प्राप्त होजावे ॥ २० ॥

सुखैश्वर्यादियुक्तयोगः ।

यदा राज्यस्वामी नवमसुतकेन्द्रेऽर्थभवने
बलाक्रान्तो यस्य प्रभवति स वीरो नरवरः ॥
सदा काव्यालापी नवमणिकलापी बहुबली
तुरङ्गालीदन्तावलकलभगन्ता धनपतिः ॥ २१ ॥

यदि जन्मसमयमें दशमभावाका स्वामी त्रिकोण (९।५)वा केन्द्र (१।४।७।१०।) यद्वा धन (२) स्थानमें बलवान् हो तो वह सर्वदा काव्य करने वा कहनेवाला होवे एवं बहुत बलवान् और अनेक घोडाओंके पांति और हाथियोंके मनोहर जवान पट्ठाओंके सवारीमें गमन करनेवाला धनवान् राजा होवे ॥ २१ ॥

यदा कर्मस्वामी सुतभवनगामी शुभयुतः
सुतेशः कोदण्डे भवति भविनो यस्य जनने ॥
भयातीतो भोगी भवति चिरजीवी बहुगुणी
मतंगालीगन्ता रिपुनिकरहन्ता नरपतिः ॥ २२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मसमयमें दशमेश पंचमभावमें शुभग्रहयुक्त हो तथा पंचमेश धनराशिका हो यद्वा दशम हो वह भयरहित तथा सुखभोग भोगनेवाला,दीर्घायु,बहुतगुणवान् होवे. हाथियोंके झुण्ड उसकी सवारीमें रहैं वह शत्रुसमूहको मारनेवाला राजा होवै॥२२॥

धनागारस्वामी भवति यदि पारावतपदे
विशालं भूपालं कलयति नृबालं बहुबलम् ॥
अरातीभव्रातांकुशमनिशमानन्दनिरतं
नितान्तं श्रीमन्तं विविधधनदानोद्यतमलम् ॥२३॥

धनभावका स्वामी यदि पारावतांशमें हो तो मनुष्यके बालकको बहुत बड़ा राजा करता है कि, जो शत्रुरूपी हाथीसमूहोंके ऊपर अंकुशतुल्य रहता है. सर्वदा प्रसन्न, सर्वदा धन राज्यलक्ष्मीसे युक्त रहता है अनेक प्रकारसे धन देनेमें निश्चय तत्पर रहता है ॥ २३॥

देवलोकलवगो निशाकरात्पुण्यराशिपतिरिन्दु-
कान्तिभाक् ॥ गोगजव्रजतुरंगमण्डलीमण्डितो
मणिगणैरिलापतिः ॥ २४ ॥

नवमभावेश चन्द्रमासे २१ वें अंशमें हो तथा चन्द्रमा पूर्णमूर्ति होवै तो वह गौ, हाथियोंके समूह, घोडाओंके मण्डलीसे शोभायमान (मणि) रत्नोंके समूहसे युक्त पृथ्वीका पति होवे ॥ २४ ॥

कुबेरतुल्यराजयोगः ।

यदा माने याने भवति मदने वासवगुरौ
स्वतुंगे वा पंकेरुहनिकरबन्धावपि भृशम् ॥
भयत्राता दाता निगमविहिताचारचतुरो
गुणव्रातैर्नम्रो धनपतिसमानो विजयते ॥ २५ ॥

यदि १० । ४ । ७ भावोंमेंसे किसीमें बृहस्पति अपने उच्चका हो और उसके साथ विशेषतः चन्द्रमा भी हो तो भयसे रक्षाकरनेवाला, बहुत दान देनेवाला, शास्त्रोक्त आचार करनेमें चतुर, अनेक शौर्य्यौदार्य्यादिगुणोंसे नम्र और धनमें कुबेरके समान जयशाली राजा होवे ॥ २५ ॥

केवलनृपबालकविचारः ।

एतेषु योगेषु नरो नृपालो भवेदलं नीचकुलप्रजातः ॥ नृपालबालोऽपि च वक्ष्यमाणैः सुयोगजातैरिति संप्रवक्ष्ये ॥ २६ ॥

इतने जो राजयोग कहे हैं इनमें नीचकुलका उत्पन्न पुरुष भी राजा हो जाता है. ये सर्वसाधारणके लिये तुल्य है और राजाका पुत्र जिसका राजा होना संभव है वह थोडे भी राजयोगसे राजा होता है ऐसे अच्छे सुयोग आगे ग्रन्थकर्ता कहते हैं ॥ २६ ॥

मृगे विलग्ने रविजे कुलीरे दिवाकरे चन्द्रयुते प्रसूतौ ॥
कुजे यदाये भृगुजेऽष्टमस्थे भवेन्नृपालो नृपवंशजातः॥

यदि जन्ममें मकर लग्न हो,शनि कर्कमें,सूर्य पञ्चममें हो,चंद्रमा भी साथ हो तथा मङ्गल८का ग्यारहवें भावमें, शुक्र सिंहका अष्टम जन्ममें हो तो राजपुत्र राजा होवै अन्यकुलोत्पन्न कुलाधिक होवै२७

यदा कवीज्यौ भवतश्चतुर्थे नृपालबालोऽपि च भूमिपालः ॥ कुलीरगो देवगुरुः सचन्द्रो नृपालबालं प्रकरोति बालम् ॥ २८ ॥

यदि जन्ममें बृहस्पति शुक्र चतुर्थ भावमें हों तो राजपुत्र राजा होवै तथा कर्कका बृहस्पति चंद्रमासहित हो तो बालक राजाओंमें श्रेष्ठ होवै ॥ २८ ॥

यदेन्द्रमन्त्री विधुजं प्रपश्येद्गुणज्ञविज्ञं नृपतिं करोति ॥ प्रसूतिकाले यदि पंचराशौ चैकोऽपि बालं कुरुते नृपालम् ॥ २९ ॥

यदि जन्मसमय बृहस्पति बुधको देखे तो गुणज्ञ तथा विद्यावान् राजा करता है तथा जन्मकालमें यदि पंचमभावमें एक भी बलवान् ग्रह हो तो बालक राजा होवै ॥ २९ ॥

हितलवे तपनो विधुनेक्षितो नृपसुतं कुरुते च नृपोत्तमम् ॥ विधुसुतः सविधुः कुरुते नृपं भवति तुंगगतो यदि जन्मनि ॥ ३० ॥

सूर्य मित्रांशकमें चन्द्रमासे दृष्ट हो तो राजपुत्र राजाओंमें उत्तम होवे, बुध चन्द्रमासहित उच्च (६)का हो तो जन्महीसे राजा होवै ३०

जनुपि लग्नगतो यदि लग्नपो बलयुतः किल कण्टकगोऽपि वा ॥ अविरतं प्रकरोति तदा नृपं नृपजमेव न चित्रमिति स्फुटम् ॥ ३१ ॥

यदि जन्मसमयमें लग्नेश लग्नमें बलवान् हो अथवा किसी अन्य केंद्रमें हो तो राजपुत्रको विना विलंब राजा करता है, इसमें कुछ आश्चर्य नहीं ॥ ३१ ॥

रविरजे शनिना बलिना युतो भवति भूमिपतिं

कुरुते शिशुम् ॥ द्रविडकेरलदेशसमुद्भवं कृति-
वरं च परत्र धनेश्वरम् ॥ ३२ ॥

सूर्य मेषका बलवान् शनिसे युक्त हो तो बालकको राजा करता है,यह योग विशेषतः द्रविड तथा केरलदेशियोंको विशेष राज्यफल करता है तथा उसे अन्यत्र पंडित एवं पराये कमाये हुए धनका स्वामी भी करता है ॥ ३२ ॥

गुरुकवी यदि तुङ्गगताविमौ जनुषि कण्टककोण-
गृहाश्रितौ ॥ नृपकुले कुरुतो नृपमन्यथा द्रविणपं
परितो भवतो नरम् ॥ ३३ ॥

जन्मकालमें यदि बृहस्पति शुक्र अपने अपने उच्चराशियोंके केंद्र कोणोंमें हों तो राजकुलका उत्पन्न राजा होवे, परन्तु अन्य-कुलीय हो तो धनका स्वामी होवै ॥ ३३ ॥

श्रीछत्रयोगः ।

प्रसूतिकाले यदि सर्वखेटैस्तनुव्ययाऽगाऽर्थगृह-
स्थितैश्चेत् ॥ पुरातनात्पुण्यत एव पुंसां श्रीच्छ-
त्रयोगं प्रवदन्ति सन्तः ॥ ३४ ॥

जन्मसमयमें समस्त ग्रह लग्न व्यय सप्तम धन भावोंमें हों तो यह श्रीछत्रयोग पूर्वजन्मके पुण्यसे मनुष्यका होता है, ऐसा पंडित कहते हैं ॥ ३४ ॥

नृपबालानां सुखादियुक्तयोगः ।

यदा जीवो लग्ने मकरमपहाय प्रवसति
तदालं भूपालं नृपतिकुलबालं जनयति ॥
भवत्येवं चन्द्रो जनुषि जनुरङ्गं च कलया
परिक्रान्तः केन्द्रे नरपतिसुतं भूपतिपरम् ॥ ३५ ॥

यदि जन्ममें बृहस्पति मकरराशिको छोडके अन्य किसी राशिके लग्नमें हो तो निश्चय करके राजपुत्र राजा होता है,ऐसेही चंद्रमा अपने नीच (८) को छोडकर पूर्णकला हो लग्न अथवा अन्य केंद्रोंमें हो तो राजपुत्रको राजा करता है ॥ ३५ ॥

सुखागारस्वामी भवति नवमे वाथ दशमे
सुखे वा लग्ने वा हितलवगतो वा शुभखगैः ॥
युतो दृष्टो दन्तावलतुरगयानेन नितरां
जनानामागारं कनकमणिसंघैः परिवृतम् ॥ ३६ ॥

जन्ममें यदि चतुर्थभावका स्वामी नवमस्थानम अथवा दशममें, चतुर्थमें,लग्नमें हो परंतु मित्रस्वांशकमें हो शत्रुके वर्गमें न हो अथवा शुभग्रहोंसे युक्त दृष्ट हो तो हाथी घोडाओंकी सवारी नित्य उसके रहे तथा घर सुवर्ण एवं माणिक्य और रत्नसमूहोंसे युक्त रहे ॥३६॥

पंचमे भवति कर्मभावपे कान्तिभाजि गजवाजिजं सुखम् ॥ सर्वतोऽस्य विदिता ततो भवेदादिगन्तमतुला यशोलता ॥ ३७ ॥

दशमभावेश पंचमस्थानमें उदयी हो तो हाथी घोडोंका सुख सर्वप्रकारसे होवे और उसकी निर्मल कीर्ति दिशाओंके अंतपर्यंत पहुँचे ॥ ३७ ॥

अथ चन्द्रयोगाः ।

भवति चन्द्रमसो दशमाधिपो जनुषि केन्द्रनवद्विसुतोपगः ॥ अतिविचित्रमणिव्रजमण्डितो वसुमतो वसुभूषणसंयुतः ॥ ३८ ॥

अब चंद्रमासे योग कहते हैं—यदि जन्मसमयमें चंद्रमासे दशमभावेश केंद्र (१।४।७।१०) नव ९ द्वि २ सुत ५ भावमें हो तो

अतिउत्तम नानाप्रकारके मणियोंके समूहसे (मंडित) शृंगार युक्त होकर पृथ्वीमें धन भूषणोंसे युक्त रहे ॥ ३८ ॥

चन्द्राक्रान्तभपः सुखालयगतो दन्तावलानां सुखं
मुक्तास्वर्णमणिव्रजामलयशःपुञ्जं विचित्रालयम् ॥
भृत्यापत्यकलत्रमित्रपटलीविद्याविनोदं तथा
पुण्यं संतनुते मुदं नरपतेरर्थं नराणामिह ॥ ३९ ॥

चंद्रस्थितराशिका स्वामी चतुर्थ हो तो हाथियोंका सुख, मोती, सुवर्ण, मणिसमूह मिले, निर्मल यशके पुंज होवें। नानारंगोंका घर होवे, (भृत्य) सेवक, पुत्र, स्त्री, मित्रोंका समूह रहे, विद्याके विनोदमें रहे, पुण्य कमावे, प्रसन्नता पावे, राजासे धन पावे यह सभी मनुष्योंको कहा है ॥ ३९ ॥

अनफादियोगः ।

व्ययगतैरनफा रविवर्जितैर्धनगतैः खचरैः
स्वनफा विधोः ॥ उभयतोऽपि गतैरुदिता नृणां
दुरुधरा मधुराशनभोगदा ॥ ४० ॥

चंद्रमासे बारहवें स्थानमें सूर्यरहित कोई ग्रह हो तो अनफा, चंद्रमासे दूसरेमें कोई हो तो स्वनफा और दोनों स्थानोंमें ग्रह हों तो दुरुधरा योग मधुरभोजन और अनेक प्रकारके भोग देनेवाला होता है ॥ ४० ॥

अनफायोगफलम् ।

जनिमतामनफा कुरुतेतरां गुणवतीयुवतीरति-
वर्द्धनम् ॥ नृपसभापटुताममलं यशो वरपशो-
रपि सौख्यकरं परम् ॥ ४१ ॥

जन्मधारीको अनफायोग हो तो गुणवती युवती (स्त्री) एवं उससे (रति) क्रीडाकी वृद्धि देता है, राजाकी सभामें चतुरता

निर्मलयश और श्रेष्ठ पशु घोडे आदिकोंका भी परमसौख्य निश्चय करके देता है ॥ ४१ ॥

स्वनफायोगफलम् ।

भुजबलेन रमापरमालयं जनिमतां गरिमा स्वनफा यदा ॥ अबलयाऽमलया नवयानभूविभुतयाद्भुतया परमं सुखम् ॥ ४२ ॥

स्वनफायोग यदि जन्ममें हो तो उसके बाहुबलसे (परम) श्रेष्ठ लक्ष्मी घरमें रहै, (गुरुता) बडप्पन मिलै तथा सुन्दरनिर्मलनवयौवना स्त्री, नई सवारी और पृथ्वी इनका अद्भुत सुख मिलै ॥४२॥

दुरुधरायोगफलम् ।

दुरुधरा बहुधा वसुधावसुव्रजसुवारणवाजिसुखं नृणाम् ॥ वितनुते नृपतेरतुलं यशो गुणकलापपटुत्वमिहाद्भुतम् ॥ ४३ ॥

जिन मनुष्योंका दुरुधरायोग हो उनको पृथ्वी जमीन, धनके समूह, उत्तम हाथी, घोडे आदिका सुख होवै, राजासे अतुल यश मिलै, अनेक गुणोंके समूहसे अद्भुत चतुरता मिलै ॥ ४३ ॥

केमद्रुमयोगः ।

न धने न व्यये खेटाश्चन्द्रादिह भवन्ति चेत् ॥ तदा केमद्रुमं प्राहुः पंडिता मिहिरादयः ॥ ४४ ॥

यदि चंद्रमासे दूसरे वा व्यय भावमें कोई भी ग्रह न हो तो उसको मिहिराचार्य आदि पंडित केमद्रुम योग कहते हैं ॥ ४४ ॥

केमद्रुमे सुरपतेरपि नन्दनोऽयं देशान्तरं व्रजति पुत्रकलत्रहीनः॥धर्मच्युतो विकलितो गदसंघभीतो नानाधितापसहितो महितोषहीनः ॥ ४५ ॥

जिसके जन्ममें केमद्रुमयोग हो वह इंद्रका प्यारा पुत्र भी हो

तो भी स्त्री पुत्रोंसे रहित होकर विदेशभ्रमण करै, धर्मसे रहित रहै, कलाहीन, रोगोंसे भयवान्, नानाप्रकारकी मानसी व्यथा संतापसहित और संसारमें संतोषहीन रहै ॥ ४५ ॥

केमद्रुमभंगाः ।

शुक्रेज्यसौम्यसहितोऽपि च कण्टकस्थो
वा पूर्णबिंब इह यस्य भवेन्मृगाङ्कः ॥
कन्द्राणि खेचरयुतानि तदा नराणां
केमद्रुमोद्भवफलं विफलत्वमीयात् ॥ ४६ ॥

उक्त केमद्रुमयोगका भंग कहते हैं कि, जिसका चंद्रमा, शुक्र, बृहस्पति, बुधमेंसे किसीसे युक्त हो अथवा केंद्रमें हो अथवा पूर्ण मंडल हो यद्वा उसके केंद्रोंमे ग्रह हो तो मनुष्योंको केमद्रुम योगोक्त फल केमद्रुम हुएमें भी निष्फल होजावे ॥ ४६ ॥

ह्रदयोगः ।

जनुषि नीचगताः सकला ग्रहा यदि भवन्ति तदा ह्रदसंज्ञकः ॥ ह्रदभवो विकलो विभवोनितो रिपुहतो नितरां शठतायुतः ॥ ४७ ॥

जन्मसमयमें यदि समस्तग्रह नीच राशिअंशकोंमें हों तो ह्रदयोग होता है,ह्रदयोगमें जिसका जन्म हो वह (विकल)कलारहित ऐश्वर्यहीन शत्रुसे (पराजित) हारा हुआ (शठ)धूर्त्त वा वंचक भी होवे ॥ ४७ ॥

फणियोगः ।

घटगते तपने क्रियगे शनावलिगते च विधौ निजनीचभे ॥ भृगुसुते जनने फणिसंज्ञको विकलितं कुरुते नरपुंगवम् ॥ ४८ ॥

कुम्भका सूर्य, मेषका शनि, वृश्चिकका चन्द्रमा, कन्याका शुक्र, अपने नीचमें हो तो फणिसंज्ञकयोग होता है, इसमें जिसका जन्म हो वह मनुष्य श्रेष्ठ भी (विकल) कलाहीन होता है ॥४८॥

काकयोगः ।

अजगते भृगुजे रविजे जनुर्वृषभगे दिनपेऽनिमिषे विधौ ॥ अवनिजे यदि कर्कटगेहगे भवति काकभवो विभवोनितः ॥ ४९ ॥

जिसके जन्ममें मेषका शुक्र, मेषका शनि, वृषका सूर्य, मीनका चन्द्रमा, कर्कका मङ्गल हो तो यह काकयोग ऐश्वर्यहीन (दरिद्री) करता है ॥ ४९ ॥

दरिद्रयोगः ।

विधुयुतो घटभे दिवसाधिपो गुरुमहीजकवीनसुताः पुनः ॥ यदि भवंति च नीचगता जनुर्व्रजति राजसुतोऽपि दरिद्रताम् ॥ ५० ॥

चन्द्रमासहित सूर्य कुम्भका और बृहस्पति, मङ्गल, शुक्र, शनि, अपने अपने नीचराशियोंमें हों ऐसे योगमें जिसका जन्म हो वह राजा भी हो तो भी दरिद्री ही रहे ॥ ५० ॥

हुताशनयोगः ।

शनिमहीजनिशाकरचन्द्रजा यदि जनुः किल नीचमुपाश्रिताः॥ मकरभे भृगुजोऽपि हुताशनः परमतापकरो न करोति शम् ॥ ५१ ॥

यदि जन्ममें शनि, मंगल, चन्द्रमा, बुध अपने अपने नीचराशियोंमें हों तथा शुक्र भी मकरका हो तो यह हुताशनयोग होता है, इसमें मनुष्य परमसंताप करनेवाला होता है, शुभफल कदापि नहीं ५१

राजयोगभङ्गविचारः।

यदि भवन्ति नवायदशाधिपा जनुषि नीचगता विकला भृशम् ॥ नृपतियोगजभङ्गभृतां फलं परिणमत्यपि निष्फलतामिह ॥ ५२ ॥

यदि जन्ममें ९।१०। ११ भावोंके स्वामी नीचराशियोंमें तथा अत्यन्त करके अस्तंगत पीडित आदि भी हों तो मनुष्योंके राजयोग भी हो तो उसका फल निष्फल होकर दरिद्री ही होवे ॥५२॥

रिपुमन्दिरगैरेव वैरिभाव-गतैरपि ॥
राजयोगा विनश्यन्ति दिवाकरकरोपगैः ॥ ५३ ॥

यदि राजयोगकर्ता ग्रह शत्रुराशियोंमें वा छठे भावमें यद्वा शत्रुवर्गमें हो तथा अस्तंगत हों तो राजयोग नष्ट हो जाता है ॥५३॥

भवति वीक्षणवर्जितमङ्गिनां जननलग्नमिहांबरगामिनाम् ॥ जननभं च नृपालभवो नरो जगति यातितरामतिरङ्कताम् ॥ ५४ ॥

यदि मनुष्योंके जन्मलग्नको कोई ग्रह न देखे तथा चन्द्रराशिको भी कोई ग्रह न देखे तो राजयोगवाला मनुष्य राजपुत्र भी हो तो भी (रंक) दरिद्री ही होता है ॥ ५४ ॥

भद्रायां व्यतिपाते वा तथा केतूदये जनिः ॥
यस्य तस्य विनश्यन्ति राजयोगफलान्यपि ॥५५॥

जिसका जन्म भद्रा व्यतिपातमें तथा केतु (पुच्छल तारा) के उदयमें हो तो उसके राजयोगोंका फल भी नष्ट होता है ॥ ५५ ॥

परमनीचलवे यदि चन्द्रमा भवति जन्मनि तस्य विशेषतः॥नृपतियोगफलं विफलं ततः कलयतीति वदन्ति मुनीश्वराः ॥ ५६ ॥

इति दैवज्ञजीवनाथविरचिते भावकुतूहले राजयोगाध्यायः ॥७॥

जिसके जन्ममें चंद्रमा परम नीचांशकमें हो उसके विशेपतासे राजयोगोंके फल निष्फल होजाते हैं यह मुनीश्वर कहते हैं ॥५६॥

इति भावकुतूहले माहीधरीभाषाटीकायां राजयोग-
तद्भंगदारिद्रयोगाध्यायः ॥ ७ ॥

अष्टमोऽध्यायः ।

राजयोगचिह्नम् ।

जनने प्रबलो यस्य राजयोगो भवेद्यदि ॥
करे वा चरणेऽवश्यं राजचिह्नं प्रजायते ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्ममें राजयोग प्रबल होता है उसके हाथ वा पैरमें अवश्यमेव राजचिह्न होता है ॥ १ ॥

अनामामूलगा रेखा सैव पुण्याभिधा मता ॥
मध्यमाङ्गुलिमारभ्य मणिबधान्तमागता ॥ २ ॥
सोर्ध्वरेखा विशेषेण राज्यलाभकरी भवेत् ॥
खण्डिता दुष्टफलदा क्षीणा क्षीणफलप्रदा ॥ ३ ॥

अनामिकाके मूलमें सीधी रेखा पुण्य देनेवाली होती है,खंडित अशुभ जानना तथा मध्यमाके जड़से लेकर (मणिबंध) हाथके जडनाडी स्थानसे नीचेपर्यंत पूरी सीधी एक रेखा हो उसे ऊर्ध्वरेखा कहते हैं विशेपतः राज्यलाभ करती है, यदि खंडित हो तो (दुष्ट-फल) दुःख दरिद्र देती है और(क्षीण) अथवा माडी हो तो फल भी क्षीण ही देती है ॥ २ ॥ ३ ॥

यवचिह्नफलम् ।

अंगुष्ठमध्ये पुरुषस्य यस्य विराजते चारुयवो यशस्वी ॥ स्ववंशभूषासहितो विभूषायोपार्जनै-रर्थगणैश्च मर्त्यः ॥ ४ ॥

जिस पुरुपके अँगूठेके बीचमें (यवरेखा) जौके दानेका रमणीय

आकार हो वह यशस्वी होता है;अपने वंशका भूषण होता है तथा स्त्री, भूषण, धनसे युक्त रहता है ॥ ४ ॥

वैसारिणो वाऽऽतपवारणो वा चेद्वारणो दक्षिण-
पाणिमध्ये ॥ सरोवरं चाङ्कुश एव यस्य वीणा च
राजा भुवि जायते सः ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके दाहिने हाथमें मछली, छत्र, हाथी, तालाव, अंकुशमेंसे कोई भी चिह्न हो अथवा वीणाका चिह्न हो वह पृथ्वीमें राजा होवे ॥ ५ ॥

मुसलशैलकृपाणहलाङ्कितं करतलं किल यस्य सं
वित्तपः ॥ कुसुममालिकया फलमीदृशं नृपति-
रेव नृपालभवे यदा ॥ ६ ॥

जिसका हाथ मूसल, शैल, खड्ग, हलके चिह्नसे चित्रित हो वह धनका स्वामी होताहै, यदि पुष्पमालाका चिह्न हो तो भी धनवान् होताहै,यदि यह चिह्न राजवंशीके हों तो अवश्य राजा होता है॥६॥

परमलक्ष्मीप्राप्तिचिह्नम् ।

करतलेऽपि च पादतले नृणां तुरगपङ्कजचापरथा-
ङ्गवत् ॥ ध्वजरथासनदोलिकया समं भवति
लक्ष्म रमापरमालये ॥ ७ ॥

जिन मनुष्योंके हाथ वा पैरके तलेमें घोडा,कमल,धनुप,चक्र, ध्वजा, रथ, सिंहासन,डोलीके तुल्य चिह्न हों तो उसके घरमें परम लक्ष्मी सदा रहे ॥ ७ ॥

अखण्डलक्ष्मीप्राप्तिचिह्नम् ।

कुंभः स्तंभो वा सुरंगो मृदंगः पाणावंघ्रौ वा
द्रुमो यस्य पुंसः ॥ चञ्चद्दण्डोऽखण्डलक्ष्म्या
परीतः किं वा सोऽयं पण्डितः शौण्डिको वा ॥८॥

जिस पुरुपके हाथ वा पैरके तलुवेपर कलश, स्तंभ, घोडा, मृदंग अथवा वृक्ष, लट्ठीके चिह्न हों तो अखण्ड लक्ष्मीसे युक्त रहे यद्वा पंडित हो या (शौंडिक) मद्य वेचनेवाला होवे ॥ ८ ॥

विशालभालोऽम्बुजपत्रनेत्रः सुवृत्तमौलिः क्षिति-
मण्डलेशः ॥ आजानुबाहुः पुरुपं तमाहुः क्षोणी-
भृतां मुख्यतरं महान्तः ॥ ९ ॥

जिसका (भाल) माथा वडा हो, नेत्र कमलदलके समान हों, शिर सुहावना वृत्ताकार हो तो पृथ्वीमंडलका राजा होवे और जिसके खडे हुएमें हाथ सीधे नीचे छोडे घुटनोंपर्यंत पहुँचें तो राजाओंमें मुख्य वडा राजा होवे ॥ ९ ॥

नाभिर्गभीरा सरला च नासावक्षःस्थलं रत्न-
शिलातलाभम् ॥ आरक्तवर्णौ खलु यस्य पादौ
मृदू भवेतां स नृपोत्तमः स्यात् ॥ १० ॥

जिसकी नाभि (गंभीर) गहरी, नाक सरल, छाती रत्न-शिलाके समान स्वच्छ, पैर लालरंगके तथा कोमल हों तो श्रेष्ठ राजा होवे ॥ १० ॥

तिललक्षणम्।

राजते करगो यस्य तिलोऽतुलधनप्रदः ॥
तथा पादतले पुंसां वाहनार्थसुखप्रदः ॥ ११ ॥

जिसके दाहिने हाथमें तिलका चिह्न हो उसे असंख्य धन देता है, एवं पैरकेतलुवेमें हो तो वाहन और धनका सुख देवे ॥ ११ ॥

राजवंशप्रजातानां समस्तफलमीदृशम् ॥
अन्येषामल्पतां याति तथा व्यक्तं सुलक्षणम् ॥१२॥

इति भावकुतूहले सामुद्रिकलक्षणाध्यायोऽष्टमः ॥ ८ ॥

उक्तलक्षण प्रगट हुएमें राजवंशीके हों तो पूर्ण राज्यफल देते हैं, अन्यको धन मान आदि थोडा ही फल देते हैं ॥ १२ ॥

इति भावकुतूहले माहिधरीभाषाटीकायां सामुद्रिकलक्षणाध्यायः ॥ ८ ॥

नवमोऽध्यायः ।

स्त्रीजातकम् ।

शुभाशुभं पूर्वजनेर्विपाकात्सीमन्तिनीनामपि तत्फलं हि ॥ विवाहकालात्परतः प्रवीणैरसम्भवात्तत्पतिषु प्रकल्प्यम् ॥ १ ॥

अब स्त्रीजातक कहते हैं–जो कुछ स्त्रियोंके पूर्वजन्मार्जित कर्मोंसे शुभ वा अशुभ होते हैं वह विवाहसे ऊपर जो फल स्त्रियोंको होने असंभव हैं वे उसके भर्त्ताको चतुर ज्योतिषी कहे जो स्त्रियोंको संभव हैं वे उसको कहने. तथा समस्त फल देश, जाति, कुल विचारके संभवासंभव जानके युक्तिसे कहना ॥ १ ॥

अतीव सारं फलमङ्गनानामुदीरितं शौनकनारदाद्यैः ॥ व्यक्तं यथा लग्ननिशाकराभ्यां मया तथैव प्रतिपाद्यते तत् ॥ २ ॥

ग्रंथकर्त्ता कहता है कि, स्त्रियोंके लग्न तथा चंद्रमासे शौनक नारद आदि आचार्योंने अतिसारतर जो फल कहे हैं उनहीको म यहाँ प्रगट प्रतिपादन करता हूँ ॥ २ ॥

सौभाग्यादिस्थानसंज्ञा ।

सौभाग्यं सप्तमस्थाने शारीरं लग्नचन्द्रयोः ॥ वैधव्यं निधनस्थाने पुत्रे पुत्रं विचिन्तयेत् ॥ ३ ॥

स्त्रियोंके सप्तमस्थानसे सौभाग्य, लग्न तथा चंद्रमासे शरीरका

शुभाशुभ, अष्टमस्थानसे वैधव्य और पंचमभावसे पुत्रसुखासुख विचारना, अन्य भावविचार पुरुषोंके उक्तप्रकारसे जानने ॥ ३ ॥

सुभगा-दुर्भगायोगः ।

सौम्याभ्यां प्रवरा शुभत्रययुते जाया भवेद्भूपतेः
सौम्यैकेन पतिप्रिया मदनभे दृष्टे युते जन्मनि ॥
पापैकेन पुनर्विलोल-नयना पाप-द्वयेनाधमा
पापानां त्रितयेन सा परकुलं हत्वा पतिं गच्छति॥४॥

जन्मसमयमें तीन शुभग्रहोंसे सप्तम भावयुक्त वा दृष्ट हो तो वह स्त्री राजरानी होवे, दो शुभग्रहोंसे ऐश्वर्यवती, एकसे पतिकी प्रिया होवे, तथा सप्तममें एक पापग्रह हो वा एक पाप ग्रह देखे तो (चंचलनेत्रा) परपुरुषदृष्टिवाली, दो पापोंसे अधर्म कर्म करनेवाली, तीनसे निज पतिको मारकर पराये घरमें अन्य रतिके पास जानेवाली होवै ॥ ४ ॥

पुंश्चलीत्वादियोगः ।

जनुःकाले यस्या मदनभवने वासरमणौ
पतिं त्यक्त्वा नूनं कुपितहृदया भूमितनये ॥
अवश्यं वैधव्यं सपदि कमलाक्षी रविसुते
जरां पापैर्दृष्टे निजपतिविरोधं व्रजति वा ॥ ५ ॥

जिस स्त्रीके जन्ममें सूर्य्य सप्तमभावमें हो वह पतिको त्याग करे वा पति इसे त्याग करे तथा इसके हृदयमें नित्य क्रोध बना रहे । यदि मंगल सप्तम हो तो अवश्य विधवा होवे, शनि सप्तम हो तो (कमलनेत्रा) सुरूपा भी हो तथापि अनव्याहेमें वृद्धत्व पावे अर्थात् वडी उमरमें विवाह होवे,जो पापग्रहोंकी दृष्टि सप्तम भावपर हो तो पतिके साथ विरोध रक्खे ॥ ५ ॥

पतिव्रतायोगः ।

यस्याः शशाङ्के जनिलग्नभे वा रामर्क्षगे सा प्रकृतिः स्थिरा स्यात् ॥ शुभेक्षिते रूपवती गुणज्ञा पतिक्रिया चारुविभूषणाढ्या ॥ ६ ॥

जिसके जन्मसमयमें चंद्रमा लग्नमें अथवा तीसरे भावमें हो तो उसकी प्रकृति सर्वदा स्थिर रहे, उसे शुभग्रह भी देखें तो रूपवती गुणवती पतिसेवामें चतुर और रमणीय भूषणोंसे युक्त होवे ॥ ६ ॥

यदांगचन्द्रावसमे भवेतां तदा नराकारसमा कुरूपा ॥ पापेक्षितौ पापयुतौ विशेषाद्रुदातुरा रूपगुणैर्विहीना ॥ ७ ॥

यदि लग्न एवं चंद्रमा विषमराशि विषमनवांशकोंमें हो तो स्त्री पुरुषकी (आकृति) स्वरूप यद्वा पुरुषोंके तुल्य कृत्य करनेवाली होवे, कुरूपा भी होवे,यदि उक्त लग्न चंद्रमा पापयुक्त दृष्ट भी हों तो विशेषतः रोगसे आतुर रहै, सुगुणोंसे हीन रहै ॥ ७ ॥

स्त्रीणां राजयोगाः ।

जनुःकाले यस्या मदनसदने दानवगुरौ शुभाभ्यामाक्रान्ते गतवति तदा सा विधुमुखी ॥ गजेन्द्राणां मुक्ताफलविमलमालावृतकुचा प्रिया पत्युर्नित्यं प्रभवति शचीवत्क्षितितले ॥ ८ ॥

जिसके जन्मसमयमें सप्तमस्थानमें शुक्र हो शुभग्रहोंसे युक्त हो उस चन्द्रमुखीके स्तनोंके ऊपर गजमोतियोंकी माला विराजमान रहे अर्थात् ऐश्वर्यसे परिपूर्ण रहे तथा पतिकी प्यारी नित्य रहे और इंद्राणीके समान ऐश्वर्यवती होवे ॥ ८ ॥

समाक्रान्ते लग्ने त्रिदशगुरुणा वाथ भृगुणा
बुधे कन्याराशौ मदनभवने भूमितनये ॥
मृगे कर्के चन्द्रे सति भवति लावण्यतिलका
तपोरेखायोपा प्रभवति विशेषात्क्षितिपतेः ॥ ९ ॥

यदि जन्मसमयमें लग्नका बृहस्पति अथवा शुक्र हो, तथा कन्याराशिका बुध सप्तमस्थानमें, मंगल मकरमें, चंद्रमा कर्कमें हो तो लावण्य (सुरूपता) वाली स्त्रियोंमें (तिलका) श्रेष्ठ होवे विशेषतः राजाकी महारानी बडी तपस्या करके पाई जैसे होवे॥९॥

शशाङ्के कर्कस्थे भवति हि युवत्यां विधुसुते
तनौ जीवे मीने गवि भृगुसुते जन्मसमये ॥
सहस्राली मान्या जगति नृपकन्या गुणवती
विशेषादेषा स्यान्नृपतिपतिका पुण्यलतिका ॥१०॥

चंद्रमा कर्कका, बुध कन्याका, बृहस्पति मीनका लग्नमें, शुक्र वृषका, जन्मसमयमें हो तो एक हजार सखियोंमें मान्या संसारमें राजकन्या गुणवती होवे तथा विशेषतासे यह स्त्री राजाके घरकी स्वामिनी पुण्यकी लता होवे ॥ १० ॥

सप्तमे प्रत्येकग्रहफलानि ।

दिनपताविह कामनिकेतनं गतवति प्रवराप्यवरा भवेत् ॥ जनुषि वल्लभभावविवर्जिता सुजनता-रहिता वनिता भृशम् ॥ ११ ॥

जिसके जन्ममें सूर्य सप्तम हो वह श्रेष्ठा भी अश्रेष्ठा होजावे, पतिका प्रेम उसमें न होवे, अतिशय दुर्जनता करे, दुष्टस्वभावा होवे, कुटुम्बसे भी विरोधी रहे ॥ ११ ॥

वृषे राकानाथे भवति मदने जन्मसमये
भवेदेषा योषा विमलवसना चारुवदना ॥
विनम्रा मुक्तालीवलितकुचभारेण नितरां
परालीलालक्ष्मीरतिपतिरमेव क्षितितले ॥ १२ ॥

जिसके जन्ममें सप्तमभावमें चंद्रमा वृषका हो वह स्त्री निर्मलवस्त्र पहननेवाली, सुहावने वदन (मुख) वाली, नम्रमुखी, मोतियोंकी मालासे शोभित, स्तनभारसे नम्र, परम लीला करनेवाली, होवै और पृथ्वीमें सबसे सुंदर ऐसी होवै जैसी कामदेवकी स्त्री रति है अथवा लक्ष्मीके समान ॥ १२ ॥

अङ्गारके मदनमन्दिरमिन्दुभावं मन्दान्विते हरिभगे जननेऽङ्गनायाः ॥ वैधव्यमेव नियतं कपटप्रबन्धाद्धाराङ्गना भवति सैव वरांगनापि ॥ १३ ॥

जन्ममें स्त्रीका मंगल विशेषसे कर्कका हो अथवा मंगल शनिसहित सिंहका सप्तम हो तो निश्चय वैधव्य पावै तथा कपटके प्रबंध करे, (व्यभिचारिणी) वेश्या हो.यदि यह स्त्री धर्मकर्मसे तथा कुलसे श्रेष्ठ भी हो तो भी वेश्या ही होवै ॥ १३ ॥

अनेकस्त्रीभर्त्ता भवति मखकर्त्ता च मदने
बुधे तुंगे यस्या जनुषि खलु तस्याः पतिरिह ॥
स्वयं वामा कामाकुलितहृदया मोदकलया
परीता मुक्तालीरजतकनकालीमणिगणैः ॥ १४ ॥

जिस स्त्रीके जन्ममें कन्याका बुध सप्तममें हो उसकाभर्ताअनेक स्त्रियोंका स्वामी होवै और यज्ञ करनेवाला होवै तथा आप वह स्त्री कामदेवसे व्याकुलितहृदय रहे, कामकलामें तत्पर रहे और मोतियोंकी माला, सोने, चांदी, मणिरत्नोंसे भरी रहै ॥ १४ ॥

परिक्रान्ते यस्या मदनभवने देवगुरुणा
गुणज्ञा धर्मज्ञा निजपतिपदाब्जं भजति सा ॥
मणीनां मालाभिः कनकघटिताभिश्च शिरसा
समाक्रान्ता कान्ता रतिपतिपताकेव शशिभे ॥१५॥

जिसके जन्ममें बृहस्पति सप्तमस्थानमें बैठा हो वह (गुणज्ञा) समस्त सुगुणवाली, धर्मजाननेवाली, अपने पतिकी सेवा करनेवाली "पतिव्रता" होवे और सुवर्णमें जडे हुए (मणि) रत्नोंकी मालाओंसे शिर आक्रांत रहे. यदि वह बृहस्पति सप्तममें कर्कका हो तो वह स्त्री कामदेवकी पताका जैसी उत्तमरूपगुणवती होवे॥१५॥

कवौ यस्या जन्मन्यपि मदनगे मीनभवने
तदा कान्तो दान्तो रतिपतिकलाकौतुकपटुः ॥
धनुर्द्धर्त्ता भर्त्ता स्वयमपि च सङ्गीतरसिका
विलोला पद्माक्षी वसनलसिता भूषणवृता ॥ १६ ॥

जिसके जन्ममें मीनका शुक्र सप्तम भावमें हो उसका पति उदार, कामकला क्रीडामें चतुर तथा धनुष धारण करनेवाला होवे. आप भी वह स्त्री गायनविद्याकी रसिका चंचलतासे भर्त्ताको प्रसन्नकरनेवाली कमलदलसमाननेत्रा एवं उत्तम भूषण वस्त्रोंसे युक्त रहे ॥१६॥

मदनभावगते तपनात्मजे पतिरतीव गदाकुलितो भवेत् ॥ मलिनवेषधरो विबलो महाञ्जनुषि तुङ्गगते प्रवरो धनी ॥ १७॥

जन्ममें शनि सप्तम भावमें हो तो उसका पति अतिरोग पीडित होवे, मलिन वेष धारण करनेवाला, अति निर्बल होवे । यदि उक्त शनि उच्चका हो तो श्रेष्ठ और धनवान् होवे ॥ १७ ॥

सप्तमे सिंहिकापुत्रे कुलदोषविवर्द्धिनी ॥
नारी सुखपरित्यक्ता तुङ्गे स्वामिसुखान्विता ॥ १८ ॥

राहु सप्तममें हो तो कुलको (दोष) कलंक बढानेवाली, सुखरहित स्त्री होवै यदि वह राहु उच्चका हो तो भर्ताके सुखसे युक्तरहै १८॥

अथान्ययोगाः ।

मिथस्तौ शुक्रार्की यदि लवगतौ वीक्षणमितौ
भवेतां वा लग्ने घटलवगते शुक्रभवने ॥
अनङ्गेरालीलाऽऽकलित—नररूपाभिरनिशं
स्थिताभिःकान्ताभिःखलु मदनशांति व्रजतिसा १९॥

यदि शुक्र और शनि परस्परांशक अर्थात् शनिके अंशकमें शुक्र शुक्रके अंशमें शनि हो उपलक्षणसे राशियोंमें भी परस्पर हो तथा इनकी परस्पर दृष्टि भी होवै.यद्वा शुक्रके राशि २ । ७ लग्नमें कुम्भांशक युक्त हों तो कामदेवकी लीलाओंसे निर्मित नररूपवाली नित्य अनेक नररूप (मर्दक वेष) स्थित स्त्रियोंसे कामदेवको शांत करे ॥ १९ ॥

क्षपानाथे यस्या गतवति कुलीराङ्गमथवा
मदागारं सारं सुरगुरुबुधाभ्यामपि युतम् ॥
महान्तोऽपि भ्रान्ताः कतिकति मनोजाधिकतया
पुरस्तां पश्यंतो दधति परमानन्दलहरीम् ॥ २० ॥

जिसका चन्द्रमा लग्नमें कर्कका हो अथवा सप्तमभाव मंगलसहित हो तथा बुध बृहस्पतिसे भी युक्त हो तो अनेक बडे बडे महात्मालोगभी सम्मुख इस स्त्रीको देखकर कामदेवके अधिक होनेसे विभ्रांतमन होकर मोहित होवें ऐसे वह परम आनन्दलहरीको रूपकी छटासे धारण करनेवाली होवै ॥ २० ॥

मृगागारे सारे गतवति विसारं सुरगुरौ
कवौ वा पातालं तपनतनयेनापि मिलिते ॥
जनुःकाले यस्याः करिमुकुटमुक्ताफलमणि-
व्रजानां मालाभिर्वलितमुत वक्षोजयुगलम् ॥ २१ ॥

जिसके जन्मसमयमें मकरका मंगल, मीनका बृहस्पति प्राप्त हो अथवा शनिसहित शुक्र चतुर्थ हो तो हाथीके शिरसे उत्पन्न (गजमोती) मुक्ताफलोंसे सहित अनेकमणियोंकी मालाओंसे वेष्टित स्तनयुग्म रहै ॥ २१ ॥

वैधव्ययोगाः ।

निद्राकरात्सप्तमभावसंस्था महीजमन्दागुदिवा-
कराश्चेत् ॥ तनोरिमे जन्मनि नैधनं वा दिशन्ति
वैधव्यमलं मदे वा ॥ २२ ॥

चन्द्रमासे सप्तमस्थानमें मंगल, शनि, राहु, सूर्य हों तो निश्चय वैधव्य करते हैं तथा जन्मलग्नमें शत्रुराशिके अथवा अष्टम या सप्तमस्थानमें हों तौ भी वैधव्य देते हैं ॥ २१ ॥

लग्नाधिपो वाथ मदालयेशो वर्गे गतः पापनभ-
श्चराणाम् ॥ मदे तनौ वा खलखेटवर्गस्तदा
कुलं मुञ्चति चञ्चलाक्षी ॥ २३ ॥

जन्मलग्नेश अथवा सप्तमेश पापग्रहोंके (वर्ग) राश्यंशकादिकोंमें हो अथवा लग्नमें एवं सप्तमभावमें पापग्रहके राश्यंशक हों तो वह स्त्री कुलको छोड देवै अर्थात् कुलटा हो ॥ २३ ॥

पापान्तराले यदि लग्नचन्द्रौ स्यातां शुभालोकन-
वर्जितौ तौ ॥ अनंगलोला खलसंगमेन कुलद्वयं
हन्ति तदा मृगाक्षी ॥ २४ ॥

यदि जन्मसमयमें लग्न, चन्द्रमा पापग्रहोंके बीचमें हो शुभग्रहोंकी दृष्टि उनपर न हो पापयुक्तभी हो तो वह मृगाक्षी कामदेवसे चंचल होकर पितृकुल भर्तृकुल दोनोंका नाश करे अर्थात् व्यभिचारिणी होकर दोनों कुलोंको डुबावे ॥ २४ ॥

व्ययेऽष्टमे भूमिसुतस्य राशावगौ सपापे भवतीह रण्डा ॥ मदे कुलीरे सरवौ कुजेऽपि धवेन हीना रमतेऽन्यलोकैः ॥ २५ ॥

यदि मंगलकी राशि १ । ८ में,राहु बारहवां वा अष्टम पापयुक्त हो तो वह स्त्री रांड होवे अथवा सप्तमभावमें कर्कका सूर्य, मंगल; सहित हो तो पतिहीन होकर अन्यपुरुषोंसे रमित रहे ॥ २५ ॥

तनौ चतुर्थे निधने व्यये वा मदालये पापयुतः कुजश्चेत् ॥ अनंगलीलां प्रकरोति जारैः पतिं तिरस्कृत्य विलोलनेत्रा ॥ २६ ॥

यदि जन्मलग्नसे चौथा, बारहवां अथवा सप्तम पापयुत मंगल हो तो वह चंचला अपने पतिका तिरस्कार करके (जार) उपपतियोंके साथ कामक्रीडा करे, चंचल होवे ॥ २६ ॥

परस्परांशोपगतौ भवेतां महीजशुक्रौ जननेऽङ्गनायाः ॥ स्वयं मृगाक्षी ह्यभिसारिकेव प्रयाति कामाकुलितान्यगेहे ॥ २७ ॥

यदि स्त्रीके जन्मसमयमें मंगलके अंशका शुक्र शुक्रके अंशका मंगल हो तो वह मृगाक्षी अभिसारिकाके समान आपही कामातुर होकर दूसरेके घर जावे ॥ २७ ॥

पापग्रहे सप्तमगे बलोनेऽशुभेन दृष्टे पतिसौख्यहीना ॥ स्यातां मदे भौमकवी सचन्द्रौ पत्याज्ञया सा व्यभिचारिणी स्यात् ॥ २८ ॥

पापग्रह बलहीन सप्तमस्थानमें हों शुभग्रह उसे न देखें तो उस स्त्रीको भर्ताका सुख न होवै। यदि सप्तम स्थानमें मंगल,शुक्र,चन्द्रमा हों तो वह स्त्री भर्ताकी आज्ञासे व्यभिचारिणी(जारिणी)होवे॥२८॥

पापग्रहे सप्तमलग्नगेहे भर्ता दिवं गच्छति सप्तमाब्दे ॥ निशाकरे चाष्टमवैरिभावे तदाष्टमाब्दे निधनं प्रयाति ॥ २९ ॥

जन्ममें जिसके सप्तम एवं लग्नभावमें पापग्रह हो उसका पति विवाहसे सातवें वर्ष स्वर्ग जावे । यदि चंद्रमा भी ६ । ८ में हो तो आठवें वर्षमें पति मरे ॥ २९ ॥

बालविधवायोगः ।

सप्तमेशोऽष्टमे यस्याः सप्तमे निधनाधिपः ॥
पापेक्षणयुतो बाला वैधव्यं लभते ध्रुवम् ॥ ३० ॥

जिस(बाला)नवयौवनाके जन्मलग्नसे सप्तमेश अष्टम,अष्टमेश सप्तम पापदृष्ट हों अथवा पापयुक्त हों तो निश्चय बालवैधव्यपावै३०

सप्तमाष्टपती षष्ठे व्यये वा पापपीडितौ ॥
तदा वैधव्यमाप्नोति नारी नैवात्र संशयः ॥ ३१ ॥

जिस स्त्रीके जन्मलग्नसे सप्तम, अष्टमभावोंके स्वामी पापपीडित होकर छठे वा बारहवें हों वह निस्संदेह वैधव्य पावै ॥ ३१ ॥

मातृसहितव्यभिचारिणीयोगः ।

मन्दाररााशौ ससिते शशाङ्के खलेक्षिते लग्नगते मृगाक्षी ॥ मात्रा सहैव व्यभिचारिणी स्यान्मदे खलांशे व्रणविद्धयोनिः ॥ ३२ ॥

यदि शनि मंगलकी राशि(१०।११।१।८)योंमें शुक्रसहित चंद्रमा पापदृष्ट लग्नमें हो तो वहस्त्री अपनी मातासहित व्यभिचारिणी होवे।

यदि सप्तममें पापांश हो यद्वा उक्त ग्रह पापांशकी सप्तममें हों तो माँ बेटी व्यभिचारिणी हों किन्तु उसकी योनि व्रणसे वेधित रहे ॥ ३२ ॥

ग्रहराशिवशेन प्रत्येकत्रिंशांशफलानि ।
तत्रादौ भौमराशौ ।

यदाङ्गचन्द्रौ कुजभे कुजस्य त्रिंशांशके दुष्टतमैव कन्या ॥ मन्दस्य दासी हि गुरौ तु साध्वी मायाविनी ज्ञस्य कवेः कुवृत्ता ॥ ३३ ॥

अब ग्रह राशियोंके वशसे प्रत्येक त्रिंशांशके फल कहते हैं इनमें प्रथम मंगलकी राशिके त्रिंशांशकोंके फल हैं कि,यदि लग्न, चंद्रमा मंगलकी राशिमें हो तथा मंगलके त्रिंशांशमें हों तो वह कन्यादुष्ट होवै, शनिके त्रिंशांशमें दासी होवे,बृहस्पतिकेमें पतिव्रता, बुधकेमें मायावाली, शुक्रकेमें दुष्टचरितवाली होवे ॥ ३३ ॥

शुक्रराशौ ।

शुक्रभे कुजस्याग्न्यंशे दुष्टा सौरेः पुनर्भवा ॥
गुरोर्गुणमयी विज्ञा कवेः कामातुरा भवेत् ॥ ३४ ॥

शुक्रके राशिमें लग्न चंद्रमा मंगलके त्रिंशांशमें हो तो दुष्टा होवै एवं शनिकेमें (पुनर्भवा) दो बार विवाही जावै, बृहस्पतिकेमें गुणयुक्ता, बुधकेमें पंडिता, शुक्रकेमें कामातुरा होवे ॥ ३४ ॥

बुधराशौ ।

बुधभे भूमिपुत्रस्य कपटी क्लीबवच्छनेः ॥
गुरोः सती विदो विज्ञा कवेः कामातुरा भवेत्॥३५॥

बुधके राशिमें लग्न, चंद्र,मंगलके त्रिंशांशमें हों तो कपटी होवै शनिकेमें नपुंसकके तुल्य होवै, बृहस्पतिकेमें पतिव्रता, बुधकेमें बहुत विषयोंको जाननेवाली,शुक्रकेमें कामसे आतुरा होवे ॥३५॥

चंद्रराशौ ।

कुलीरभे भूमिसुतस्य वेश्या शनेः पतिप्राणविघातकर्त्री ॥ गुरोर्गुणव्रातवती बुधस्य शिल्पक्रियाज्ञा कुलटा भृगोः स्यात् ॥ ३६ ॥

कर्कराशिके लग्न, चंद्रमा, मंगलके त्रिशांशकमें हो तो वह स्त्री (वेश्या)पतुरिया होवे. तथा शनिकेमें भर्त्ताके प्राणघात करनेवाली, बृहस्पतिकेमें गुणसमूहयुक्ता, बुधकेमें(शिल्प)कारीगरी जाननेवाली; शुक्रके त्रिशांशकमें (कुलटा) व्यभिचार करनेवाली होवै ॥३६॥

सूर्यराशौ ।

सिंहे नराकारधरा कुजस्य वाराङ्गना भानुसुतस्य नारी ॥ गुरोरिलाधीशवधूर्बुधस्य दुष्टा कवेरङ्गजगामिनी स्यात् ॥ ३७ ॥

सिंहराशिके लग्न, चंद्रमा, मंगलके त्रिशांशकमें हों तो पुरुषके आकार धारण करे,अथवा पुरुष समान पराक्रमी,चतुरा होवै,शनिकेमें (वाराङ्गना) वेश्या होवै, बृहस्पतिकेमें पृथ्वीपतिकी वधू होवै, बुधकेमें दुष्टा, शुक्रकेमें अपने पुत्रसे गमन करनेवाली होवै ॥३७॥

गुरुराशौ ।

गुणैर्विचित्रा गुरुभे कुजस्य मन्दस्य मन्दा गुणतत्त्वविज्ञा ॥ जीवस्य विज्ञा शशिनन्दनस्य शुक्रस्य रम्यापि भवेदरम्या ॥ ३८ ॥

बृहस्पतिके राशिमें लग्न, चंद्रमा, मंगलके त्रिशांशकमें हों तो अनेकगुणोंसे युक्त होवै, शनिकेमें मूर्खा, बृहस्पतिकेमें गुणोंके तत्त्वको जाननेवाली,बुधकेमें पंडिता,शुक्रकेमें सुरूपाभी कुरूपासी प्रतीत हो ॥ ३८ ॥

शनिराशौ ।

मन्दालये भूमिसुतस्य दासी शनेरसाध्वी भवतीति साध्वी ॥ गुरोर्निशानाथसुतस्य दुष्टा शुक्रस्य वंध्या क्रमतः प्रदिष्टा ॥ ३९ ॥

शनिके राशिमें लग्न, चंद्रमा, मंगलके त्रिंशांशकमें हों तो दासी होवै, शनिकेमें पतिव्रता न होवै, बृहस्पतिकेमें पतिव्रता, बुधकेमें दुष्टा, शुक्रकेमें (वंध्या) अपुत्रा होवै, इतने क्रमसे त्रिंशांशफल हैं ३९॥

अन्ययोगाः ।

मंदे मध्यबले कवीन्दुशशिजैर्वीर्य्यच्युतैः प्रायशः शेषैर्वीर्य्यसमन्वितैः पुरुषवन्नारी यदोजे तनुः ॥ जीवांगाररवीन्दुजैर्बलयुतैश्चेदङ्गराशौ समे गीतातत्त्वविचारसारचतुरा वेदांतवादिन्यपि ॥ ४० ॥

जिसके जन्ममें शनि मध्यबली, शुक्र, चंद्रमा, बुध बलहीन, और विशेषतासे अन्यग्रह बलवान् हों तथा लग्न विषमराशिका हो वह स्त्री पुरुषके समान होवे । यदि बृहस्पति, मंगल, सूर्य, बुध बलवान् हों तथा लग्नराशि समसंज्ञक हो तो गीताका तत्त्व (ज्ञान) के विचारसे सार जाननेमें चतुरा और वेदांतवादिनी भी होवै॥४०॥

अष्टमभावविचारः ।

यदाष्टमे देवगुरौ भृगौ वा विनष्टगर्भा मृतपुत्रका वा ॥ कुजेऽष्टमे सा कुलटा मृगाक्षी चन्द्रेऽष्टमे स्वामिसुखेन हीना ॥ ४१ ॥

यदि जन्ममें बृहस्पति अष्टम हो अथवा शुक्र अष्टम हो तो उसके गर्भ नष्ट होवैं, अथवा पुत्र मरें, यदि मंगल अष्टम हो तो वह मृगाक्षी (कुलटा) व्यभिचारिणी होवै, यदि चंद्रमा अष्टम हो तो पतिके सुखसे हीन रहै ॥ ४१ ॥

मन्देऽष्टमे रोगस्तस्य भार्या दिनाधिपे सा परितापतप्ता ॥ अनंगरंगा परकान्तसंगा मृतावगौ सा कुलधर्मभंगा ॥ ४२ ॥

जिस स्त्रीका शनि अष्टम हो उसका पति रोगयुक्त सर्वदा रहै, सूर्य अष्टम हो तो सर्व प्रकार संतापोंसे संतप्त रहै,यदि राहु अष्टम हो तो कामदेवके (रंग)क्रीडासे परपुरुषोंका संग करै तथा अपने कुलके धर्मको खोवे ॥ ४२ ॥

पुत्रभावविचारः ।

पंचमे शुभसंदृष्टे पंचमाधिपतावपि ॥
केन्द्रकोणे तदा नारी बहुपुत्रवती भवेत् ॥ ४३ ॥

अब स्त्रियोंके संतान भावका विचार कहते है–कि,यदि जन्मलग्नसे पंचमभावमें शुभग्रहोंकी दृष्टि हो और पंचमेश केन्द्र,कोण १।४।७।१०।५।९ में हो तो वह भी बहुत पुत्रोंवाली हो ॥ ४३ ॥

पंचपुत्रवती जीवे सबले च सिते विधौ ॥
सुतासुखवती पापे नारी संतानवर्जिता ॥ ४४ ॥

यदि बृहस्पति बलवान् होकर पंचममें हो तो पांच पुत्रवाली होवे, शुक्र चंद्रमा सबल पंचममें हों तो कन्याओंका सुख होवे,पापग्रह पंचम हो तो संतानके सुखसे हीन रहै. जिन ग्रहोंका जो फल पंचममें कहा है वह उसकी दृष्टिसेभी जानना ॥ ४४ ॥

विषयोगाः ।

भद्रासार्पानलवरुणभे भानुमन्दारवारे यस्या जन्म प्रभवति तदा सा विषाख्या कुमारी ॥
पापे लग्ने शुभखगयुतः पापखेटावरिस्थौ स्यातां यस्या जननसमये सा कुमारी विषाख्या ॥ ४५ ॥

अब स्त्रियोंके विषयोग कहतेहैं–कि,जिसके जन्मसमयमें भद्रा-संज्ञक २।७।१२ तिथि, आश्लेषा, कृत्तिका, शततारा नक्षत्र, रवि, शनि, मंगलवार हों वह विषाख्या होती है. इस योगके तीन भेद हैं कि, द्वितीया तिथि, आश्लेषा नक्षत्र, रविवार (१)सप्तमी तिथि, कृत्तिका नक्षत्र, शनिवार (२) द्वादशी तिथि, शततारा नक्षत्र, मंगलवार (३) और पापग्रहराशि लग्नमें पापग्रहयुक्त तथा दो पापग्रह छठेभी हों तो वह कन्या विषाख्या होती है ॥ ४५ ॥

आदित्यसूनोर्दिवसे द्वितीया भुजंगभे भौमदिनेम्बुजर्क्षे ॥ चेत्सप्तमी वाथ रवौ विशाखा हरेस्तिथौ वापि च सा विषाख्या ॥ ४६ ॥

इनके भेद कहते हैं कि, शनिवारको द्वितीया तिथि, आश्लेषा नक्षत्र (१), मंगलवारको शततारा नक्षत्र, सप्तमी तिथि (२), रविवारको विशाखा नक्षत्र, द्वादशी तिथि (३),में जिस कन्याका जन्म हो वह विषाख्या होती है ॥ ४६ ॥

धर्मगेहगते भौमे लग्नगे रविनन्दने ॥
पञ्चमे दिवसाधीशे सा विषाख्या कुमारिका ॥४७॥

यदि लग्नसे नवम मंगल,लग्नमें सूर्यपुत्र(शनि), पंचममें सूर्य, जिस कन्याका होवे वह विषाख्या (विषकन्या)होती है ॥ ४७ ॥

विषाख्यालक्षणम् ।

विषाख्या शोकसन्तप्ता दुर्भगा मृतपुत्रिका ॥
वस्त्राभरणहीना च पुराणैरुदिता बुधैः ॥ ४८ ॥

जो कन्या उक्त प्रकारोंसे विषाख्या हो वह शोकसे संतप्त (दुर्भगा) भाग्यहीना होवे, संतान उसकी मरती रहैं, वस्त्र, भूषणोंसे हीन रहे यह प्राचीन पंडितोंने कहा है, ऐसेही विषघटिकाके जन्मवाली भी होती है ॥ ४८ ॥

विषयोगभङ्गः ।

सप्तमे सप्तमाधीशः शुभो वा लग्नचन्द्रयोः ॥
विषयोगमलं हन्ति रंहो हरिरिभं यथा ॥ ४९ ॥

यदि जन्मलग्नसे सप्तमेश सप्तममें हो अथवा चंद्रमासे सप्तमेश सप्तम हो तथा लग्नचंद्रसे शुभग्रह सप्तम हो वा उसे देखे तो निश्चय विषयोगके फलको नाश करता है जैसे सिंह बलात्कारसे हाथीको मारता है ॥ ४९ ॥

इत्थं विवाहकालेऽपि ज्ञातव्यं लग्नचन्द्रयोः ॥
तदधीन यतः स्त्रीणां शुभाशुभफलं भवेत् ॥ ५० ॥

विवाहसमयमें भी लग्न और चंद्रसे ऐसाही विचार करना,क्योंकि विवाहमुहूर्तके अधीन स्त्रियोंका आजन्म शुभाशुभ है ॥ ५० ॥

वैधव्यभङ्गोपायः ।

वैधव्ययोगयुक्तायाः कन्यायाः शान्तिपूर्वकम् ॥
वेदोक्तविधिनोद्वाहं कारयेच्चिरजीविना ॥ ५१ ॥

इति भावकुतूहले स्त्रीजातकाध्यायो नवमः ॥ ९ ॥

जिस कन्याके वैधव्ययोग हो उसको प्रथम प्रतिमाविवाह, सावित्रीव्रत, पिप्पलव्रत इत्यादि कल्पोक्तशांति करके वेदोक्त विधिसे उसका विवाह दीर्घायुयोगवालेके साथ करना ॥ ५१ ॥

इति भावकुतूहले माहीधरीभाषाटीकायां स्त्रीजातकाध्यायः ॥ ९ ॥

दशमोऽध्यायः ।

कन्यायाः शुभाशुभांगलक्षणानि ।

शुभलक्षणसम्पन्ना भवेदिह यदाङ्गना ॥
तत्करग्रहणादेव वर्द्धते गृहिणां सुखम् ॥ १ ॥

यदि स्त्री शुभलक्षणोंसे संपन्न होवे तो संसारमें उसे विवाहविधि करके ग्रहण करनेसे गृहस्थियोंको सुख बढता है ॥ १ ॥

शुभाशुभं पुरा गीतं वेदव्यासेन धीमता ॥
प्रकाश्यते तदेवात्र नारीणामङ्गलक्षणम् ॥ २ ॥

स्त्रियोंके लक्षणोंसे शुभ तथा अशुभ प्रथम बुद्धिमान् व्यासदेवजीने कहा है वही यहां भी स्त्रियोंके अंगलक्षण प्रकाश किये जाते हैं॥२॥

पादतललक्षणम् ।

युवतिपादतलं किल कोमलं सममतीव जपाकुसुमप्रभम् ॥ दिशति मांसलमुष्णमिलापतेरतिहितं बहुधर्मविवर्जितम् ॥ ३ ॥

स्त्रीके पैरके तलुए यदि कोमल, (सम) सरल तथा (जपा) ओंड पुष्पके समान रक्तवर्ण, स्थूल, उष्ण और बहुत स्वेदसे रहित होवें तो राजाके लिये हित करते हैं ॥ ३ ॥

कमलकम्बुरथध्वजचक्रवत्पृथुलमीनविमानवितानवत् ॥ भवति लक्ष्म पदे यदि योषितां क्षितिभृतां वनिता विभुतावृता ॥ ४ ॥

जिसके पैरमें कमल, कंबु (शंख), रथ, ध्वजा, चक्रके समान तथा स्थूल मछली, विमान, वितान (चांदनी) के आकार चिह्न हों तो उस स्त्रीका पति राजा होवे ऐश्वर्यसे युक्त रहे ॥ ४ ॥

शूर्पाकारं विवर्णं च विशुष्कं परुषं तथा ॥
रूक्षं पादतलं तन्व्या दौर्भाग्यपरिसूचकम् ॥ ५ ॥

जिसके पैरके तलुए शूर्पके आकार, विवर्ण, शुष्क (खरदारा) करडा, रूखा हो तो यह लक्षण तन्वंगीके दौर्भाग्यसूचक हैं॥५॥

यस्याः समुन्नतांगुष्ठो वर्तुलोऽतुलसौख्यदः ॥
शूर्पाकारा नखा यस्याः सा भवेद्दुःखभागिनी ॥६॥

जिसके पैरका अँगूठा ऊँचा, गोल हो तो अति सौख्य देता है, जिसके नाखून शूर्पके आकार हों वह दुःख भोगनेवाली होतीहै॥६॥

गमनलक्षणम् ।

संचलन्त्यां धराधूलिधारा यदा राजमार्गेऽवलायां बलादुच्छलेत ॥ पांसुला सा कुलानां त्रयं सत्वरं नाशयित्वा खलैर्मोदते सर्वदा ॥ ७ ॥

जिस स्त्रीके सडकपर चलते समय पृथ्वीमें (धूलि) गर्दकी धारा उडे वह अपतिव्रता (जारिणी) तीन कुल (माता, पिता, भर्ता) को नाश करके सर्वदा दुष्टोंके साथ प्रसन्न रहे ॥ ७ ॥

श्लिष्टाङ्गुलीलक्षणम् ।

यस्या अन्योन्यमारूढाः पादांगुल्यो भवन्ति चेत् ॥ सा पतीन्बहुधा हत्वा वारवामा भवेदिह ॥ ८ ॥

जिसके पैरकी एक अंगुली दूसरी अंगुलीके ऊपर चढी रहे वह बहुत पतियोंको मारके वारांगना (वेश्या) होती है ॥ ८ ॥

कनिष्ठा न स्पृशेद्भूमिं चलन्त्या योषितस्तदा ॥ सा द्रुतं स्वपतिं हत्वा जारेण रमते पुनः ॥ ९ ॥

जिस स्त्रीके चलते समयमें (कनिष्ठा) छोटी अंगुली पैरकी पृथ्वीको स्पर्श न करे वह शीघ्र ही अपने पतिको मारकर जारसे रमित रहे ॥ ९ ॥

अनामिका च मध्या च यदि भूमिं न संस्पृशेत् ॥ आद्या पतिद्वयं हन्ति चापरा तु पतित्रयम् ॥ १० ॥

जिस स्त्रीके पैरकी अनामिका एवं मध्यमा पृथ्वीको स्पर्श न करे इनमेंसे अनामिका ऊंची रहे तो दो पतियोको, मध्यमा ऊंची रहे तो तीन पतियोंको मारे ॥ १० ॥

अनामिका च मध्या च यदि हीना प्रजायते ॥
तदा सा पतिहीना स्यादित्याह भगवान्स्वयम्॥११॥

जिसके पैरकी मध्यमा तथा अनामिका भी छोटी हो तो वह स्त्री पतिहीना होवै- यह भगवान् वेदव्यासने आपही कहा है ॥ ११ ॥

नखलक्षणम् ।

यदि पार्ष्णनखाः स्निग्धा वर्तुलाश्च समुन्नताः ॥
ताम्रवर्णा मृगाक्षीणां महाभोगप्रदायकाः ॥ १२ ॥

यदि स्त्रीके पैरोंके नाखून (स्निग्ध) चिकने, (वर्तुल) गोलाकार, ऊंचे और तांबेके रंगके समान हों तो मृगाक्षियोंको उत्तम भोग देते हैं ॥ १२ ॥

पदतललक्षणम् ।

यदि भवेदमलं किल कोमलं कमलपृष्ठवदेव मृगीदृशाम् ॥ अरुणकुंकुमविद्रुमसन्निभं बहुगुणं पदपृष्ठमिति ध्रुवम् ॥ १३ ॥

यदि मृगनयनी स्त्रियोंके पैरोंकी पीठ निर्मल, कोमल, कमलदलके पीठके समान (अरुण) गुलाबीरंग यद्वा कुंकुम, वा (विद्रुम) मूँगाके समान हों तो वे बहुत गुणवती होवैं यह निश्चय है ॥१३॥

अंघ्रिमध्ये दरिद्रा स्यान्नम्रत्वेन सदाङ्गना ॥
शिरालेनाध्वगा नारी दासी लोमाधिकेन सा ॥१४॥

पैरोंकी अंगुलियोंके बीचमें(नम्र)गहरा हो तो वह स्त्री सर्वदा दरिद्रा रहै, अंगुलियोंपर शिरा (नस) बहुत हों तो मार्ग चलनेवाली होवै और बहुत रोम अंगुलियोंमें हों तो दासी होवे ॥ १४ ॥

गुल्फलक्षणम् ।

निर्मांसेन सदा नारी दुर्भगा खलु जायते ॥
गुल्फौ गूढौ शुभौ स्यातामशिरालौ च वर्तुलौ १५॥

जिसके (गुल्फ) घुटनोंके नीचे (निर्मांस) माडे हों तो वह स्त्री दुर्भगा होवे, यदि उक्त स्थान (गूढ) स्थूल, पुष्ट हों (अशिरा) नसोंसे रहित हों एवं वर्तुल हों तो सुभगा होवे ॥ १५ ॥

अगूढौ शिथिलौ यस्यास्तस्या दौर्भाग्यसूचकौ ॥
गुल्फलक्षणमाख्यातं पार्ष्णिलक्षणमुच्यते ॥ १६ ॥

जिस स्त्रीके गुल्फस्थान शिथिल एवं (अगूढ) ढीले हों वह दुर्भगा होवे. इतने गुल्फलक्षण कहे गये, अब (पार्ष्णि) ऍडीके लक्षण कहे जाते हैं ॥ १६ ॥

पार्ष्णिलक्षणम् ।

समानपार्ष्णिः सुभगा पृथुपार्ष्णिश्च दुर्भगा ॥
कुलटा तुङ्गपार्ष्णिश्च दीर्घपार्ष्णिर्गदाकुला ॥१७॥

जिसके (पार्ष्णि) ऍडी समान हों तो वह सौभाग्यवती होवे, पार्ष्णि मोटे हों तो दुर्भगा होवे,जो पार्ष्णि ऊँचे हों तो व्यभिचारिणी और लंबी पार्ष्णिसे नित्य रोगसे आकुल रहे ॥ १७ ॥

जंघालक्षणम् ।

जंघे रंभोपमे यस्या रोमहीने च वर्तुले ॥
मांसले च समे स्निग्धे राज्ञी सा भवति ध्रुवम्॥१८॥

जिस स्त्रीके जंघा कदलीस्तंभके समान हों तथा रोमरहित(वर्तुल) गोलाकार सरल,मोटी,समान और चिकनी हो तो राजरानीहोवे१८

रोमकूपलक्षणम् ।

एकरोमा प्रिया राज्ञो द्विरोमा सौख्यभागिनी ॥
त्रिरोमा विधवा ज्ञेया रोमकूपेषु कामिनी ॥ १९ ॥

जिसके जंघाओंके (रोमकूप) रोमोंके जडपर एक एक रोम हों तो वह राजाकी प्रिया,ऐश्वर्यवती होवे, दो दो हों तो सुख भोगनेवाली और तीनसे विधवा जाननी ॥ १९ ॥

जानुलक्षणम् ।

भवति जानुयुगं यदि मांसलं तदतिवृत्तमतीव शुभप्रदम् ॥ भुवनभर्तुरतो विपरीतमादिभिरिदं विपरीतमुदीरितम् ॥ २० ॥

जिस स्त्रीके दोनों जानु मोटे,अति सुंदर गोलाकार हों वह अति शुभफल करते हैं । वह राजरानीके तुल्य होती है, इससे विपरीत लक्षण हों तो फल भी विपरीत कहा है ॥ २० ॥

कटिलक्षणम् ।

समुन्नतनितंबाढ्या यस्याः सिद्धांगुला कटिः ॥
सा राजपट्टमहिषी नानालीभिः समावृता ॥ २१ ॥

जिसकी कमर सिद्ध (२४) अंगुल चौडी हो तथा (नितंब) चूतड ऊंचे हों तो वह राजाकी पटरानी होवे और अनेक (सखी) दासियोंसे युक्त रहै ॥ २१ ॥

निर्मांसा विनता दीर्घा चिपिटा शकटाकृतिः ॥
लघ्वी रोमाकुला नार्य्या वैधव्यं दिशते कटिः॥२२॥

जो कमर मांसरहित, माडी, गहरी (चिपिट) बैठी हुई गाडीके आकारकी,छोटी और रोमोंसे भरी हुई हो वह वैधव्य देतीहै॥२२॥

नितम्बलक्षणम् ।

सीमन्तिनीनां यदि चारुबिंबो भवेन्नितंबो बहुभोगदः स्यात् ॥ समुन्नतो मांसल एव यासां पृथुः सदा कामसुखाय तासाम् ॥ २३ ॥

जिन भाग्यवती स्त्रियोंके चूतड रमणीय बिंबवत् हों तो बहुत प्रकार भोग देते हैं. यदि ऊंचें, मोटे, बडे भी हों तो सर्वदा कामदेवको सुख देते हैं ॥ २३ ॥

योनिलक्षणम् ।

यदा गजस्कन्धसमानरूपो भगोऽथवा कच्छपपृष्ठवेषः ॥ इलापतेः कामविनोददायी वा सोन्नतः सोऽपि सुताप्रसोता ॥ २४ ॥

यदि स्त्रीका (भग) योनि हाथीके गर्दनके सदृश यद्वा कछुआके पीठके सदृश हो तो वह राजाको कामक्रीडामें प्रसन्न करनेवाली अर्थात् राजरानी होवै,यदि उक्त भग ऊंचे आकारका हो तो कन्या जननेवाली होती है ॥ २४ ॥

अश्वत्थदलरूपो वा भगो गूढमणिः शुभः ॥
चुल्लिकोदररूपो यः कुरङ्गखुरसन्निभः ॥ २५ ॥
रोमाकुलो दृष्टनासो विकृतास्यो महाधमः ॥
कामिनां न विनोदार्हो भगो भवति सर्वथा ॥ २६ ॥

अथवा भग अश्वत्थ (पीपल)के पत्रके समान अथवा गुप्तमणिके (टोटनी) वाला हो तो शुभ होता है, जो भग चुल्हीके पेटके आकारका व मृगखुरसा, रोमव्याप्त, ऊँची टोटनीवाला, विकृतमुख हो वह अधम होता है, यह भग कामियोंके विनोदका हेतु सर्वदा नहीं होता है ॥ २५ ॥ २६ ॥

कामिन्याः कन्धुकावर्तो भगो दौर्भाग्यवर्द्धकः ॥
स गर्भधारणाशक्तो वक्राकारोऽपि तादृशः ॥ २७ ॥

कामिनीका भग यदि दोनों ओर ऊंचा बीचमें गहरा हो तो दौर्भाग्य बढाता है, गर्भधारणमें असमर्थ होता है, यदि (वक्राकार) मुडा हुआ हो तो भी वैसा ही फल करता है ॥ २७ ॥

वेतसवंशदलप्रतिभासः कर्पररूपवदेव भगो वा ॥

लंवगलो विकटो गजलोमा नैव शुभश्चिपिटोऽपि निरुक्तः ॥ २८ ॥

जो भग वेंतके अथवा बांसके पत्रके आकार हो अथवा (कर्पर) बीचमें गहरा चारों ओर ऊंचा हो तथा गलेके समान एक ओर माडा दूसरी ओर मोटा लंबा हो, (विकट) ऊंचा नीचा हो और हाथीकेसे रोम जिसपर हों वह शुभ नहीं होता, ऐसे ही (चिपिट) चपटा भग भी अशुभ कहा है ॥ २८ ॥

मृदुतरं मृदुरोमकुलाकुलं यदि तदा जघनं भगभाजनम् ॥ उत समुन्नतमायतमादरात्पतिकलाकलितं गदितं बुधैः ॥ २९ ॥

यदि भग कोमलतर, कोमल वालोंसे भरा हो तो वह ऐश्वर्यका (पात्र) भोगनेवाला होता है और ऊंचा, वडा, कांतिमान् (कलाकलित) जिसके दर्शन वा स्पर्शसे मनकी उमंग प्रसन्नतासे उठे यह भी वैसा ही है ॥ २९ ॥

तदेव दक्षिणावर्तं मांसलं शुभसूचकम् ॥
वामावर्तं च नारीणां खंडितं खंडिताश्रयम् ॥ ३० ॥

वही भग दाहिनी ओर घुमा हो यद्वा भौंरा मोटा हो तो शुभ फल करता है. यदि बाँयीं ओर घुमा हो यद्वा भौंरा तथा (खंडित) किसी जगे भंग जैसा हो तो व्यभिचारिणी करता है ॥ ३० ॥

निर्मांसं कुटिलाकारं रूक्षं वैधव्यसूचकम् ॥
अतिस्थूलं महादीर्घं सद्यो दौर्भाग्यकारकम् ॥३१॥

यदि भग मांसरहित एवं कुटिलाकार, मोडवाला हो तो वैधव्य करता है. जो अतिमोटा, व वडा लंबा हो तो अवश्य (दौर्भाग्य) भाग्यहीन करता है ॥ ३१ ॥

मृदुला विपुला वस्तिः शोभना च समुन्नता ॥
अशुभा रेखयाक्रान्ता शिराला लोमसंकुला ॥३२॥

(बस्ति) भग कोमल तथा बडा हो तो शुभ होता है,ऊँची भी योनि शुभफल देती है. जिसमें रेखा हों एवं नसें हों तथा रोमोंसे भरी हो तो अशुभफल देती है ॥ ३२ ॥

नाभिलक्षणम् ।

गभीरा दक्षिणावर्ता नाभी भोगविवर्धिनी ॥
व्यक्तग्रन्थिः समुत्ताना वामावर्त्ता न शोभना॥३३॥

स्त्रीकी नाभि यदि गहरी एवं दाहिनी ओर(मोड) घुमाववाली हो तो भोग बढाती है. जिसकी (ग्रंथि) गांठ प्रकट हो नाभी खुली हो यद्वा वामावर्त हो तो शुभ नहीं होती ॥ ३३ ॥

उदरलक्षणम् ।

पृथूदरी यदा नारी सूते पुत्रान् वहूनपि ॥
भकोदरी नरेशानं वलिनं चायतोदरी ॥ ३४ ॥

जिस स्त्रीका पेट वडा हो वह वहुत पुत्र जनती है, जिसका पेट मेंढककासा हो उसका पुत्र राजा होवे, जिसका पेट वडे फैलावका हो उसका पुत्र वलवान् होता है ॥ ३४ ॥

उन्नतेनोदरेणैव वन्ध्या नारी प्रजायते ॥
जठरेण कठोरेण सा भवेद्विदुकाङ्गना ॥ ३५ ॥

जिस स्त्रीका पेट ऊंचा हो वह वांझ होती है. जिसका उदर (कठोर) कडाहो वह किसी नीचजातिविशेपकी पत्नी होवै॥३५॥

आवर्तेन युतेनैव दासिका भवति ध्रुवम् ॥
कोमलैर्मांससंयुक्तैः समानैः पार्श्वकैः शुभम् ॥३६॥

जिसके पेटमें (आवर्त) भौंरा हो वह दासी होवे यद्व

निश्चय है और जिसकी कोमल मांससे संयुक्त दोनहूँ कूखी हों तो शुभफल होता है ॥ ३६ ॥

विशिरेण मृदुत्वचा सपुत्रा जठरेणातिकृशेन कामिनी सा ॥ बहुधातुलभोगलालिता सानुदिनं मोदकसत्फलाशिनी स्यात् ॥ ३७ ॥

जिसका पेट नसोंसे रहित, कोमल त्वचाका तथा कृश हो तो वह कामिनी पुत्रवती होती है और बहुत प्रकारके अनुपम भोगोंसे उसका प्रेम होता है, दिनदिन प्रसन्नतापूर्वक मिष्टान्न उत्तम मेवे खानेवाली होती है ॥ ३७ ॥

घटाकारं यस्या भवति च मृदंगेन सदृशं यवाकारं दैवादुदरमहितं पुत्र-रहितम् ॥ अभद्रं नो भद्रं तदपि यदि कूष्माण्डसदृशं निरुक्तं तत्त्वज्ञैः कठिनमुरुशालेन च समम् ॥३८॥

जिस स्त्रीका पेट घडा या मृदंगके आकार हो, अथवा दैवयोगसे (यव) जौके दानेके आकारका हो तो वह पुत्ररहित रहै, यदि (कूष्मांड) कुँम्हडेके आकारका पेट हो तो सर्वदा अमंगल देखे कभी मंगल न हो तथा कठोर (उरुशाल) के समान हो तो भी तत्त्व जाननेवालोंने यही फल कहा है ॥ ३८ ॥

कृशतरा त्रिवली सरलावली ललितनर्मविनोद-विवर्द्धिनी ॥ भवति सा कपिला कुटिलाकुला शुभकरी विरला महदाकृतिः ॥ ३९ ॥

जिसके (त्रिवली) हृदयसे भगपर्यंत रोमावली बारीक एवं सीधी हो तो वह स्त्री रहस्यके प्रेममें हँसीकी बोलचाल अतिरमणीय करे प्रेम बढावे, यदि वह त्रिवली (कपिलवर्ण) भूरेरंगकी, मुडी हुई,

बहुत रोमोंकी हो तो कुटिलस्वभाववाली और गुस्सेवाली कडे वचन कहनेवाली होवै, यदि विरलरोम तथा बडी आकृतिकी त्रिवली हो तो शुभफल देती है ॥ ३९ ॥

उरोलक्षणम् ।

लोमहीनहृदयं यदा भवेन्निम्नताविरहितं समायतम् ॥ भोगमेत्य सकलं वराङ्गना सा पुनः प्रियवियोगमालभेत् ॥ ४० ॥

जिस स्त्रीकी छाती रोमरहित, (समान) ऊंची नीची न हो ऊपर नीचेका (माप) परिमाण तूल अर्ज बराबर हो तो वह श्रेष्ठ स्त्री समस्त भोगसुख पावै परंतु पीछे (प्रिय) प्यारेका वियोग भी पावै ॥ ४० ॥

उद्भिन्नरोमहृदया स्वपतिं निहन्ति
विस्ताररूपहृदया व्यभिचारिणी स्यात् ॥
अष्टादशांगुलमितं हृदयं सुखाय
चेद्रोमशं च विषमं न सुखाय किंचित् ॥ ४१ ॥

जिस स्त्रीके हृदयके रोम फटेमुखके हों अथवा अकस्मात् स्वयं उखडजावैं वह अपने पतिको मारतीहै, जिसका हृदय जितना लंब उतनाही चौडाभी हो तो व्यभिचारिणी होती है. यदि हृदय १८ अंगुल हो तो सुख होताहै, यदि रोमोंसे भराहुआ तथा कहीं ऊंचा कहीं नीचाभी हो तो उसको थोडाभी सुख नहीं मिलता ॥ ४१ ॥

उन्नतं पीवरं शस्तं हृदयं वरयोषिताम् ॥
अपीवरमिदं नीचं पृथुदौर्भाग्यसूचकम् ॥ ४२ ॥

उत्तम स्त्रियोंके हृदय ऊंचे, स्थूल शुभ होते हैं गहरे और चिपिट हों तो दौर्भाग्या (भाग्यहीन) करता है ॥ ४२ ॥

स्तनलक्षणम् ।

भवत एव समौ सुदृढाविमौ यदि घनौ सुदृशस्तु पयोधरौ ॥ निजपतेरनिशं परिवर्तुलौ कुसुमबाणविनोदविवर्धकौ ॥ ४३ ॥

यदि स्त्रीके दोनों स्तन समान एवं अच्छे (दृढ) कडे, बहुत खूबसूरत, सुहावने हों तथा गोल हों तो अपने पतिको नित्य कामदेवके बाणोंके विनोद (हर्ष) बढावनेवाले होते हैं ॥ ४३ ॥

सुभ्रुवो विरलौ सूक्ष्मौ स्थूलाग्रावहिताविमौ ॥
पयोधरौ तदा नार्य्याः प्रभवेद्दक्षिणोन्नतः ॥ ४४ ॥
पुत्रदोप्यथ कन्यादो यदा वामोन्नतो भवेत् ॥
सान्तरालौ च विस्तारौ पीवरास्यौ न शोभनौ॥४५॥

सुन्दर है भ्रुकुटि जिसकी ऐसी स्त्रीके स्तन यदि मिलेहुए न हों माडे हों स्थूलाग्र हों तो अशुभ हों और(दक्षिणोन्नत) दाहिने ओर झुके हों यद्वा दाहिना स्तन कुछ बडा हो तो पुत्र देनेवाली होती है । यदि (वामोन्नत) वाम ओर झुके यद्वा वाम स्तन कुछ बडा हो तो कन्या देते हैं. जिन स्तनोंके बीचमें कुछ (अंतराल) फासला हो तथा बडे हों उनके (मुख) चूंची मोटी हों तो शुभ नहीं होते ॥ ४४ ॥ ४५ ॥

मूले स्थूलौ क्रमकृशावग्रे तीक्ष्णौ पयोधरौ ॥
सुखदौ पूर्वकाले तु पश्चादत्यन्तदुःखदौ ॥ ४६ ॥

स्तन जडसे मोटे फिर क्रमसे माडे होते होते अग्रभाग तीक्ष्ण हों तो प्रथम अवस्थामें सुख पीछे अत्यंत दुःख देते हैं ॥ ४६ ॥

स्कन्धलक्षणम् ।

पुत्रिणी विनतस्कंधा ह्रस्वस्कंधा सुखप्रदा ॥
पुष्टस्कंधा तु कामान्धारतिभोगसुखावहा ॥ ४७ ॥

जिसके कंधे नम्र हों वह पुत्रवती और छोटे कंधोंसे सुखी होती है, यदि कंधे पुष्ट हों तो वह स्त्री कामदेवसे अंधीसी हो रमणसुखसे युक्त रहती है ॥ ४७ ॥

मदान्धा कुटिलस्कन्धा स्थूलस्कंधा च तादृशी ॥
यदि लोमाकुलस्कंधा वैधव्यं द्रुतमावहेत् ॥ ४८ ॥

जिसके (स्कंध) कन्धे टेढे हों वह मदसे अन्धी रहती है, मोटे कन्धोंवाली भी ऐसे ही मदांधा रहती है, यदि कन्धोंमें रोम बहुत हों तो शीघ्र विधवा होती है ॥ ४८ ॥

बाहुमूललक्षणम् ।

स्रस्तांसा संहतांसा च धन्या भवति कामिनी ॥
तुङ्गांसा विधवा ज्ञेया विमांसांसा तथैव च ॥ ४९ ॥

स्कन्धोंके किनारे बाहुके जड (अंस) चौडे हों यद्वा कडे हों तो वह कामिनी धन्या (भाग्यवती) होवै, जिसके उक्त भाग ऊंचे हों अथवा (मांसरहित) माडे हों तो विधवा जाननी ॥ ४९ ॥

कराङ्गुष्ठलक्षणम् ।

अंगुष्ठांगुलिकं युग्मं यत्पद्मकलिकासमम् ॥
बहुभोगाय नारीणां निर्मितं विधिना पुरा ॥ ५० ॥

. अंगूठा तथा दो अँगुली स्त्रियोंकी यदि कमलकी कलीके समान हों तो बहुभोग देती हैं. यह स्त्रियोंके भोगनिमित्त पहिले ब्रह्माने बनाया ऐसा जानना ॥ ५० ॥

पाणितललक्षणम् ।

करतलं भुजयोर्यदि कोमलं विमलपद्मनिभं च समुन्नतम् ॥ निजपतेः कुसुमायुधवर्द्धकं निगदितं मुनिना विधिनोदितम् ॥ ५१ ॥

भुजाओंसे (करतल) हाथोंकी हथेली यदि कोमल निर्मल कमलके समान, तथा ऊंची हों तो अपने पतिके कामदेवको बढानेवाली होती है यह ब्रह्माके वचन मुनियोंने कहे हैं ॥ ५१ ॥

स्वच्छरेखाकुलं भद्रं नो भद्रं हीनरेखया ॥
अभद्रं रेखया हीनं वैधव्यं चातिरेखया ॥ ५२ ॥

यदि हाथकी हथेली निर्मल रेखाओंसे भरी हों तो मङ्गल देनेवाली होतीहै, यदि रेखा छोटी हों तो अमंगली है, यदि रेखा न हों तो अमंगली होवे और अतिरेखा हों तो वैधव्य पावै ॥ ५२ ॥

करपृष्ठलक्षणम् ।

शिरालं कुरुते निःस्वं नारीकरतलं यदि ॥
समुन्नतं च विशिरं करपृष्ठं सुशोभनम् ॥ ५३ ॥

हाथ शिराल (नसियोंसे भरा) हो तो स्त्री निर्धन होवै और हाथका पिछवाडा ऊंचा तथा नसियोंसे रहित हो तो शुभ होता है५३

रोमाकुलं गभीरं च निर्मांसं पतिजीवहृत ॥
सुभ्रुवः करपृष्ठस्य लक्षणं गदितं बुधैः ॥ ५४ ॥

यदि हाथकी पीठ रोमोंसे भरी,गहरी और मांसरहित हो तो पतिके प्राणोंको हरे, इतने स्त्रियोंके करपृष्ठके लक्षण पंडितोंने कहे हैं॥५४॥

कररेखालक्षणम् ।

गभीरा रक्ताभा भवति मृदुला वा स्फुटतरा
करे वामे रेखा जनयति मृगाक्ष्या बहु शुभम् ॥
यदा वृत्ताकारा पतिरतिसुखं विंदति परं
विसारं सौभाग्यं बलमपि सुतं स्वस्तिकमपि॥५५॥

यदि स्त्रीके बाँये हाथमें गहरी, लाल रंगकी, कोमल,देखनेमें स्पष्टतर रेखा हों तो अतिशुभ होती हैं और गोलाकार हों तो

पतिकी रतिका परम सुख पाती है सौभाग्य बढाती है बलवती होती है, यदि हाथमें स्वस्तिक भी हो तो पुत्रवती होवे ॥ ५५ ॥

करतले यदि पद्ममिलापतेः प्रियतमा परमा गरिमावृता । नृपमपत्यमलं जनयेदरं वलवतामपि मानविमर्दकम् ॥ ५६ ॥

यदि स्त्रीके हाथमें कमलका चिह्न हो तो परम वडप्पनसे युक्त राजरानी होवै तथा संतानोंमें निश्चय राजाकोही उत्पन्न करे अर्थात् इसका पुत्र भी राजा होवे, जो वलसे वलवानोंके वलको भी मर्दन करनेवाला हो ॥ ५६ ॥

यदा प्रदक्षिणाकारो नन्द्यावर्तः प्रजायते ।
चक्रवर्तिन्टपत्नी सा यस्याः पाणितलेऽमले ॥ ५७ ॥

यदि स्त्रीके निर्मल हाथमें प्रदक्षिणाकार घुमा हुआ नंद्यावर्त चिह्न हो तो वह स्त्री चक्रवर्ती राजाकी रानी होवे ॥ ५७ ॥

आतपत्रं च कमठः शंखोऽपि यदि वा भवेत् ।
नृपमाता गुणोपेता भव्याकारा पतिव्रता ॥ ५८ ॥

जो स्त्रीके हाथमें छत्र, कमल, कछुआ, अथवा शंखकासा चिह्न हो तो वह गुणवती राजमाता तथा वडे सुंदर आकारकी और पतिव्रता होवे ॥ ५८ ॥

यस्या वामकरे रेखा तुलामालोपमा भवेत् ।
वैश्यवामा रमापूर्णा नानालङ्कारमण्डिता ॥५९॥

जिसके वाँयें हाथमें (तराजू) तखडी अथवा मालाके समान रेखा हों तो उसका पति यद्वा वही व्यापारी होवे- अथवा व्यापारी वा वैश्यकी स्त्री होवे तथा धनसे परिपूर्ण रहे, अनेक भूषण अलंकारोंसे सुशोभित रहे ॥ ५९ ॥

करतले गजवाजिवृषाकृतिः कृतिविदामबला किलकोविदा । भवति सौधसमा यदि सुभ्रुवः शशिनिभाऽतिशुभा किल रेखिका ॥ ६० ॥

जिस स्त्रीकी हाथकी हथेलीमें हाथी घोडा बैलका चिह्न हो वह चतुर एवं किये कामकी परीक्षा करनेवाली अर्थात् कदरदान और पंडिता होवै. जिस सुंदर भ्रुकुटीवाली स्त्रीके हाथमें चूनेवाले पक्के मकानके समान चिह्न हो अथवा चंद्रमाके समान रेखा हो तो वह अति शुभफल देती है. गुणवती भाग्यवती करती है ॥ ६० ॥

भवति सा विमलांकुशचामरामलशरासनवद्यदि रेखिका । गुणविभूषितभूपतिवल्लभा करतले शकटेन विशोऽवला ॥ ६१ ॥

जिस स्त्रीके हाथमें निर्मल अंकुश, चामर तथा निर्मल बाणके आकारका चिह्न हो वह शुभगुणोंसे शोभायमान राजरानी होवे अर्थात् उसका पति राजा वा राजतुल्य होवे । यदि हाथमें(शकट) गाडीके आकारकी रेखा हो तो उसका पति वैश्य यद्वा व्यापारी होवे ॥ ६१ ॥

अंगुष्ठमूलतो रेखा कनिष्ठां यदि गच्छति ॥
कस्याः सा पतिहंत्री तां दूरतः परिवर्जयेत् ॥ ६२ ॥

जिस स्त्रीके अँगूठेकी जडसे (कनिष्ठा) छोटी अंगुलीके मूल पर्यंत रेखा पहुँची हो तो वह अवश्य अपने पतिको मारनेवाली होती है, ऐसी स्त्रीको दूरहीसे वर्जित करना ॥ ६२ ॥

यदि करे करवाल–गदामलप्रखरकुंतमृदंगकुरंग-वत् ॥ भवति शूलनिभा खलु रेखिका भुवि सदा धनदा प्रमदा तदा ॥ ६३ ॥

जिस स्त्रीके हाथमें तलवार, गदा, निर्मल एवं तीक्ष्ण कुंत, मृदंग, हरिण, शूलके समान रेखा हो तो वह स्त्री पृथ्वीपर सर्वदा धन देनेवाली होवे ॥ ६३ ॥

वृषभेकवृश्चिकभुजङ्गजंबुकाः खरकङ्कपत्रशलभा विडालकाः ॥ यदि वामपाणितलगा भवन्ति चेत् कलहेन सार्द्धमतिरोगकारकाः ॥ ६४ ॥

जिसके बायें हाथकी हथेलीमें बेल, मेंढक, बिच्छु, सर्प, स्यार, गदहा, (कंकपत्रपक्षी) केंचुआ, (शलभ) टीडी, बिल्लीका चिह्न हो तो कलहकारिणी होवे तथा अतिरोगपीडित रहे ॥ ६४ ॥

अङ्गुलिलक्षणम् ।

कोमलः सरलोंगुष्ठो वर्तुलो यदि योषिताम् ॥
क्रमादेवं कृशांगुल्यो दीर्घाकाराश्च वर्तुलाः ॥ ६५ ॥
पृष्ठरोमाः शस्तफलाश्चिपिटा उदिता बुधैः ॥
कृशाः कुंचितपर्वाणो ह्रस्वा रोगभयावहाः ॥ ६६ ॥
अनेकपर्वसंयुक्ता उन्नतांगुलयोऽशुभाः ॥ ६७ ॥

यदि स्त्रीके अंगुष्ठ कोमल तथा सीधा और वर्तुलाकार (गोल) हों और अंगुली उससे क्रमकरके न्यून जैसे एकसे दूसरी कम होती जावें, तथा लंबे आकारकी वर्तुल (गोल) हों उनके पीछे रोम जमें हों एवं पृष्ठभाग उनका चिपिट (चौडा) स्वल्पमांसवाले हों तो शुभफल देते हैं ये शुभलक्षण हैं । यदि अंगुली माडी हो तथा उनके रेखाओंके बीचके पर्व टेढे हों तथा अंगुली छोटे कदकी हों तो रोगका भय देती हैं । यदि अंगुलियोंमें अनेक (पर्व) रेखा मध्यस्थानमें हों तथा ऊंची हों तो अशुभफल देनेवाली होतीहैं ६५-६७

नखानि।

शंखशुक्तिनिभा निम्ना विवर्णा न नखाः शुभाः ॥
कपिला वक्रिता रूक्षाः सुभ्रुवः सुखनाशकाः॥ ६८ ॥

स्त्रीके नाखून यदि शंख यद्वा सीपके समान हों तथा बीचमें गहरे वर्णरहित हों तो शुभ नहीं होते, तथा कपिलवर्ण एवं मुडे हुए और रूखे भी हों तो सुखका नाश करते हैं ॥ ६८ ॥

यदि भवंति नखेषु मृगीदृशां सितरुचो विरला यदि विन्दवः ॥ अतितरां कुसुमायुधपीडया परजनेन लपंति रमंति ताः ॥ ६९ ॥

मृगके समान हैं नेत्र जिनके ऐसी स्त्रियोंके नाखूनोंमें यदि श्वेतरंगके बिंदु (छींटे) हों तो वे अतिही कामदेवकी पीडासे परपुरुषोंसे स्वयं बातचीत करे तथा रमित भी रहे ॥ ६९ ॥

पृष्ठलक्षणम्।

गुप्तास्थिपृष्ठवंशेन मांसलेन पतिप्रिया ॥
रोममूलेन पृष्ठेन विधवा भवति ध्रुवम् ॥ ७० ॥

जिस स्त्रीके पीठकी हड्डी (कनकदण्ड) मांसमें छिपी हो और पुष्ट हो तो पतिकी प्यारी होती है, यदि पीठपर बहुत रोम हों तो निश्चय विधवा होती है ॥ ७० ॥

सशिरेणातिभुग्नेन विनतेन च दुःखिता।
सरलो मांसलो यस्याः पृष्ठवंशः समुन्नतः ॥ ७१ ॥
सा पत्युरनुभद्राख्या मुक्तालंकारमंडिता।
अतिप्रिया सुशीला च वरालीभिः समावृता ॥७२॥

जिसका पृष्ठवंश शिरा (नसों) से युक्त हो, कहीं ऊँचा कहीं नीचा हो तथा गहरा हो तो वह स्त्री दुःखित रहती है। जिसका

पृष्ठवंश सरल (सीधा) मांससे भरा हुआ हो तथा ऊंचा हो तो वह पतिव्रता पतिको मंगल करनेवाली मोती आदिरत्नोंके भूषणोंसे शोभित रहे, पतिकी अतिप्यारी होवे, अच्छा शील (स्वभाव) होवे, श्रेष्ठसखियोंसे युक्त रहे ॥ ७१ ॥ ७२ ॥

कण्ठलक्षणम् ।

कण्ठो वर्तुलरूपः कमनीयः पीनतायुक्तः ।
चतुरंगुलश्च यस्याः सा निजभर्तुः प्रिया भवति॥७३॥

जिस स्त्रीका कण्ठ (गला) गोल आकारका, सुन्दरसुहावना तथा पुष्ट हो और लंबाईमें चार अङ्गुल हो तो वह अपने भर्त्ताकी प्यारी होती है ॥ ७३ ॥

ग्रीवा-लक्षणम् ।

गुप्तास्थिर्मांसला ग्रीवा त्रिरेखाभिः समावृता ।
सुसंहता तदा शस्ता विपरीता न शोभना ॥ ७४ ॥

जो ग्रीवा (कण्ठ) मांससे पुष्ट हो अर्थात् हड्डी जिसकी प्रकट न हों, त्रिवलीके समान तीन रेखाओंसे युक्त हो, दृढ हो तो शुभ होती है। इससे विपरीत माडी, ऊंची हड्डीवाली, कहीं नीची हो तो अशुभ होती है ॥ ७४ ॥

स्थूलग्रीवा धवत्यक्ता रक्तग्रीवा च दासिका ।
अपतिश्चिपिटग्रीवा लघुग्रीवार्थवर्जिता ॥ ७५ ॥

जिस स्त्रीका गला मोटा हो तो पतिसे त्यक्त रहै, गलेका लाल-रंग हो तो दासी होवे, जिसकी ग्रीवा चिपिट (चौंडी) माडी हो वह विधवा होवे, जिसकी ग्रीवा छोटी हो वह (धनवर्जिता) दरिद्रा रहै ॥ ७५ ॥

हनुलक्षणम् ।

सुघना कोमला यस्या निर्लोमा च हनुः शुभा ।

लोमशा कुटिला लघ्वी चातिस्थूला न शोभना॥७६॥

जिसकी ठोडी घनी, कोमल और रोमरहित हो तो शुभ होती है जिसमें रोम बहुत हों (टेढी), तिर्छी हों, छोटी अथवा बहुतमोटी हो तो शुभ नहीं, दुःख दौर्भाग्य दारिद्य करती है ॥ ७६ ॥

मांसलौ कोमलावेतौ कपोलौ वर्तुलाकृती ॥
समुन्नतौ मृगाक्षीणां प्रशस्तौ भवतस्तदा ॥ ७७ ॥

जिन मृगाक्षियोंके गाल बहुत मांसयुक्त,कोमल, गोलाकार ऊंचे हों तो शुभ होते हैं ॥ ७७ ॥

निर्मांसौ पुरुषाकारौ रोमशौ कुटिलाकृती ॥
सीमंतिनीनामशुभौ दौर्भाग्यपरिवर्द्धकौ ॥ ७८ ॥

जिस नवयौवना स्त्रीके कपोल (गाल) मांसरहित हों, अथवा पुरुषकेसे हों तथा रोमयुक्त टेढी आकृतिके हों तो अशुभ होते हैं, दौर्भाग्य (कंवख्ती) बढानेवाले होत हैं ॥ ७८ ॥

ओष्ठलक्षणम् ।

वर्तुलो रेखयाक्रांतो बन्धूकसदृशोऽधरः ॥
स्निग्धो राजप्रियो नित्यं सुभ्रुवः परिकीर्तितः ॥७९॥

जिन सुभ्रुओंके होंठ गोल हों और रेखाओंसे युक्त तथा बंधूक-पुष्पके समान रक्तवर्ण हों,तथा स्निग्ध (चिकने) हों तो राजप्रिय अर्थात् ऐसे होंठ राजाको प्रिय होते हैं यह पूर्वाचार्योंने कहा है ॥७९॥

प्रलंबः पुरुषाकारः स्फुटितो मांसवर्जितः ॥
दौर्भाग्यजनको ज्ञेयः कृष्णो वैधव्यसूचकः ॥ ८० ॥

जो ओष्ठ लंबा हो, पुरुषके सदृश हो, फटाहुआ हो तथा मांस-रहित हो तो दौर्भाग्य देनेवाला जानना; यदि ओष्ठ कृष्णरंगका हो तो वैधव्य जनाता है ॥ ८० ॥

दन्तलक्षणम् ।

उपर्यधः समा दन्ताः स्तोकरूपाः पयोरुचः ॥
द्वात्रिंशदास्यगा यस्याः सा सदा सुभगा भवेत् ८१॥

जिस स्त्रीके मुखमें दांत ऊपर तथा नीचेके सम हों और छोटे हों तथा दूधके समान कांतिमान् हों गिनतीमें बत्तीस हों तो वह सर्वदा सौभाग्यवती रहती है ॥ ८१ ॥

अधोदंताधिकत्वेन मातृहीना च दुःखिता ॥
विधवा विकटाकारैः स्वैरिणी विरलद्विजैः ॥ ८२ ॥

जिसके नीचेके दांत गिनतीमें ऊपरके दांतोंसे अधिक हों तो मातासे हीन एवं दुःखित भी रहे, यदि दांत (विकटरूप) कुरूप हों तो विधवा होवे और दांत (छोटे) बीचमें अंतराल सहित हों तो व्यभिचारिणी होवे ॥ ८२ ॥

जिह्वालक्षणम् ।

कोमला सरला रक्ता श्वेता च रसना शुभा ॥
स्थूला या मध्यसंकीर्णा विकृता सुखनाशिनी॥८३॥

जिस स्त्रीकी जीभ कोमल,सरल और लाल वा श्वेतरंगकी अथवा रक्त श्वेत मिले हुए रंगकी शुभ होती है ,जो जीभ आद्यंतमें मोटी बीचमें माडी हो तथा विकृतरूप हो तो सुखका नाश करती है॥८३॥

श्यामया कलहा नित्यं दरिद्रा स्थूलया भवेत् ॥
अभक्ष्यभक्षिणी ज्ञेया जिह्वया लंबमानया ॥ ८४ ॥

जिसकी जिह्वा श्याम रंगकी हो वह नित्य कलह करनेवाली होवे जिसकी जिह्वा मोटी हो वह दरिद्रा होवे और जिसकी जिह्वा लंबी हो वह अभक्ष्यभक्षिणी (न खाने योग्य)वस्तु खानेवाली होवे ॥ ८४॥

तालुलक्षणम् ।

ताल‌ु कोकनदाभासं कोमलं भद्रकारकम् ॥
नारी प्रव्राजिता पीते सिते वैधव्यमाप्नुयात् ॥८५॥

जिसकी तालु कोकनद (रक्तोत्पल) के समान रंग और कोमल हो वह मंगलसूचक होती है । यदि तालु पीतवर्ण हो तो स्त्री प्रव्रजिता (फकीरनी) होवै,श्वेतवर्ण हो तो वह स्त्री विधवा होवै८५॥

श्यामले पुत्रहीना च रूक्षे तालुनि दुःखिता ॥
वक्रे कलिप्रिया नारी बहुरूपे च दुर्भगा ॥ ८६ ॥

जिस स्त्रीके तालु कृष्णरंगका हो तो वह पुत्ररहित होती है.रूक्ष हो तो दुःखित रहै. जिसका तालु टेढा हो वह कलिप्रिया(कलहमें शौक रखनेवाली) होवै. जो तालुके अनेक रूप रंग हों तो दुर्भगा (दरिद्रा) कुलकलंकिनी भी होवै ॥ ८६ ॥

कण्ठमूलम् ।

क्रमसूक्ष्मारुणा वृत्ता स्थूला घंटी शुभा मता ॥
अतिस्थूला प्रलंबा च कृष्णा नैव शुभा भवेत्॥८७॥

घंटिका (कंठमूल) का प्रथमभाग स्थूल तदुत्तर क्रमसे सूक्ष्म तथा लालरंगकी, गोलाकार,मोटी शुभ होती है,जो घंटिका अति स्थूल बहुतलंबी कृष्णरंगकी हो तो वह शुभ नहीं होती॥ ८७ ॥

स्मितलक्षणम् ।

भवति चेदनिमीलितलोचनं शुभदृशां दरफुल्लकपोलकम् ॥ अलमलक्षितदन्तमुदीरितं पतिहितं सततं स्मितमुत्तमम् ॥ ८८ ॥

जिस स्त्रीके मुसकुरानमें आँख बन्द न हों तथा कपोल थोडे प्रफुल्लित होजायँ और दाँत देखनेमें न आवें तो वह मुसकुरान सर्वदा पतिको हितकारी (शुभदायक) कहा है ॥ ८८ ॥

नासिकालक्षणम्।

नासिका तु लघुच्छिद्रा समवृत्तपुटा शुभा ॥
स्थूलाग्रा मध्यनम्रा च न शस्ता सुभ्रुवो भवेत् ॥८९॥

सुंदर भ्रुकुटीवाली स्त्रीकी नाक छोटे छिद्रकी, (सम) समान तथा वृत्ताकारपुटकी शुभ होती है. यदि नासिकाका अग्रभाग स्थूल तथा मध्यमें गहरा हो तो शुभ नहीं होती ॥ ८९ ॥

लोहिताग्रा कुंचिता च महावैधव्यकारिणी ॥
दासिका चिपिटाकारा प्रलंबा च कलिप्रिया ॥ ९०॥

नासिकाका अग्रभाग लालरंगका एवं मुडा हुआ हो तो महावैधव्य करती है,जिसका नाक चिपिट(सूखी सरीखी) हो तथा अतिलंबी हो तो वह स्त्री(कलिहारी) कलहको प्रिय माननेवाली होवै९०॥

नेत्रलक्षणम्।

रक्तान्ते लोचने भद्रे तदन्तःकृष्णतारके ॥
कंबुगोक्षीरधवले कोमले कृष्णपक्ष्मणी ॥ ९१ ॥

स्त्रीके नेत्रोंके अंतिम भाग रक्त हों, उन नेत्रोंके मध्यवर्ती तारा (पुतली) कृष्णवर्णके हों तथा कंबु (शंख) वह्रा गौके दूधके समान नेत्र श्वेतरंग वाले हों एवं कोमल हों और पलकोंके केश कृष्ण हों तो शुभलक्षण हैं ॥ ९१ ॥

अल्पायुरुन्नताक्षी च वृत्ताक्षी कुलटा भवेत् ॥
अजाक्षी केकराक्षी च कासराक्षी च दुर्भगा ॥ ९२ ॥

जिस स्त्रीके नेत्र ऊँचे हों वह अल्पायु होती है, जिसके नेत्र गोल हों वह व्यभिचारिणी होवे, जिसके बकरेकेसे अथवा केकरेकेसे अथवा महिषकेसे नेत्र हों वह दुर्भगा होवे ॥ ९२ ॥

पिंगाक्षी च कपोताक्षी दुःशीला कामवर्जिता ॥
कोटराक्षी महादुष्टा रक्ताक्षी पतिघातिनी ॥ ९३ ॥

पीले नेत्र यद्वा पिंगलपक्षीकेसे नेत्रवाली तथा कपोतपक्षीकेसे नेत्रवाली दुष्टप्रकृति, कामरहित होवै, जिसके नेत्र कोटरके समान गहरे हों वह बडीही दुष्टा होवै और लाल नेत्रवाली विधवा होती है ९३

विडालाक्षी गजाक्षी च कामिनी कुलनाशिनी ॥
वन्ध्या च दक्षकाणाक्षी पुंश्चली वामकाणिका॥९४॥

जो कामिनी बिल्लीके समान अथवा हाथीके समान नेत्रवाली हो वह कुलका नाश करती है । जिसकी दाहिनी आँख काणी फूटी वा किसी प्रकार गई हो तो वह बांझ और वाम आंखकाणीसे व्यभिचारिणी होवे ॥ ९४ ॥

सदा धनवती नारी मधुपिङ्गललोचना ॥
पुत्रपौत्रसुखोपेता गदिता पतिसंमता ॥ ९५ ॥

जिस स्त्रीके नेत्र सहदसमान पीले हो वह सर्वदा धनवती रहै तथा पुत्रपौत्रोंके सुखसे युक्त और पतिके संमत हो ऐसा आचार्योंने कहा है ॥ ९५ ॥

पक्ष्मलक्षणम् ।

कोमलैरसिताभासैः पक्ष्मभिः सुघनैरपि ॥
लघुरूपधरैरेव धन्या मान्या पतिप्रिया ॥ ९६ ॥

जिस स्त्रीके पलक कोमल हों,श्याम हों तथा घन भी हों और छोटे रूपको धारण किये हों वह स्त्री धन्य है. लोकमें माननीय तथा पतिकी प्रिया होवे ॥ ९६ ॥

रोमहीनैश्च विरलैर्लम्बितैः कपिलैरपि ॥
पक्ष्मभिः स्थूलकेशैश्च कामिनी परगामिनी ॥९७॥

जिसके पलक रोमरहित हों अथवा कहीं स्वल्प रोम हों तथा नीचेको लंबायमान एवं कपिलवर्ण हों अथवा मोटे केशवाले हों तो वह कामिनी परपुरुषगामिनी होवै ॥ ९७ ॥

वर्त्तुला कोमला श्यामा भ्रूर्यदा धनुराकृतिः ॥
अनंगरंगजननी विज्ञेया मृदुलोमशाः ॥ ९८ ॥

जिसकी भ्रुकुटी (भौंह) गोल, कोमल, श्यामरंग और धनुषके समान घूमें हुए हों वह कामक्रीडामें पतिको सुख देनेवाली होती है तथा भ्रुकुटीपर कोमल रोमोंसे भी यही फल है ॥ ९८ ॥

भ्रूलक्षणम् ।

पिङ्गला विरला स्थूला सरला मिलिता यदि ॥
दीर्घलोमा विलोमा च न प्रशस्ता नतभ्रुवः ॥९९॥

जिस स्त्रीके भ्रुकुटीपर भूरे केश हों यद्वा विरल केश हों,मोटी हों, सीधी हों, दोनों भ्रुकुटी मिली हों अथवा लंबे केशवाली हों, यद्वा विना केशकी हों तो यह शुभलक्षण नहीं है वह स्त्री दुर्लक्षणा होती है. झुकी हुई भ्रुकुटीवाली भी ऐसे ही होती है ॥ ९९ ॥

कर्णलक्षणम् ।

प्रलंबौ वर्तुलाकारौ कर्णौ भद्रफलप्रदौ ॥
शिरालौ च कृशौ निंद्यौ शष्कुलीपरिवर्जितौ॥१००॥

जिस स्त्रीके कान लंबे, गोलाकार (गिर्द) हों तो शुभफल देनेवाले होते हैं, जिनपर शिरा (नसों) बहुत प्रकट हों,माडे हों तथा फेणीकाकार न हों तो निन्द्य हैं अर्थात् अशुभफल देते हैं ॥१००॥

ललाटलक्षणम् ।

उन्नतस्त्र्यंगुलो भालः कोमलश्च नतभ्रुवाम् ॥
अर्द्धचंद्रनिभो नित्यं सौभाग्यारोग्यवर्द्धकः ॥१०१॥

जिन नम्रभ्रुकुटीवाली स्त्रियोंका मस्तक (माथा) तीन अंगुल प्रमाण ऊंचा हो, कोमल हो और अर्द्धचंद्रमाके आकारका हो तो वह सौभाग्य, नीरोगता आदि सौख्य बढानेवाला होता है॥१०१॥

व्यक्तस्वस्तिकरेखयाकुलमलं नार्या ललाटस्थलं
सौभाग्यामलभोग्यकृत्तदलिकं लंबायमानं यदि ॥
अद्धा देवरमाशु हंति नितरां रोमाकुलं रोगदं
रेखाहीनमनंगभंगजनकं ज्ञेयं बुधैः सर्वदा ॥ १०२॥

जिस स्त्रीके ललाटमें (माथेमें) स्वस्तिक चिह्न प्रकट हो अथवा बहुत स्वस्तिक हों तो वह स्त्री सौभाग्ययुक्त, उत्तम निर्मल भोगयुक्त रहती है, यदि वही चिह्न लंबा यद्वा लटकतासा हो तो वह स्त्री साक्षात् देवरका नाश करती है, यदि मस्तक रोमोंसे भरा हो तो रोगी रहे यदि रेखाओंसे रहित हो तो कामदेव संबंधी भंगता पंडितोंको सर्वदा जाननी चाहिये ॥ १०२ ॥

करिपुंगवकुम्भसमान उत प्रवरोन्नत एव कदंबनिभः ॥ इह मौलिरजस्रमिला विमला विविधा बहुधान्ययुता सुदृशः ॥ १०३ ॥

जिन सुनेत्रा स्त्रियोंका माथा श्रेष्ठ हाथीके गंडस्थलके समान अथवा क्रमसे ऊंचा कदंबसदृश हो तो उसको निर्मल अनेक प्रकारके धान्ययुक्त पृथ्वी मिले ॥ १०३ ॥

पीनमौलिरतिमानहारिका दारिका कुजनसंगकारिका । लम्बमौलिरपि सर्वनाशिका वन्धका निजकुलान्तकारिका ॥ १०४ ॥

जिस कन्याका माथा (ऊंचा) चूळीसदृश पैना हो वह अपने मानको खोवै,दुष्टजनोंकी संगति करे, जिसका माथा लंबा हो वह

भी सर्व नाश करे, बांझिनी होवै और अपने कुलका नाश करनेवाली होवै ॥ १०४ ॥

केशलक्षणम् ।

केशा यस्या भ्रमरपटलोपेक्षवर्णाः सुवर्णा वक्राकाराः कुवलयदृशः किंचिदाकुञ्चिताग्राः । भाग्यं सद्यो ददति विरलाः पिंगलाः स्थूलरूपा रूक्षाकाराः परमलघवो बन्धवैधव्यदुःखम् ॥१०५॥

जिस कमलनयनीके शिरके केश भ्रमरसमूहोंके उपेक्षा करनेवाले अर्थात् अति कृष्णवर्ण तथा चमकीले और मुडे हुए तथा कुंचित थोडे मुडे हुए अग्रभागवाले होवें तो भाग्य (ऐश्वर्य) देते हैं, यदि छोटे हों, पीले भूरे रंगके, मोटे, रूखे हों अथवा अतिही छोटे हों तो वैधव्य, बंधन आदि दुःख देते हैं ॥ १०५ ॥

तिलमशकादि ।

मशकापि ललाटपट्टवर्ती यदि जागर्ति स मध्यगो भ्रुवोर्वा । तनुते सुखमर्थराशिभोगं सततं पत्युरपत्यभृत्ययोश्च ॥ १०६ ॥

जिसके मस्तकमें मसा (चर्मविकारसे छोटा व्रण सरीखा) हो अथवा वह भ्रुकुटीके बीचमें हो तो सुख, अतिधनी, अनेकभोग और सर्वदा पति, पुत्रका सुख पाती है ॥ १०६ ॥

मशकोऽपि कपोलमध्यगामी सुदृशो लोहित एवमिष्टदः स्यात् । हृदयं तिलकेन शोभितं लसनेनापि च राज्यकारणम् ॥ १०७ ॥

जिसके गालके बीचमें मसा लालरंगका हो तो इष्टसिद्धि करता है, यदि हृदयमें तिल वा लसन चिह्न हो तो राज्य देता है ॥१०७॥

लोहितेन तिलकेन मण्डितं सुभ्रुवो हि कुच-
मण्डलं यदा । जायते किल सुताचतुष्टयं बालक-
त्रयमुदीरितं तदा ॥ १०८ ॥

जिस सुभ्रू स्त्रीके स्तनमंडलमें लाल रंगका तिल हो तो उसके चार कन्या और ३ पुत्र होवें यह पूर्वशास्त्रोंमें कहा है ॥ १०८ ॥

भवति वामकुचेऽरुणलाञ्छनं शुभदृशस्तिलकं
कमलप्रभम् । प्रथमतस्तनयं परिसूय सा कृति-
वरं विधवा तदनन्तरम् ॥ १०९ ॥

जिस सुभ्रू स्त्रीके वामस्तनमें लालरंगका लांछन हो वह प्रथम युवावस्थामें गुणवान् पंडित पुत्रको उत्पन्न करके विधवा होजावे १०९

लसति बालमधुव्रतसन्निभं शुभदृशस्तिलकं
गुददक्षिणे । नरपतेरबला कमलालया नृप-
मपत्यमरं जनयेदलम् ॥ ११० ॥

जिस सुन्दर भ्रुकुटीवालीस्त्रीके छोटे भ्रमरोंके समूह समान रंगका (कृष्ण)तिल गुदद्वारके दाहिने हो वह राजाकी स्त्री हो उसके घरमें लक्ष्मी वास रहे तथा उसका पुत्र भी निश्चय राजा ही होवे ॥११०॥

मशकोऽपि च नासिकाग्रगामी सुदृशो विद्रुम-
कान्तिरर्थदायी । अलिपक्षनवाभ्ररूपधारी
पतिहन्त्री किल पुंश्चली विशेषात् ॥ १११ ॥

जिस सुनेत्रा स्त्रीके दोनों नासिकाके अग्रभागमें लाल रंगका मसा हो तो धन देता है । यदि वही मसा भ्रमरपक्ष यद्वा नवीन मेघके रूपको धारण किये हों तो पतिको मारती है, विशेषतः व्यभिचारिणी होती है ॥ १११ ॥

यदि नाभेरधोभागे तिलकं लांछनं स्फुटम् ।
सौभाग्यसूचकं ज्ञेयं मशको वा नतभ्रुवाम् ॥ ११२ ॥

यदि नम्र भ्रुकुटीवाली स्त्रियोंके नाभीके नीचे तिल अथवा लांछन प्रकट होवे तो सौभाग्य जनाता है, अथवा मसा हो तौ भी ऐसा ही फल करता है ॥ ११२ ॥

यदि करे च कपोलतलेऽथवा भवति कण्ठगतं तिलकं तदा । श्रुतितलेऽपि च सा पतिवल्लभा वरदृशी मशकामललांछनैः ॥ ११३ ॥

जिस सुनेत्रा स्त्रीके हाथकी हथेलीमें, या गालमें अथवा कंठमें यद्वा कानके नीचे तिल हो तो वह स्त्री पतिकी प्यारी होवे; ऐसे ही मसा आदि निर्मल लांछनसे जानना ॥ ११३ ॥

भालस्थेन त्रिशूलेन शंभुना निर्मितेन वै ।
यस्याःसाऽऽलीसहस्राणामीशितामाप्नुयादरम् ११४॥

जिस भाग्यवती स्त्रीके माथेमें शिवजी कृपा करके त्रिशूलाकार रेखाका चिह्न कर दें तो वह हजारों (आली) सखियोंकी स्वामिनी होवे अर्थात् अतीव ऐश्वर्यवती होवे ॥ ११४ ॥

किटकिटेति रवं कुरुते मिथः शुभदृशः शयने तु रदावली । महदमङ्गलमाह विशेषतः प्रियतमे तनुलक्षणकोविदाः ॥ ११५ ॥

जिस सुदृशी स्त्रीके दोनों पंक्तिके दांत सोतेमें किट किट शब्द करें अर्थात् दाँत परस्पर लडें तो उसके पतिको महान् अमंगल होता है, यह विशेष दुर्लक्षण है, शरीरके लक्षणोंके जाननेवाले पंडित लोगोंने कहा है ॥ ११५ ॥

शकटवद्यदि योनिललाटगो मृगदृशो मृदुलोमगणो भवेत् । वरदुकूलमणिव्रजमंडिता क्षितिभृतां वनिता वनितावृता ॥ ११६ ॥

जिस मृगनयनीके योनिके ऊपरीभागमें कोमल केशोंसे बना हुआ गाडीकासा आकार हो तो वह श्रेष्ठवस्त्र, अनेक रत्नसमूहोंसे शोभित, अनेक सखी दासियोंसे युक्त राजरानी होवे ॥ ११६ ॥

विलसति भगभाले दक्षिणावर्तरूपः
कुवलयनयनायाः कोमलो लोमसंघः ॥
नरपतिकुलभर्तुः कामिनीं मानिनीना-
मिह भवति वदान्या सैव धन्या विशेषात्॥११७॥

पूर्वश्लोकमें जो योनिके माथेपर कोमल केशोंका चिह्न कहा है वह यदि दक्षिणावर्त्त (दाहिनी ओरको घुमा) हो तो वह मृगनयनी राजाधिराजकी कामिनी(प्रिया)होवै, यौवनगर्विता स्त्रियोंमें वदान्या (श्रेष्ठ) होवै, विशेपतः वह स्त्री धन्या है ॥ ११७ ॥

कण्ठावर्ता भवति कुलटा भर्तृहन्त्री कुरूपा
पृष्ठावर्त्ता कठिनहृदया स्वामिहन्त्री कुलघ्नी :
आवर्तौ वा भवत उदरे द्वाविहैकोऽपि यस्याः
सापि त्याज्या कृतिभिरबला लक्षणज्ञैस्तु दूरात्११८

जिस स्त्रीके वारीक कोमल रोमोंका पुंज होकर मुडा हुआ जलका आवर्त्त(भौंरा)जैसा कण्ठमें होतो बहुत पति करनेवाली, पतिको मारनेवाली,कुरूपा होवे। पीठमें हो तो कठोर हृदय(कर्कशा, निर्दया)और भर्त्ताको मारनेवाली कुलका नाश करनेवाली होती है। जिसके पेटमें दो अथवा एक भी भौंरा हो वह भी स्त्रियोंके सामुद्रिकलक्षण जाननेवाले चतुरोंको दूरहीसे वार्जित करनी चाहिये॥११८॥

सीमंते च ललाटे वा कण्ठे वापि नतभ्रुवः ॥
लोम्नामावर्त्तको दक्षो वामो वैधव्यसूचकः ॥११९॥

माथेके ऊपर केश प्रांतस्थानमें अथवा माथेमें अथवा कण्ठमें जिस सुभ्रूके रोमावर्त्त (भौंरा) दाहिने ओर अथवा बायें ओर घुमाववाला हो तो वैधव्य जाननेवाला होता है ॥ ११९ ॥

शुभाशुभलक्षणहेतुः।

याभिरेव वरदो महेश्वरः पूजितः किल पुरा व्रतादिभिः ॥ पार्वती च परिपूजिता मुदा भक्तियोगविधिना सुवासिनी ॥ १२० ॥ भूषितामलविभूषणादिभिः क्षालितं वपुरनेकधा पुरा ॥ तीर्थराजपयसा भवंति ता लक्षणैरिह शुभाः सुलक्षणाः ॥१२१॥

जिन स्त्रियोंने पूर्वजन्ममें व्रतादिकोंसे शिवजीका पूजन किया हो तथा प्रसन्नतापूर्वक पार्वतीजीकाभी पूजन किया हो और भक्तिभावसे,योगसाधनविधिसे आराधन किया हो (सुवासिनी)सौभाग्यवतीका पूजन उमाव्रत आदिकोंसे किया हो उनको वस्त्र, भूषणादि अलंकार दियेहैं अथवा तीर्थराज प्रयागादिकोंके जलसे शरीर अनेक वार प्रक्षालित किया हो वे उक्त शुभलक्षणोंसे युक्त लक्षित, सुलक्षणा होती हैं अर्थात् जिन्होंने पहिले बडे पुण्य किये हैं वही भाग्यं, ऐश्वर्यवती होतीहैं,उन्हींके उक्त शुभचिह्न लक्षण होते हैं१२०॥१२१

कृतं नहि तपो यया नगजया समाराधितो
हरिर्नहि रविव्रतं नहि कृतं च तीर्थाटनम् ॥
धनं नहि धरामरे परमर्पितं तर्पितं
गुरोः कुलमिहाङ्गना भवति सैव दीनाङ्गना ॥१२२॥

जिस स्त्रीने पार्वतीजीका तप न किया, अथवा विष्णुका भले प्रकार आराधन नहीं किया, सूर्यका व्रत न किया, तीर्थोंमें न फिरी, ब्राह्मणोंको धन नहीं दिया, गुरुका कुल तृप्त नहीं किया वह इस संसारमें (दीना) दुःखदारिद्र्ययुक्त दुर्लक्षणों सहित होती है ॥१२२॥

सुरेखाफलम् ।

यतः सुलक्षणीरेखा योषा हीनायुषं पतिम् ॥
दीर्घायुषं सुचरितैः प्रकरोति सुखास्पदम् ॥ १२३ ॥

जिससे कि, सुलक्षण रेखाओंवाली स्त्रीका पति अल्पायुभी हो तो यह अपने शुभलक्षणोंके प्रभावसे एवं अपने सुचरित्रोंसे उसे दीर्घायु तथा सुखका स्थान कर देती है ॥ १२३ ॥

कुलक्षणाफलम् ।

दीर्घायुषं पतिं हन्ति कुयोगैश्च कुलक्षणैः ॥
अतः सुलक्षणा कन्या परिणेया विचक्षणैः ॥१२४॥

जिस स्त्रीके कुयोग एवं कुलक्षण (उक्त लक्षणोंमेंसे) होते हैं वह दीर्घायु पतिकोभी नाश करके विधवा होती है, तस्मात् जाननेवालोंने सुलक्षणा कन्यासे विवाह करना दुर्लक्षणासे नहीं करना १२४

कुलक्षणशान्त्युपायः ।

कुलक्षणविलक्षिता यदि सुताऽत्र संजायते
श्रुतिस्मृतिपथानया परमसोमवारव्रतम् ॥
विधाय तदनन्तरं रहसि कारयित्वाऽच्युत-
द्रुमेण हरिणा कृतीशुभघटेन पाणिग्रहम् ॥१२५॥

जिसके घरमें कुलक्षणोंसे युक्ता कन्या उत्पन्न होवे वह वेद तथा धर्मशास्त्रके अनुसार सोमवारका उत्तम व्रत कन्यासे करावे, इसके उपरांत एकांतमें अच्युतद्रुम (पीपल) वा विष्णुप्रतिमा या घटके साथ विवाहविधिसे विवाह करना ॥ १२५ ॥

शुभेऽहनि कुमारिकाकरनिपीडनं कारये-
द्वरेण चिरजीविना पुनरिदं न दोषायते ॥
इदं तु बहुसंमतं मुनिवरेण गीतं पुनः
प्रमाणपटुनादृतं प्रियविनोदकंदप्रदम् ॥ १२६ ॥

ऐसे अश्वत्थ विवाह तथा विष्णुप्रतिमाविवाहवा घटविवाहकर-नेके उपरांत शुभदिन मुहूर्त्तमें उस कन्याका चिरजीवित्वकारक ग्रहवाले वरके साथ विवाह करना; इसमें पुनर्विवाहका दोप नहीं होता (और दुर्लक्षण एवं वैधव्य योगोंका फल निराकरण होजाताहै.)यह विधि बहुत आचार्य्योंके संमत है,श्रेष्ठमुनिसे कहा हुआहै तथा उत्तम विद्वानोंसे आहृतहै और स्वामीको आनन्दप्रद है॥२६॥

कुलक्षणैः कुयोगैश्च लक्षिता वनिता यदा ॥
तस्याः पूर्वविधानेन विवाहं कारयेद्बुधः ॥ १२७ ॥

सामुद्रिकोक्तकुलक्षणोंसे यद्वा जातकोक्त कुयोगोंसे लक्षित जो कन्या हो उसका पूर्वोक्तविधिसे विवाह करना. (इससे सुहाग बढता है दुर्लक्षण दुर्योगोंका उपाय यही है) ॥ १२७ ॥

जीवनाथविदुपात्र कामिनीलक्षणं बुधमनोमुदे
मया । स्कंदकुम्भभवयोर्विवादजं व्यासगीत-
मखिलं प्रकाशितम् ॥ १२८ ॥

इति श्रीजीवनाथविरचिते भाव० स्त्रीसामुद्रिकाध्यायो दशमः ।

ग्रंथकर्त्ता आचार्य पंडित जीवनाथ कहताहै कि मैंने बुधजनोंके मनप्रसन्न करनेके लिये इतने स्त्रीलक्षण स्कंद और अगस्तिके प्रश्नोत्तर व्यासदेवजीके कहे अनुसार समस्त प्रकाशित किया है॥१२८॥

इति भावकुतूहले माहीधरीभाषाटीकायां स्त्रीसामुद्रिकाऽध्यायः॥ १० ॥

एकादशोऽध्यायः ।

अथ ग्रहावस्थाविचारः ।

प्रथमं शयनं ज्ञेयं द्वितीयमुपवेशनम् ॥
नेत्रपाणिः प्रकाशश्च गमनागमने ततः ॥ १ ॥
सभायां च ततो ज्ञेय आगमो भोजनं तथा ॥
नृत्यलिप्सा कौतुकं च निद्रावस्था नभःसदाम् ॥२॥

अब ग्रहोंकी अवस्था कहते हैं–शयन१,उपवेशन २, नेत्रपाणि ३, प्रकाश४,गमन५,आगमन६, सभा७,आगम८, भोजन९,नृत्यलिप्सा१०,कौतुक ११, निद्रा१२ये अवस्थाओंके नाम हैं ॥१॥२॥

अवस्थापरिज्ञानम् ।

ग्रहर्क्षसंख्या खगमाननिघ्नी खेटांशसंख्यागुणिता ग्रहाणाम् ॥ निजेष्टजन्मर्क्षतनुप्रमाणैर्युतार्कतष्टा शयनाद्यवस्था ॥ ३ ॥

जिस नक्षत्रमें ग्रह हो उसकी अश्विन्यादि गणनासे जो संख्या हो उसे ग्रहकी संख्यासे गुनके पुनः ग्रहकी अंशसंख्यासे गुनाकर अपनी इष्टघटी, जन्मनक्षत्र,लग्नके संख्याओंसे युक्त करके बारहसे भाग लेना शेष जो रहै वह अवस्था जाननी. जैसे(१)शेषमें शयनावस्था, (२) में उपवेशन, (३) में नेत्रपाणि इत्यादि ॥ ३ ॥

शेषं शेषहतं स्वरांकसहितं तष्टं पुनर्भानुना
संक्षेपं गुणशेषितं खलु भवेद्दृष्टयाद्यवस्था त्रिधा ॥
पंचद्विद्विगुणाक्षरामगुणवेदाः क्षेपकाङ्का रवेः
प्राचीनैर्यवनादिभिःसमुदितास्तेऽमी निबद्धामया॥४॥

उक्त विधिसे जो शेष रहे उसे उसीसे गुनाकर स्वरांक जोडना (यह स्वरांक आगे लिखेंगे.) पुनः (१२) से शेष करके जिस ग्रहकी अवस्था अभीष्ट है उसका (वक्ष्यमाण) क्षेपकांक जोडना,

तदनन्तर (३) से शेष करते एक (१) शेष रहे तो दृष्टि, (२) रहे तो चेष्टा, (०) शेष रहे तो विचेष्टा जाननी और सूर्यके(५) चन्द्रमाके (२) मंगलके (२) बुधके (३) बृहस्पतिके (५) शुक्रके (३) शनिके (३) राहुके (४) क्षेपकांक हैं, इतने अंक यवनादि प्राचीन आचार्य्योंके कहेही मैंने यहां लिखे हैं, उपपत्ति इनकी ज्ञात नहीं यह ग्रंथकर्त्ता कहता है ॥ ४ ॥

ऊपर जो स्वरांक कहा वह इस चक्रस्थ क्रमसे लेना. जैसे अका१इके२उके३ एके४ ओके ५ नामके (प्रधान) आदि अक्षरमें जो स्वर हो उसका अंक लेते हैं नाम प्रमाणभी वही है, जिस नामके पुकारनेसे सोता मनुष्य जाग उठै.

स्वरशास्त्रमतेन स्वरांक चक्रम् ।

१	२	३	४	५
अ	इ	उ	ए	ओ
क	ख	ग	घ	च
छ	ज	झ	ट	ठ
ड	ढ	त	थ	द
ध	न	प	फ	ब
भ	म	य	र	ल
व	श	प	स	ह

अवस्थाका उदाहरण–किसीका जन्म पौषशुक्लपंचमी शुक्रवार मिथुनलग्न धनिष्ठानक्षत्रके चतुर्थचरणमें है. इष्टघटी २६ । ० है सूर्य मूलनक्षत्रमें, चन्द्रमा धनिष्ठामें, मंगल श्रवणमें, बुध पूर्वाषाढामें, बृहस्पति आर्द्रामें, शुक्र पूर्वाषाढामें, शनि मूलमें, राहु पूर्वाफाल्गुनीमें, केतु पूर्वाभाद्रपदामें हैं । सूर्य ७ अंश, चन्द्रमा ४, मंगल११, बुध २६, बृहस्पति ११, शुक्र २५, शनि ७, राहु केतु २२ अंशपर हैं । प्रथम सूर्य मूलनक्षत्रमें है इसकी संख्या (१९) सूर्यकी संख्या (१)से गुना १९ धनके ७ अंश पर होनेसे७ से गुनदिया १३३ । इष्ट २६, जन्मनक्षत्र २३लग्न मिथुन३ इनको जोड गुणित संख्यामें मिलाया १८५ रवि (१२) से शेष किया शेष५शयना-

दिगणनासे पांचवीं गमनावस्था सूर्यकी हुई, पुनः प्रसिद्धनाम गुणानन्द आद्याक्षरोत्तरवर्ती स्वर उकारके अधोपंक्तिमें संख्या ३ पूर्वागतशेष ९ से शेष ९ गुनदिया २५ स्वरांक ३ जोडके २८ पुनः १२ से शेष किया शेष ४ सूर्यक्षेपक ५ जोडनेसे ९ तीन ३ से शेष किया शेष० रहा.इससे सूर्यकी गमनावस्थामें विचेष्टा अवस्था, एवं प्रकारसे चन्द्रमाकीउपवेशावस्थामें विचेष्टा,मंगल प्रकाशमें विचेष्टा, बुध आगममें दृष्टि, बृहस्पति नृत्यलिप्सामें विचेष्टा, शुक्र प्रकाशमें दृष्टि, शनि गमनमें विचेष्टा, राहु निद्रामें दृष्टि, केतु सभामें चेष्टा ॥

अथावस्थाफलानि ।

सूर्यावस्था ।

त्रिकोणे वा कर्मण्यपि नयनपाणौ दिनमणेः
फलं शस्तं ज्ञेयं मदनसदने नन्दनपदे ॥
प्रकाशे मार्तण्डे मृतिपदमपत्यं जनिमतां
तथा जाया याति व्ययमदनमाने च जनने ॥ १ ॥
पुण्यबाधाकरः पुण्यभे भोजने कौतुके वैरिभे
वैरिहन्ता रविः ॥ सप्तमे पंचमे तत्रगो वा भवे-
दङ्गनापुत्रहा लिंगरोगप्रदः ॥ २ ॥

अब अवस्थाओंके फल कहते हैं-प्रथम सूर्यके फल हैं कि,सूर्य त्रिकोण ५ । ९ वा १० भावमें नेत्रपाणि अवस्थामें हो तो शुभ फल देता है. जो ७ । ९ भावमें प्रकाशावस्थामें हो तो जन्मियोंके पुत्रहानि होवे तथा स्त्रीहानि हो,ऐसे ही फल १२ । ७ । १० स्थानोंमें भी उक्त अवस्थाके जन्ममें जानना, यदि ९भावमें भोजन अवस्थामें हो तो पुण्यमें बाधा डालता है, कौतुक अवस्थामें छठा हो तो वैरिहन्ता होता है, यदि इसी अवस्थामें ७।५ भावमें हो तो स्त्रीपुत्रहानि और लिंगमें रोग करता है ॥ १ ॥ २ ॥

चन्द्रावस्था ।

चन्द्रस्य द्वादशावस्था फलं शुक्लदले शुभम् ॥
अशुभं कृष्णपक्षे तु विज्ञेयं गणकोत्तमैः ॥ ३ ॥

चंद्रमाके बारहों अवस्थाओंका फल शुक्लपक्षमें शुभ कृष्णपक्षमें अशुभ सर्वत्र उत्तम ज्योतिषियोंको जानना चाहिये ॥ ३ ॥

कुजावस्था ।

मदननंदनगोऽवनिनंदनः शयनगश्च कलत्रसुतक्षयम्। प्रथमतः कुरुते रिपुणेक्षितो रिपुगृहे करभंगमनंगतः४॥ यदि युतः शनिनापि च राहुणा शिरसि रोगकरो धरणीसुतः ॥ तनुगतः शयने नयने गदं वितनुते नितरां क्षतमंगिनाम् ॥५॥ अङ्गारकोऽङ्के यदि नेत्रपाणौ करोत्यनंगातिशयेन भङ्गम् ॥ भुजङ्गदन्तक्षतपावकांबुभयं नगे हानिमिहाङ्गनायाः॥६॥ प्रकाशने पंचमसप्तमस्थः सुतं निहन्त्याशु निहंति वामम् ॥ पापान्वितः पापखगांतराले कुकर्मिणां केतुवरं करोति ॥ ७ ॥

मंगलके अवस्थाफल ये हैं कि, भौम शयनावस्थामें सप्तम भावमें हो तो स्त्रीहानि, पंचम हो तो पुत्रहानि करता है; यदि शत्रुभावमें शत्रुदृष्ट उक्त अवस्थामें हो तो कामदेवव्याजसे हाथ टूट जावे ॥४॥ यदि शनिसे वा राहुसे युक्तभी हो तो शिरमें रोग करता है, तथा निरंतर शरीरियोंको हानि ही देता है ॥ ५ ॥ यदि मंगल लग्नका नेत्रपाणि अवस्थामें हो तो कामदेवके संबंधी कार्यसे शरीरके अंगभंग करता है, सर्पभय, दंतरोग, घाव, अग्नि, जलका भय होवे, स्त्री आदि गृहस्थका सुख न होवे ॥६॥ यदि प्रकाशावस्थामें ५।७ भावमें हो तो पुत्रस्त्रीकी हानि करता है, यहां पंचममें पुत्र सप्तममें

स्त्रीहानि जानना । यदि पापयुक्त, पापग्रहोंके बीच भी हो तो कुकर्मियोंमें श्रेष्ठ "पापध्वज" पापियोंमें श्रेष्ठ ध्वजा जैसा होता है ॥ ७ ॥

बुधावस्था ।

नेत्रपाणौ सुते सौम्ये पुत्रहानिः सुतागमः ॥
सभायामेव कन्यानामाधिक्यं मदने सुते ॥ ८ ॥

बुध नेत्रपाणि अवस्थामें पंचम हो तो पुत्रोंकी हानि और कन्याकी उत्पत्ति होवै । यदि सभावस्थामें प्राप्त होकर सप्तम पञ्चम भावोंमें हो तो कन्या बहुत, पुत्र थोडे होवैं ॥ ८ ॥

गुरोरवस्था ।

भवति देवगुरौ यदि भोजने तनुगते मनुजो हि धनुर्द्धरः ॥ नवमपंचमभे धनवर्जितो भवति पापयुते विसुतो नरः ॥ ९ ॥

बृहस्पति भोजनावस्थामें लग्नका हो तो मनुष्य धनुषधारी होवै । यदि उक्त अवस्थामें ९ । ५ भावमें हो तो धनरहित और पापयुक्त भी हो तो पुत्ररहित होवै ॥ ९ ॥

शुक्रावस्था ।

तनुगृहे मदने दशमे सितो नयनपाणिगतो यदि जन्मनि ॥ शुभमतीव फलं तनुते बलं दशनभङ्गमनंगविर्धनम् ॥ १० ॥

यदि जन्मकालमें शुक्र १ । ७ । १० । भावोंमें नेत्रपाणिअवस्थामें हो तो अतीव शुभफल देता है, बलवान करता है परंतु दांतोंका भंग और कामदेवकी वृद्धि भी करता है ॥ १० ॥

शनेरवस्था ।

यत्र कुत्र स्थितो मन्दो जन्मकाले विशेषतः ।
अवस्थानामसदृशं वितनोति शुभाशुभम् ॥ ११ ॥

जन्मकालमें जिस किसी भावमें स्थित शनि जिस अवस्थामें हो उस अवस्थाके नामसदृश शुभाशुभफल विशेष करके देता है॥११॥

राहुकेत्वोरवस्था।

नवमे मदने वापि राहुराहुरिहाङ्गिनाम् ॥
महान्तो निद्रितोऽवश्यं पुण्यक्षेत्रनिवासिताम् १२॥
द्वितीये द्वादशे वापि लाभे वा सिंहकासुते ॥
वसुधां भ्रमते मर्त्यो विधनः शयने भवेत् ॥ १३ ॥
निजक्षेत्रे तुङ्गे कविकुजगृहे मित्रभवने
स्ववर्गे सद्वर्गे तमसि शयने जन्मसमये।
फलं पूर्णं प्राहुः कथितभवनादन्यभवने
तदा दुष्टप्राचस्तदिह शिखिनो राहुवदिदम् ॥१४॥

जिन शरीरियोंके राहु ९। ७ भावोंमें निद्रावस्थामें हो तो उनको अवश्य पुण्य क्षेत्रमें निवास मिले यह बडे आचार्य कहते हैं। यदि राहु शयनावस्थामें २।१२।११भावोंमें हो तो वह मनुष्य निर्द्धन रहकर पृथ्वीमें भ्रमण करे। राहु यदि अपनी राशि ६अपने उच्च३ अथवा शुक्रके गृह २। ७ या मंगलकी राशिमें १।८ में हो अथवा मित्रराशिमें हो यद्वा अपने वा मित्रके अंशादिकोंमें शयनावस्थाका जन्मकालमें हो तो फल पूर्ण देता है उक्त भवनोंसे अन्य गृहोंमें हो तो दुष्ट जनोंका पूज्य होवे। राहुके समान केतुका भी फल जानना॥ १२-१४॥

अथ विशेषफलानि।

यदि निद्रागतः पापः सप्तमे पापपीडितः ॥
तदा जायाविनाशः स्याच्छुभयोगेक्षणान्नहि ॥१५॥
निद्रितो रिपुगेहस्थो रिपुयुक्तेक्षितो मदे।

भार्या विनश्यति क्षिप्रं विधिना रक्षितापि चेत्॥१६॥
शुभयोगेक्षणादेका विनश्यति परा नहि ॥
शुभाशुभदृशा भार्या कष्टयुक्ता नृणां भवेत् ॥ १७ ॥

विशेषफल अवस्थाओंके कहते हैं कि, यदि कोई पापग्रह निद्रा अवस्थामें प्राप्त सप्तमस्थानमें पापपीडित हो तो स्त्रीनाश होवे,यदि उसपर शुभग्रहकी दृष्टि हो वा शुभग्रहसे युक्त हो तो स्त्री कष्ट भोगकर बचजायगी ॥ १५ ॥ निद्राअवस्थावाला कोईभी ग्रह छठे भावमें शत्रुग्रहसहित वा उससे दृष्ट हो अथवा ऐसाही सप्तम स्थानमें हो तो शीघ्रही स्त्री नष्ट होवे यदि विधाताभी रक्षा करने आवें तौ भी नहीं रहै ॥१६॥ यदि ऐसे ग्रह शुभयुक्त हों या उन पर शुभ ग्रहोंकी दृष्टि हो तो एक स्त्री मरे दूसरीसे गृहस्थसुख होवे यदि शुभ पाप दोनहूंसे दृष्ट वा युक्त हो तो स्त्री कष्टयुक्त रहै१५–१७॥

पुत्रसुखयोगः ।

अपत्यभावे यदि तुङ्गगेहे निजालये पापयुतेक्षितश्चेत् ॥ निद्रागतोपत्यविनाशकारी शुभेक्षितश्चैकसुतस्य हन्ता ॥ १८ ॥

यदि कोई ग्रह पंचमभावमें अपने उच्च वा अपनी राशिका होकर निद्रावस्थामे हो तथा पापग्रहसे युक्त वा दृष्ट हो तो संतानका नाश करता है उस ग्रहपर शुभ ग्रहकी भी दृष्टि हो तो एक पुत्रकी हानि करता है औरकी नही ॥ १८ ॥

अपमृत्युयोगः ।

राहुणा सहितौ यस्य निधनस्थौ कुजार्कजौ ॥
अपमृत्युर्भवेत्तस्य शस्त्रघातान्न संशयः ॥ १९ ॥
निधनेऽपि शुभो यस्य पापारिग्रहवीक्षितः ॥
तदा मृत्युर्विजानीयादाहवे शस्त्रपीडनात् ॥ २० ॥

जिसके अष्टमस्थानमें राहुसहित मंगल शनि हों इनमेंसे कोई निद्रावस्थामें हो तो उसकी अपमृत्यु शस्त्रके कटनेसे होवे, इसमें संदेश नहीं ॥ १९ ॥ जिसके अष्टमभावमें शुभग्रहभी पाप अथवा शत्रुग्रहसे दृष्ट वा युक्त हो तो उसकी मृत्यु संग्राममें शस्त्रसे होवे (यहां भी संबंधसे निद्रावस्था विचारणीय है) ॥ २० ॥

अथारिकृततीर्थकृतमृत्युयोगौ ।

यदा निद्रायुक्तो निधनभवनं पापमिलितः
शयानो वा मृत्युं व्रजति रिपुकोपेन मनुजः ॥
शुभैर्दृष्टो युक्तो निजपतियुतो वान्तसमये
नरो गङ्गामेत्य व्रजति हरिसायुज्यपदवीम् ॥ २१ ॥

यदि कोई ग्रह पापयुक्त अष्टमस्थानमें निद्रावस्थामें या शयनावस्थामें हो तो शत्रुके कोपसे मृत्यु पावे और वही ग्रह शुभग्रहोंसे दृष्ट वा युक्त हो अथवा अष्टमेश अष्टम हो तो मृत्युसमयमें वह मनुष्य गंगा पायकर विष्णुका सायुज्यपद (मुक्ति) पावे ॥२१॥

अथ पुण्यक्षेत्रलाभयोगः ।

यदा पश्येदंगं तनुभवननाथोष्टमपति-
र्मृतिं धर्माधीशो जनुपि च तपःस्थानमथवा ॥
शुभाभ्यामाक्रान्तं नवमभवनं पापरहितं
वरक्षेत्रं प्राप्य व्रजति मनुजो मोक्षपदवीम् ॥ २२ ॥

इति श्रीभावकुतूहले स्थानवशेनग्रहावस्थाविचारकथनं नामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

यदि जन्मसमयमें लग्नेश लग्नको, अष्टमेश अष्टभावको और नवमेश नवम भावको देखे अथवा इनमेंसे एकभी अपने स्थानका देखनेवाला हो तथा दो शुभग्रहोंसे युक्त, पापोंसे रहित नवम हो तो मरणसमयमें उत्तम क्षेत्र (पुण्यस्थान) पायके मुक्तिपदको प्राप्त हो २२

इति भावकुतूहले माहीधरीभाषाटीकायां ग्रहावस्थाविचाराऽध्यायः ॥११॥

द्वादशोऽध्यायः ।

अथ ग्रहाणां प्रत्येकावस्थाफलानि ।

तत्रादौ सूर्यस्य ।

मन्दाग्निरोगो बहुधा नराणां स्थूलत्वमंघ्रेरपि पित्त कोपः ॥ व्रणं गुदे शूलमुरःप्रदेशे यदोष्णभानौ शयनं प्रयाते ॥ १ ॥

शयनादि १२ अवस्थाओंके प्रत्येकके फल कहते हैं कि-यदि सूर्य शयनावस्थामें हो तो मनुष्योंको सर्वदा मंदाग्नि (क्षुधामंद, पाचनशक्ति न्यून) रहे पैर स्थूल हों, पित्तका विशेषतः कोप रहै, गुदामें व्रण होवे, हृदयमें शूल रहे ॥ १ ॥

दरिद्रताभारविहारशाली विवाद-विद्याभिरतो नरः स्यात् ॥ कठोरचित्तः खलु नष्टवित्तः सूर्ये यदा चेदुपवेशनस्थे ॥ २ ॥

जो सूर्य उपवेशनावस्थामें हो तो दरिद्री रहे, पराया भार ढोनेवाला सर्वदा रहे, कलहही विद्या जाने और वह मनुष्य (कठोरचित्त) निर्दयी होवे और वित्त उसका नष्ट होवे ॥ २ ॥

नरः सदानन्दधरो विवेकी परोपकारी बलवित्त-युक्तः ॥ महासुखी राजकृपाभिमानी दिवाधिनाथे यदि नेत्रपाणौ ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यका सूर्य नेत्रपाणि अवस्थामें हो वह सर्वदा आनंदमें रहे, विवेकवाला होवे, पराया उपकार करे, बलवान् एवं धनवान् रहे, बडा सुख भोगता रहे, राजकृपासे अभिमानयुक्त रहे॥३॥

उदारचित्तः परिपूर्णवित्तः सभासु वक्ता बहुपुण्य-कर्त्ता ॥ महाबली सुंदररूपशाली प्रकाशने जन्मनि पद्मिनीशे ॥ ४ ॥

जिसके जन्ममें सूर्य प्रकाशनावस्थामें हो वह उदारचित्त(देनेवाला) होवे,धनसे परिपूर्ण (संपन्न) रहे,सभामें चातुर्यसहित वार्त्ता करे, वहुत पुण्य करे, बडा वलवान् होवे,सुन्दररूपवान् होवे॥ ४॥

प्रवासशाली किल दुःखमाली सदालसी धीधनवर्जितश्च ॥ भयातुरः कोपपरो विशेषाद्दिवाधिनाथे गमने मनुष्यः ॥ ५ ॥

यदि सूर्य गमनावस्थामें हो तो मनुष्य नित्य परदेश रहनेवाला होवे, निश्चय सर्वदा अनेक दुःखोंसे युक्त रहै, आलसी (निरुद्यमी) बुद्धि और धनसे रहित रहे, भयसे आतुर रहे, विशेपतासे कोप (गुस्सा) युक्त रहे ॥ ५ ॥

परदाररतो जनतारहितो वहुधाऽऽगमने गमनाभिरुचिः ॥ कृपणः खलताकुशलो मलिनो दिवसाधिपतौ मनुजः कुमतिः ॥ ६ ॥

सूर्य जिसके जन्ममें आगमनावस्थामें हो वह पराई स्त्रियोंमें तत्पर रहे, वहुत मनुष्योंकी संगतिसे रहित (अकेला)रहे,वाहुल्यसे गमन (सफर) की इच्छा किया करे, कृपण (मूंजी) होवे, दुष्टतामें निपुण और मलिन भी होवे ॥ ६ ॥

सभागते हिते नरः परोपकारतत्परः
सदार्थरत्नपूरितो दिवाकारो गुणाकरः ॥
वसुन्धरानवाम्बरालयान्वितो महावली
विचित्रवत्सलः कृपाकलाधरः परः ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यका मित्रस्थानस्थित सूर्य सभावस्थामें हो वह पराये उपकार करनेमें तत्पर रहे, सर्वदा धन एवं रत्नोंसे भरा रहे,

गुणोंकी खान होवै पृथ्वी (जमीन) का मालिक होवे,नवीन वस्त्र और घरोंसे युक्त रहे, बडा बलवान् होवे,अनेक प्रकारके मित्र रक्खे और उनका प्रिय होवै और परम कृपाकी कला उसके हृदयमें जागृत रहै ॥ ७ ॥

क्षोभितो रिपुगणैः सदा नरश्चञ्चलः खलमतिः कृशस्तथा ॥ धर्मकर्मरहितो मदोद्धतश्चागमे दिनपतौ यदा तदा ॥ ८ ॥

सूर्य जिसका आगमअवस्थामें हो वह शत्रुसे कंपायमान रहै, चञ्चल होवै, कुटिलबुद्धि (दुष्टता करनेवाला) होवै, शरीर कृश रहै, धर्मकर्मसे रहित रहे मदसे उछलता रहे ॥ ८ ॥

सदाङ्गसन्धिवेदना पराङ्गनाधनक्षयो
बलक्षयः पदे पदे यदा तदा हि भोजने ॥
असत्यता शिरोव्यथा तथा वृथान्नभोजनं
खावसत्कथारतिः कुमार्गगामिनी मतिः ॥ ९ ॥

सूर्य भोजनावस्थामें जिसका हो उससे सर्वदा शरीरकी सन्धियोंमें पीडा रहे, परस्त्रीके संसर्गसे धन एवं बलका क्षय पैर पैर पर हो,असत्यवादी हो, शिरमें रोग रहे,खायापिया व्यर्थ जावे, यद्वा अन्न पचे नहीं,अनिष्टवार्तामें रुचि रहे,कुमार्ग चलनेकी बुद्धि होवे९

विज्ञलोकैः सदा मंडितः पंडितः काव्यविद्यानवद्यप्रलापान्वितः ॥ राजपूज्यो धरामण्डले सर्वदा नृत्यलिप्सागते पद्मिनीनायके ॥ १० ॥

जिसका सूर्य नृत्यलिप्सावस्थामें हो वह सर्वदा विद्या जाननेवाला लोगोंसे शोभित रहे,पंडित होवे,काव्यविद्यामें बडी वाचाल शक्ति होवे, राजासे पूजा (आदर) पावे,पृथ्वीमेंभी पूज्य होवे१०॥

सर्वदानन्दधर्ता जनो ज्ञानवान् यज्ञकर्ता धराधीशसद्मास्थितः ॥ पद्मबंधावरातीभपंचाननः काव्यविद्याप्रलापी मुदा कौतुके ॥ ११ ॥

सूर्य जिसका कौतुकावस्थामें हो वह सर्वदा प्रसन्नताको धारण करता है, ज्ञानवान्, यज्ञ करनेवाला, राजद्वारमें रहनेवाला होवे, शत्रुरूपी हाथियोंके ऊपर सिंहसमान प्रतापी होवे, काव्यविद्यामें अतिवाक्शक्तिवाला मनुष्य होवे ॥ ११ ॥

निद्राभरारक्तनिभे भवेतां निद्रागते लोचनपद्मयुग्मे ॥ रवौ विदेशे वसतिर्जनस्य कलत्रहानिः कतिधार्थनाशः ॥ १२ ॥

जिसका सूर्य निद्रावस्थामें हो उसके नेत्र नींदसे भरे हुए रुधिरके समान लालरंगके रहें, विदेशमें निवास पावे और स्त्री हानि एवं कितने ही वार धननाश होवे ॥ १२ ॥

अथ चन्द्रस्य ।

जनुःकाले क्षपानाथे शयनं चेदुपागते ॥
मानी शीतप्रधानी च कामी वित्तविनाशकः ॥ १ ॥

जिसके जन्मसमयमें चन्द्रमा शयनावस्थामें हो वह मानी (इज्जतवाला) होवे, शरीरमें शीतप्रधान रहे, अतिकामी होवे, धनका नाश अपने हाथसे किसी व्यसनमें करे ॥ १ ॥

रोगार्दितो मन्दमतिर्विशेषाद्वित्तेन हीनो मनुजः कठोरः ॥ अपायकारी परवित्तहारी क्षपाकरे चेदुपवेशनस्थे ॥ २ ॥

जिसका चन्द्रमा उपवेशनावस्थामें हो वह रोगसे पीडित रहे,

मन्द (जड) बुद्धि होवे, विशेषतः धनसे हीन रहे,कठोर स्वभाव होवे,पराया नाश करे,पराया धन लुटानेवाला भी वह होवे ॥ २ ॥

नेत्रपाणौ क्षपानाथे महारोगी नरो भवेत् ॥
अनल्पजल्पको धूर्तः कुकर्मनिरतस्सदा ॥ ३ ॥

चन्द्रमा जिसका नेत्रपाणि अवस्थामें हो वह मनुष्य महारोगी (राजरोग आदि बडे रोगवाला) होवे तथा बहुत वाचाल, धूर्त होवे और सर्वदा कुकर्मोंमें तत्पर रहे ॥ ३ ॥

यदा राकानाथे गतवति विकासं च जनने
विकासः संसारे विमलगुणराशेरवनिपात् ॥
नवा शालामाला करितुरगलक्ष्म्या परिवृता
विभूषायोषाभिः सुखमनुदिनं तीर्थगमनम् ॥ ४ ॥

यदि जन्ममें चंद्रमा विकासावस्थामें हो तो मनुष्य संसारमें निर्मलगुणोंके समूहसे विकसित (प्रफुल्लित) रहे तथा राजासे हाथी घोडे और धनोंसे संयुक्त, नवीन मकानोंका समूह मिले एवं भूषण और स्त्रियोंसे नित्य सुख पावे तथा तीर्थयात्रा करे ॥ ४ ॥

सितेतरे पापरतो निशाकरे विशेषतः क्रूरतरो नरो भवेत् ॥ सदाक्षिरोगैःपरिपीडयमानो वलक्षपक्षे गमने भयातुरः ॥ ५ ॥

यदि कृष्णपक्षका चंद्रमा गमनावस्थामें हो तो विशेषतः मनुष्य अतिक्रूर स्वभाववाला होवे, सर्वदा नेत्ररोगसे पीडित रहे और शुक्लपक्षका हो तो सर्वदा भयातुर रहे ॥ ५ ॥

विघावागमने मानी पादरोगी नरो भवेत् ॥
गुप्तपापरतो दीनो मतितोषविवर्जितः ॥ ६ ॥

चंद्रमा आगमनावस्थामें हो तो मानी (इज्जत यद्वा गर्ववाला) होवै, पैरोंमें रोग रहे, गुप्तपाप करनेमें तत्पर रहे, दुःखी होवे, बुद्धि और संतोषसे वर्जित रहे ॥ ६ ॥

सकलजनवदान्यो राजराजेन्द्रमान्यो
रतिपतिसमकान्तिः शान्तिकृत्कामिनीनाम् ॥
सपदि सदसि याते चारुविंबे शशाङ्के
भवति परमरीतिप्रीतिविज्ञो गुणज्ञः ॥ ७ ॥

पूर्ण चंद्रमासभावस्थामें हो तो मनुष्यसमस्त मनुष्योंमें वदान्य (चतुर) होवै, राजा तथा चक्रवर्तियोंका माननीय होवै, कामदेवके समान सुंदरकांति होवे,युवास्त्रियोंको कामक्रीडामें शांति करनेवाला होवे, प्रेमकला जाननेवाला होवे, गुणोंको पहिचाने ॥ ७ ॥

विधावागमने मर्त्यो वाचालो धर्मपूरितः ॥
कृष्णपक्षे द्विभार्यः स्याद्रोगी दुष्टतरो हठी ॥ ८ ॥

चंद्रमा आगमावस्थामें हो तो अति बोलनेवाला, धर्मसे परिपूर्ण होवै, यदि कृष्णपक्षका चंद्रमा उक्त अवस्थामें हो तो दो स्त्री होवें, रोगी रहे, अतिदुष्ट स्वभाव और हठ करनेवाला होवे ॥८॥

भोजने जनुषि पूर्णचन्द्रमा मानयानजनतासुखं नृणाम् ॥ आतनोति वनितासुतासुखं सर्वमेव न सितेतरे शुभम् ॥ ९ ॥

जिनको जन्मकालमें पूर्णमंडल चंद्रमा भोजनावस्थामें हो वह मानवाला होवै, सवारी तथा मनुष्योंका सुख पावै तथा स्त्रीसुख, कन्यासुख भी होवै और कृष्णपक्षमें नहीं होते ॥ ९ ॥

नृत्यलिप्सागते चन्द्रे सबले बलवान्नरः ॥
गीतज्ञो हि रसज्ञश्च कृष्णे पापकरो भवेत् ॥ १० ॥

बली चंद्रमा नृत्यलिप्सा अवस्थामें हो तो मनुष्य बलवान् होवै गीत (गायन) जाने, शृंगारादिरसोंको जाने और कृष्णपक्षका चन्द्रमा हो तो पाप करनेवाला होवे ॥ १० ॥

कौतुकभवनं गतवति चन्द्रे भवति नृपत्वं वा धनपत्वम् ॥ कामकला सु सदा कुशलत्वं वारवधूरतिरमणपटुत्वम् ॥ ११ ॥

चंद्रमा कौतुकावस्थामें हो तो मनुष्य राजा होवै;अथवा धनका मालिक होवै और कामकला (रतिक्रीडामें)सर्वदा चातुर्य रक्खे वारांगनाओंके साथ रतिक्रीडामें चातुर्य पावै ॥ ११ ॥

निद्रागते जन्मनि मानवानां कलाधरे जीवयुते महत्त्वम् ॥ यदाऽगुणाः संचितवित्तनाशः शिवालये रौति विचित्रमुच्चैः ॥ १२ ॥

यदि मनुष्योंके जन्मसमयमें पूर्णचन्द्रमा बृहस्पतियुक्त निद्रावस्थामें हो तो महत्त्व (बडप्पन) पावे, कृष्णपक्षका हो तो गुण अवगुण होवें, संचय कियेहुए धनादिका नाश होवे दुःखसे शिवालय(शिवमंदिर) में अनेक प्रकारके स्वरोंसे ऊंचा रोदन करे यद्वा उसके गृहमें स्यार अनेक प्रकारके स्वरोंसे ऊंचा रोदन करैं अर्थात् शोक, दरिद्रसे ग्रस्त होवे ॥ १२ ॥

अथ भौमस्य फलम् ।

शयने वसुधापुत्रे जन्मकाले जनो भवेत् ॥
बहुना कण्डुना युक्तो दद्रुणा च विशेषतः ॥ १ ॥

जन्मसमयमें मंगल जिसका शयनावस्थामें हो उसके अंगोंमें बहुतसी कण्डु (खुजली) रहाकरे,विशेषतः(दद्रु)दादभी होवे॥१॥

---

१ "यदाङ्गनासञ्चितवित्तनाशः" इ०पा० । स्त्रीका नाश और सञ्चित धनका नाश होवे ।

वली सदा पापरतो नरः स्यादसत्यवादी नितरां प्रगल्भः ॥ धनेन पूर्णो निजधर्महीनो धरासुते चेदुपवेशनस्थे ॥ २ ॥

मंगल उपवेशनावस्थामें हो तो मनुष्य बलवान् होवे, सर्वदा पापकर्ममें तत्पर, झूठ बोलनेवाला, निरंतर वाग्वादचतुर, धनसे परिपूर्ण, स्वधर्मसे हीन होवे ॥ २ ॥

यदा भूमिसुते लग्ने नेत्रपाणिमुपागते ॥
दरिद्रता सदा पुंसामन्यभे नगरेशता ॥ ३ ॥

यदि मंगल नेत्रपाणि अवस्थाके लग्नमें हो तो मनुष्योंको सर्वदा दरिद्रता रहे, अन्य भावमें हो तो नगरके स्वामी होवें ॥ ३ ॥

प्रकाशो गुणस्य प्रवासः प्रकाशे धराधीशभर्तुः सदा मानवृद्धिः ॥ सुते भूसुते पुत्रकान्तावियोगो युते राहुणा दारुणो वा निपातः ॥ ४ ॥

मंगल प्रकाशावस्थामें हो तो गुणका प्रकाश होवे, परदेशमें नित्य निवास होवे, राजासे सर्वदा मान बढता रहे, यदि उक्त अवस्थाका मंगल पंचमभावमें हो तो स्त्री, पुत्रका वियोग (विछोह) पावे, यदि उसके साथ राहु भी हो तो वृक्षादिसे गिर पडे ॥ ४ ॥

गमने गमनं कुरुतेऽनुदिनं व्रणजालभयं वनिताकलहम् ॥ बहुदद्रुककण्डुभयं बहुधा वसुधातनयो वसुहानिमरेः ॥ ५ ॥

मंगल गमनावस्थामें हो तो प्रतिदिन गमन (सफर) करता है, अनेक प्रकारके व्रणका भय, स्त्रीकलह करता है और दाद, खुजलीको भी बहुत करता है. शत्रुसे धनहानि होती है ॥ ५ ॥

१ 'करः' इति पाठांतरम् ।

आगमने गुणशाली मणिमाली करालकरवाली ॥
गजगंता रिपुहंता परिजनसंतापहारको भौमे ॥ ६ ॥

मंगल आगमनावस्थामें हो तो पुरुष अनेक गुणोंसे युक्त हो, मणियोंकी माला पहिने, तीक्ष्ण खड्गोंको धारण करनेवाला हो, हाथीकी सवारी करे, शत्रुको मारे, आत्मीय जनोंका सन्ताप हरण करनेवाला होवे ॥ ६ ॥

तुंगे युद्धकलाकलापकुशलो धर्मध्वजो वित्तपः
कोणे भूमिसुते सभासुपगते विद्याविहीनःपुमान्॥
अन्तेऽपत्यकलत्रमित्ररहितः प्रोक्तेतरस्थानगेऽ-
वश्यं राजसभाबुधो बहुधनी मानी च दानी जनः७

उच्चराशिका मङ्गल सभावस्थामें हो तो युद्धविद्याकी समस्त युक्ति जाने, तथा धर्मका ध्वज अर्थात् बडा धर्मात्मा और धनवान् (धनका स्वामी) होवे । यदि ९ । ५ स्थानमें हो तो पुरुष विद्याहीन (मूर्ख) होवे,बारहवें स्थानमें हो तो स्त्री, पुत्र, मित्रोंसे रहित रहे, उक्त स्थानोंसे अन्यमें हो तो अवश्य राजाके सभाका पंडित होवे, तथा बहुत धनवान्, मानवाला, दानी भी होवे ॥ ७ ॥

आगमे भवति भूमिजे जनो धर्मकर्मरहितो गदातुरः॥
कर्णमूलगुरुशूलरोगवानेव कातरमतिः कुसंगमी ॥८॥

मङ्गल आगमावस्थामें हो तो धर्म कर्मसे रहित, रोगसे आतुर रहे, कानके नीचे बडा शूलरोग रहै, कायर तथा कुसङ्गी होवै॥८॥

भोजने मिष्टभोजी च जनने सबले कुजे ॥
नीचकर्मकरो नित्यं मनुजो मानवर्जितः ॥ ९ ॥

जन्ममें बलवान् मङ्गल भोजनावस्थामें हो तो मिष्टान्न खाने-

वाला होवे तथा सर्वदा नीचकर्म करे, मान (अहंकार वा इज्जत) से रहित रहै ॥ ९ ॥

नृत्यलिप्सागते भूसुते जन्मिनामिन्दिराराशिरायाति भूमीपतेः ॥ स्वर्णरत्नप्रवालैः सदा मण्डिता वासशाला विशाला नराणां भवेत् ॥ १० ॥

मङ्गल नृत्यलिप्सा अवस्थामें हो तो मनुष्योंको राजासे वहुत लक्ष्मी (धन) आवे तथा रहनेका गृह सर्वदा सोना, रत्न, मूंगा आदिकोंसे शोभित और वहुत भारी होवे ॥ १० ॥

कौतुकी भवति कौतुके कुजे मित्रपुत्रपरिपूरितो जनः ॥ उच्चगे नृपतिगेहपण्डितो मण्डितो बुधवरैर्गुणाकरैः ॥ ११ ॥

मङ्गल कौतुकावस्थामें हो तो मनुष्य खेल तमाशा करनेवाला वा उसमें प्रेम रखनेवाला होवे, मित्र,पुत्रोंसे परिपूर्ण रहे,यदि मङ्गल उच्चका भी हो तो राजाके दर्वारका पंडित होवे और वहुत गुणवान् पंडित श्रेष्ठोंसे शोभित रहे ॥ ११ ॥

निद्रावस्थागते भौमे क्रोधी धीधनवर्जितः ॥ धूर्तो धर्मपरिभ्रष्टो मनुष्यो गदपीडितः ॥ १२ ॥

मङ्गल निद्रावस्थामें हो तो मनुष्य क्रोधी होवे, बुद्धि तथा धनसे वर्जित रहे, धूर्त होवे, धर्मसे भ्रष्ट रहे और रोगसे पीडित रहे॥१२॥

अथ बुधावस्थाफलानि ।

क्षुधातुरो भवेदङ्गे खञ्जो गुञ्जानिभेक्षणः ॥ अन्यभे लंपटो धूर्तो मनुजः शयने बुधे ॥ १ ॥

बुध शयनावस्थामें लग्नका हो तो भूंखसे सर्वदा आतुर रहे, लँगडा होवे, नेत्र लाल गुञ्जाके समान होवें और उक्त अवस्थाका अन्यभावोंमें हो तो लंपट (लोभी) और धूर्त भी होवे ॥ १ ॥

शशांकपुत्रे जनुरङ्गगेहे यदोपवेशो गुणराशिपूर्णः॥ पापेक्षिते पापयुते दरिद्रो हितोच्चभे वित्तसुखी मनुष्यः ॥ २ ॥

बुध जन्ममें लग्नका उपवेशावस्थामें हो तो समस्त गुणोंके समूहसे पूरित रहे, पापदृष्ट अथवा पापयुक्त हो तो दरिद्री होवे, यदि मित्रराशि वा उच्चराशिमें हो तो मनुष्य धनसे सुखी रहे ॥ २ ॥

विद्याविवेकरहितो हिततोषहीनो मानी जनो भवति चन्द्रसुतेऽक्षिपाणौ ॥ पुत्रालये सुतकलत्रसुखेन हीनः कन्याप्रजो नृपतिगेहवुधो वरार्यः ॥ ३ ॥

बुध नेत्रपाणि अवस्थामें हो तो मनुष्य विद्या एवं विवेक (सदसज्ज्ञान)से रहित होवे, भलाई किसीकी न करे,संतोपभी न रक्खे, गर्ववाला होवे.यदि उक्त बुध पञ्चमभावमें होतो पुत्र और स्त्रीके सुखसे हीन रहे, कन्या संतति होवे, राजद्वारका पंडित तथा श्रेष्ठ होवे॥३॥

दाता दयालुः खलु पुण्यकर्त्ता विकासने चन्द्रसुते मनुष्यः ॥ अनेकविद्यार्णवपारगन्ता विवेकपूर्णः खलगर्वहन्ता ॥ ४ ॥

बुध विकासावस्थामें हो तो मनुष्य दाता (देनेवाला) दयावान्, निश्चयसे पुण्य करनेवाला और अनेक विद्याओंके समुद्रके पार पहुँचनेवाला, विवेकसे परिपूर्ण, दुष्टोंके गर्व (घमंड) का तोडनेवाला होवे ॥ ४ ॥

गमनागमने भवतो गमने बहुधा वसुधा वसुधाधिपतः ॥ भवनं च विचित्रमलं रमया विदि वुश्च जनुः समये नितराम्॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मसमयमें बुध गमनावस्थामें हो उसको नित्य गमागम (जाना, आना) होता रहे, बहुतायत करके राजासे भूमि मिले, अनेक प्रकारकी शोभासे युक्त और लक्ष्मीसे पूर्ण गृहमिले५॥

सपदि विदि जनानामुच्चभे जन्मकाले सदसि धनसमृद्धिः सर्वदा पुण्यवृद्धिः॥ धनपतिसमता वा भूपता मन्त्रिता वा हरिहरपदभक्तिः सात्त्विकी मुक्तिरद्धा ॥ ६ ॥

बुध जन्मकालका सभावस्थामें हो तो मनुष्योंको सर्वदा धनकी संपन्नता रहे, पुण्यकी उत्तरोत्तर वृद्धि होती रहे, धनमें कुबेरकी समानता पावे, अथवा (राजत्व) हाकिमी मिले, यद्वा (मंत्रिता) वजीरी मिले और विष्णु एवं शिवके चरणोंमें भक्ति हो और साक्षात् सात्त्विकी मुक्ति होवे ॥ ६ ॥

आगमे जनुषि जन्मिनां यदा चन्द्रजे भवति हीनसेवया ॥ अर्थसिद्धिरपि पुत्रयुग्मता बालिका भवति मानदायिका ॥ ७ ॥

यदि मनुष्योंके जन्ममें बुध आगमावस्थामें हो तो नीचजनकी सेवा करनेसे कार्यसिद्धि होवे तथा दो पुत्र होवें और एक कन्या अति सुलक्षणा सन्मान देनेवाली होवे ॥ ७ ॥

भोजने चन्द्रजे जन्मकाले यदा जन्मिनामर्थहानिः सदा वादतः ॥ राजभीत्या कृशत्वं चलत्वं मते-रङ्गसङ्गो न जाया न मायाः सुखम् ॥ ८ ॥

बुध भोजनावस्थामें जन्मकालका हो तो मनुष्योंकी सर्वदा विवाद (कलह) से धनहानि होवे, राजाके भयसे कृशत्व (माडा-पन) आवै, बुद्धि चंचल रहे (स्थिर न रहे) तथा स्त्रीका सुख और धनका सुख भी न होवे ॥ ८ ॥

नृत्यलिप्सागते चन्द्रजे मानवो मानयानप्रवाल-
व्रजैः संयुतः॥ मित्रपुत्रप्रतापैः सभापण्डितः पापभे
वारवामारतो लम्पटः ॥ ९ ॥

जिसके जन्मसमयमें बुध नृत्यलिप्सा अवस्थामें हो वह मनुष्य (मान) इज्जत, सवारी, मूँगा आदि रत्नसमूहसे युक्त रहे तथा मित्र पुत्र संयुक्त रहे, प्रतापवान् होवे, सभामें (पंडित) चतुर होवे. यदि पाप राशिमें हो तो वारांगना (पतुरिया) के साथ रति-क्रीडामें लंपट (व्यसनी) होवे ॥ ९ ॥

कौतुके चन्द्रजे जन्मकाले नृणामङ्गभे गीत-
विद्यानवद्या भवेत् ॥ सप्तमे नैधने वारवध्वा रतिः
पुण्यभे पुण्ययुक्ता जनिः सद्गतिः ॥ १० ॥

जिन मनुष्योंके जन्मकालमें बुध कौतुकावस्थामें लग्नका हो उनको प्रशंसा करने योग्य गायनविद्या आवे । यदि उक्त बुध ७।८ भावमें हो तो वारांगनासे प्रीति होवे, नवमभावमें हो तो सारा जन्म पुण्य करते बीते, अंतमें सद्गति (मुक्ति) होवे ॥ १० ॥

निद्राश्रिते चन्द्रसुते न निद्रासुखं सदा व्याधिस-
माधियोगः॥ सहोत्थवैकल्यमनल्पतापो निजेन
वादो धनमाननाशः ॥ ११ ॥

बुध निद्रावस्थामें हो तो निद्राका सुख न पावे और सर्वदा शारीरिक तथा मानसिक व्यथासे युक्त रहे, भ्रातृपक्षसे विकलता (चिंता) रहे, बडा संताप रहे, अपने मनुष्योंसे कलह होता रहे, धन एवं मानका नाश होवे ॥ ११ ॥

अथ गुरोरवस्थाफलम् ।

वचसामधिपे तु जनुःसमये शयने बलवानपि

हीनरवः ॥ अतिगौरतनुः खलु दीर्घहनुः सुतरा-
मरिभीतियुतो मनुजः ॥ १ ॥

जन्म समयमें बृहस्पति शयनावस्थामें हो तो मनुष्य बलवान् हुएमें भी स्वरहीन (अल्प आवाजवाला) होवे, शरीर अति गौर-वर्ण, ठोडी लंबी होवे, शत्रुका भय निरंतर बना रहे ॥ १ ॥

उपवेशं यदि गतवति जीवे वाचालो बहुगर्वप-
रीतः ॥ क्षोणीपतिरिपुजनपरितप्तः पदजंघास्य-
करव्रणयुक्तः ॥ २ ॥

बृहस्पति यदि उपवेशावस्थामें हो तो बडा वाचाल, बडे गर्व (घमंड) से भरा होवे तथा राजा और शत्रुसे सर्वदा संतापयुक्त रहे और पैर, जंघा, मुख, हाथोंमें व्रण (घाव) रहा करें ॥ २ ॥

नेत्रपाणौ गते देवराजार्चिते रोगयुक्तो वियुक्तो
वरार्थश्रिया ॥ गीतनृत्यप्रियः कामुकः सर्वदा
गौरवर्णो विवर्णोद्भवप्रीतियुक् ॥ ३ ॥

बृहस्पति नेत्रपाणि अवस्थामें हो तो मनुष्य रोगयुक्त रहे, श्रेष्ठ धन एवं शोभासे रहित रहे । गीत नाचको प्रिय माने, सर्वदा अतिकामी रहे, गोरा रंग शरीरका होवे, विवर्णोद्भव अर्थात् विजातीय मनुष्योंसे प्रीति रक्खे ॥ ३ ॥

गुणानामानन्दं विमलसुखकन्दं वितनुते
सदा तेजःपुञ्जं व्रजपतिनिकुञ्जं प्रति गमम् ॥
प्रकाशं चेदुच्चैर्द्रुतमुपगतो वासवगुरु-
र्गुरुत्वं लोकानां धनपतिसमत्वं तनुभृताम् ॥ ४ ॥

बृहस्पति प्रकाशावस्थामें हो तो मनुष्यको गुणोंके आनंदवाला

निर्मल सुखका भाजन करता है, सर्वदा तेजपुंजके सदृश बनाये रहता है, श्रीकृष्णके समान कुंज (वन उपवनों) में विहार करता है अथवा भक्तिसे भगवान्‌के भवनमें प्राप्त होता है. समस्त लोकोंमें श्रेष्ठता पाता है. समृद्धिमें कुबेरके समान होता है. इतने पूरे फल मनुष्योंको बृहस्पतिके प्रकाशावस्था उच्चादिमें प्राप्त होनेसे होते हैं ॥ ४ ॥

साहसी भवति मानवः सदा मित्रपुत्रसुखपूरितो मुदा ॥ पण्डितो विविधवित्तमण्डितो वेदविद्यदि गुरौ गमं गते ॥ ५ ॥

बृहस्पति गमनावस्थामें हो तो मनुष्य सर्वदा साहसी तथा मित्र पुत्र सुखसे परिपूर्ण रहे, पंडित होवे, अनेक प्रकारके धनोंसे शोभित रहे और वेदको जाने ॥ ५ ॥

आगमने जनता वरजाया यस्य जनुःसमये हरिमाया ॥ मुंचति नालमिहालयमद्धा देवगुरौ परितः परिवद्धा ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्म समयमें बृहस्पति आगमावस्थामें हो तो उसके बहुत मनुष्य रहें, स्त्री श्रेष्ठ मिले, उसके घरको साक्षात् लक्ष्मी कदापि न छोडे चारों ओरसे बँधी हुई जैसी रहे ॥ ६ ॥

सुरगुरुसमवक्ता शुभ्रमुक्ताफलाढ्यः सदसि सपदि पूर्णो वित्तमाणिक्ययानैः ॥ गजतुरगरथाढ्यो देवताधीशपूज्ये जनुषि विविधविद्यागर्भितो मानवः स्यात् ॥ ७ ॥

बृहस्पति जन्ममें सभावस्थामें हो तो बृहस्पतिके समान शास्त्रवक्ता पंडित होवे, शुभ्र (श्वेत) मोतियोंसे युक्त रहे. धन, मणि, सवारी आदिकोंसे सर्वदा परिपूर्ण रहे. हाथी, घोडे रथोंसे युक्त रहे और वह मनुष्य अनेक विद्याओंसे गर्भित (भरा हुआ) रहे ॥ ७ ॥

नानावाहनमानयानपटलीसौख्यं गुरावागमे
भृत्यापत्यकलत्रमित्रजसुखं विद्यानवद्या भवेत् ।
क्षोणीपालसमानतानवरतं चातीव हृद्या मतिः
काव्यानन्दरतिःसदा हितगतिःसर्वत्र मानोन्नतिः ८॥

बृहस्पति आगमावस्थामें हो तो अनेक प्रकारके वाहन (हाथी, घोडे,रथ आदि) मान और यान (पालकी आदिकों) के समूहका सुख होवे, तथा सेवक (नौकर), पुत्र, स्त्री, मित्रोंका सुख मिले, दोषरहित विद्या आवे, राजाके समान ऐश्वर्यमें सर्वदा रहे,अतिरमणीय बुद्धि होवे, काव्यरसके आनंदमें प्रेम रहे, सर्वदा हितकारी चाल रहे, सर्वत्र मानकी उन्नति होती रहे ॥ ८ ॥

भोजने भवति देवतागुरौ यस्य तस्य सततं
सुभोजनम् ॥ नैव मुंचति रमालयं तदा
वाजिवारणरथैश्च मण्डितम् ॥ ९ ॥

बृहस्पति भोजनावस्थामें जिसके हो उसको उत्तम पदार्थ भोजनको मिलते रहें तथा उसके घोडे, हाथी, रथोंसे युक्त घरको लक्ष्मी कदापि न छोडे ॥ ९ ॥

नृत्यलिप्सागते राजमानी धनी देवताधीशवन्द्ये
सदा धर्मवित् ॥ तन्त्रविज्ञो बुधैर्मण्डितः पण्डितः
शब्दविद्यानवद्यो हि सद्यो जनः ॥ १० ॥

बृहस्पति नृत्यलिप्सावस्थामें हो तो मनुष्य राजमानवाला, धनवान्, सर्वदा धर्म जाननेवाला, तन्त्रशास्त्र वा युक्तियाँ जाननेवाला पंडितोंसे युक्त रहे, आप भी पंडित होवे (शब्दविद्या) व्याकरणादिमें निपुण तत्काल उपस्थितिवाला होवे ॥ १० ॥

कुतूहली सकौतुके महाधनी जनः सदा
निजान्वयाब्जभास्करः कृपाकलाधरः सुखी ॥
निलिंपराजपूजिते सुतेन भूनयेन वा
युतो महाबली धराधिपेन्द्रसद्मपण्डितः ॥ ११ ॥

बृहस्पति कौतुकावस्थामें हो तो मनुष्य खेल तमासा करनेवाला होवे, यदि पापराशिवाला होवे तो सर्वदा बडे धनसे युक्त रहे, अपने वंशरूपी कमलके विकासनमें सूर्य सदृश होवे, कृपाकला (दया) को धारण करनेवाला होवे, सर्वदा सुखी रहे, नम्र पुत्र भूमि और नीतिसे युक्त होवे, बडा बलवान् शरीर होवे, राजद्वारका पण्डित होवे ॥ ११ ॥

गुरौ निद्रागते यस्य मूर्खता सर्वकर्मणि ॥
दरिद्रतापरिक्रान्तं भवनं पुण्यवर्जितम् ॥ १२ ॥

जिसका बृहस्पति निद्रावस्थामें हो तो उसको समस्त कामोंमें मूर्खता आवे, दरिद्रतासे दबारहे, पुण्यभी उसके घरमें न रहे॥१२॥

अथ शुक्रस्यावस्थाफलम् ।

जनो बलीयानपि दन्तरोगी भृगौ महारोषसमन्वितः स्यात् ॥ धनेन हीनः शयनं प्रयाते वारांगनासङ्गमलंपटश्च ॥ १ ॥

जिसके जन्ममें शुक्र शयनावस्थामें हो वह मनुष्य बलवान् होनेपर भी दन्तरोगी बडे क्रोध (गुस्सा) वाला तथा धनसे रहित रहे और वारांगनाओं(वेश्याओं)केसंग करनेमें लंपट(व्यसनी)होवे ॥१॥

यदि भवेदुशना उपवेशने नवमणिव्रजकाञ्चनभूषणैः ॥ सुखमजस्रमरिक्षय आदरादवनिपादपि मानसमुन्नतिः ॥ २ ॥

यदि शुक्र उपवेशनावस्थामें हो तो नवीन मणियोंके समूह एवं सुवर्णके भूषणोंसे सौख्य अनवरत रहे. शत्रुओंका क्षय होवे राजासे आदरपूर्वक मानकी उन्नति होवे ॥ २ ॥

नेत्रपाणिगते लग्नगेहे कवौ सप्तमे मानभे यस्य तस्य ध्रुवम् ॥ नेत्रपातो धनानामलं चान्यभे वासशाला विशाला भवेत्सर्वदा ॥ ३ ॥

यदि शुक्र नेत्रपाणिअवस्थामें लग्न,सप्तम दशममें हो तो उस मनुष्यका नेत्र गिरे तथा निश्चय धन भी क्षय होवे, यदि अन्य भावोंमें हो तो उसके निवासका गृह बहुत बडा सर्वदा रहे ॥ ३॥

स्वालये तुङ्गभे मित्रभे भार्गवे तुङ्गमातङ्गलीला-कलापी जनः ॥ भूपतेस्तुल्य एवं प्रकाशं गते काव्यविद्याकलाकौतुकी गीतवित् ॥ ४ ॥

प्रकाशावस्थाका शुक्र जिस मनुष्यके स्वराशि २।७ उच्चराशि १२ अथवा मित्रराशिमें हो वह उन्मत्त हाथियोंकी लीला(क्रीडा) का प्रेमी होवे तथा राजाके समान ऐश्वर्यवान् होवे, काव्यविद्या शृंगार आदि कलाओंमें निपुण और गायन जाननेवाला होवे॥४॥

गमने जनने शुक्रे तस्य माता न जीवति ॥
अधियोगो वियोगश्च जनानामरिभीतितः ॥ ५ ॥

जिसके जन्ममें शुक्र गमनावस्थामें हो उसकी माता शीघ्र ही मर जाती है. तथा शत्रुके भयसे कभी अपने मनुष्योंमें रहे कभी उनसे पृथक् होना पडे ॥ ५ ॥

आगमनं भृगुपुत्रे गतवति वित्तेश्वरो मनुजः ॥
स तु तीर्थभ्रमशाली नित्योत्साही करांघ्रिरोगी च॥६॥

शुक्र आगमनावस्थामें हो तो मनुष्य बहुत धनका स्वामी

होवे तथा तीर्थयात्रा करनेवाला, नित्य उत्साही (उद्यमी) होवे, और हाथ पैरोंमें रोग भी रहे ॥ ६ ॥

अनायासेनालं सपदि महसा याति सहसा
प्रगल्भत्वं राज्ञः सदसि गुणविज्ञः किल कवौ ॥
सभायामायाते रिपुनिवह-हन्ता धनपतेः
समत्वं वा दन्तावलतुरगगन्ता नरवरः ॥ ७ ॥

यदि शुक्र सभावस्थामें हो तो अकस्मात् शीघ्र विना परिश्रम स्वतेजसे राजाकी सभामें प्रगल्भत्व चतुराईको प्राप्त कर गुणोंका जाननेवाला होवे तथा शत्रुके समूहको मारनेवाला होवे, धनमें कुबेरकी तुल्यता रक्खे, अथवा हाथी घोड़ोंकी सवारीमें चलनेवाला मनुष्योंमें श्रेष्ठ होवे ॥ ७ ॥

आगमे भार्गवे नागमो जन्मिनामर्थराशेररातेरतीव क्षतिः ॥ पुत्रपातो निपातो जनानामपि व्याधिभीतिः प्रियाभोगहानिर्भवेत् ॥ ८ ॥

शुक्र आगमावस्थामें हो तो मनुष्योंको धनका आगम न होवे अर्थात् दरिद्री रहे, शत्रुसे बहुत हानि होवे, पुत्र तथा स्वजनोंका नाश होवे, रोगका भय रहे और स्त्रीके भोगकी हानि होवे ॥ ८ ॥

क्षुधातुरो व्याधिनिपीडितः स्यादनेकधारातिभयार्दितश्च ॥ कवौ यदा भोजनगे युवत्या महाधनी पण्डितमण्डितश्च ॥ ९ ॥

शुक्र भोजनावस्थामें हो तो क्षुधासे सर्वदा आतुर रहे अर्थात भूख सहन न कर सके, रोगसे पीडित रहे, अनेक प्रकार शत्रुके भयसे दुःखी रहे,स्त्री सहित यद्वा स्त्रीके प्रतापसे बडा धनवान् होवे, पंडित जनोंसे सुशोभित रहे ॥ ९ ॥

काव्यविद्यानवद्या च हृद्या मतिः सर्वदा नृत्य-
लिप्सां गते भार्गवे ॥ शंखवीणामृदंगादिगान-
ध्वनिव्रातनैपुण्यमेतस्य वित्तोन्नतिः ॥ १० ॥

शुक्र नृत्यलिप्सावस्थामें हो तो प्रशंसनीय काव्यविद्या आवे, बुद्धि सर्वदा मनोहर (रमणीय) रहे, शंख, वीणा, मृदंग आदि बाजे एवं गायनकी ध्वनि (शब्दों) में निपुणता होवे, धन इसका सर्वदा बढता ही रहे ॥ १० ॥

कौतुकभवनं गतवति शुक्रे शक्रेशत्वं सदसि महत्त्वम्॥
हृद्या विद्या भवति च पुंसःपद्मा निवसति पद्मोदरतः११

शुक्र कौतुकावस्थामें हो तो इंद्रके समान ऐश्वर्य, पृथ्वीमें श्रेष्ठत्व पावे, सभामें बडप्पन मिले तथा उस पुरुषको रमणीय विद्या हो और लक्ष्मी आदरपूर्वक कमलका वास छोडकर उस मनुष्यके घरमें निवास करे ॥ ११ ॥

परसेवारता नित्यं निद्रामुपगते कवौ ॥
परनिन्दापरो वीरो वाचालो भ्रमते महीम् ॥१२॥

निद्रावस्थामें शुक्र हो तो सर्वदा पराया सेवक रहे,पराई निन्दा करनेमें तत्पर होवे, वीरता रक्खे, वाचाल (अति बोलनेवाला) होवे तथा सारी पृथ्वीमें फिरता रहे ॥ १२ ॥

अथ शनेः प्रत्यवस्थाफलानि ।

क्षुत्पिपासापरिक्रान्तो विश्रान्तः शयने शनौ ॥
वयसि प्रथमे रोगी ततो भाग्यवतां वरः ॥ १ ॥

शनि जिसका शयनावस्थामें हो वह सर्वदा भूख प्याससे दबा रहे तथा श्रमयुक्त रहे, पहिली अवस्था (छोटी) उमर में रोगी रहे पीछे भाग्यवंतोंमें श्रेष्ठ होवे ॥ १ ॥

भानोः सुते चेदुपवेशनस्थे करालकारातिजनानुतप्तः ॥ अपायशाली खलु दद्रुमाली नरोऽभिमानी नृपदण्डयुक्तः ॥ २ ॥

शनि उपवेशनमें हो तो बडे प्रचंड शत्रुजनोंसे संतप्त (दुःखी) रहे, सर्वथा धनादिका नाश करता है तथा निश्चय है कि, उसके शरीरमें दद्रु (दाद) बहुत होवे और वह मनुष्य बडा अभिमानी (घमंडखोर) होवे तथा राजासे दंड बारंवार पावे ॥ २ ॥

नयनपाणिगते रविनन्दने परमया रमया परया युतः ॥ नृपतितो हिततो मतितोषकृद्बहुकलाकलितो विमलोक्तिकृत ॥ ३ ॥

शनि नेत्रपाणि अवस्थामें हो तो उत्कृष्ट अन्यकी लक्ष्मीसे युक्त रहे, राजासे प्रेमपूर्वक प्रसन्नता पावै, अनेक कला (विद्या वा तरकीबें) जाने, निर्मल वाणी बोले ॥ ३ ॥

नानागुणग्रामधनाधिशाली सदा नरो बुद्धिविनोदमाली ॥ प्रकाशने भानुसुते सुभानुः कृपानुरक्तो हरपादभक्तः ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यका शनि प्रकाशावस्थामें हो वह अनेक प्रकारके गुणोंके समूहको जाने, कुछ ग्राम (गांव) तथा धन उसके अधीनतामें रहे; सर्वदा सुबुद्धिके विनोदवाला होवे, सुन्दरकांति होवे, दयावान् एवं श्रीभगवान् शिवके चरणोंका भक्त रहे ॥ ४ ॥

महाधनी नन्दननंदितःस्यादपापकारी रिपुभूमिहारी ॥ गमे शनौ पंडितराजभावं धरापतेरायतने प्रयाति ॥५॥

शनि गमावस्थामें हो तो महाधनी होवे पुत्रोंके हर्षसे हर्षित रहे पुण्य करनेवाला होवे,शत्रुका नाश करे तथा उनकी भूमिहरण करे,

पंडितों (चतुरों) में राजा (श्रेष्ठ) भाव पायके दरबारमें जावे॥५॥

आगमने पदगदभययुक्तः पुत्र-कलत्र-सुखेन विमुक्तः॥भानुसुते भ्रमते भुवि नित्यं दीनमना विजनाश्रयभावम् ॥ ६ ॥

शनि आगमावस्थामें जिसके हो वह पैरोंके रोगके भयसे युक्त रहे. पुत्र,स्त्रीके सुखसे हीन रहे, दीन (दुःखी) मन करके एकान्तस्थानका सेवन करे और पृथ्वीमें घूमता फिरे ॥ ६ ॥

रत्नावलीकांचनमौक्तिकानां व्रातेन नित्यं व्रजति प्रमोदम् ॥ सभागते भानुसुते नितान्तं नयेन पूर्णो मनुजो महौजाः ॥ ७ ॥

शनि सभावस्थामें हो तो रत्नोंकी पंक्ति (लडियां) सुवर्ण, मोतियोंके समूहोंसे सर्वदा आनंदित रहे तथा सभी समयमें मनुष्य नीतिसे परिपूर्ण होवे तथा बडा तेजस्वी होवे ॥ ७ ॥

आगमे गदसमागमो नृणामब्जबंधुतनये यदा तदा ॥ मन्दमेव गमनं धरातले याचनाविरहितामतिः सदा ॥ ८ ॥

यदि शनि आगमावस्थामें हो तो मनुष्योंको वारंवार रोग होते रहें, मन्दगति (ढीली चाल चले) तथा संसारमें सर्वदा उसकी बुद्धि याचना (माँगना) से रहित रहे ॥ ८ ॥

संगते जनुपि भानुनन्दने भोजने भवति भोजनं रसैः ॥ संयुतं नयनमन्दताऽज्ञता मोहतापपरितापिता मतिः ॥ ९ ॥

शनि भोजनावस्थामें जन्मकालका हो तो मनुष्यको भोजन

उत्तम षड्रसोंसे संयुक्त मिले, नेत्रोंकी दृष्टि मन्द (अल्प) होवे, अज्ञान एवं मोहरूप तापोंसे संतप्त बुद्धि रहे ॥ ९ ॥

नृत्यलिप्सागते मन्दे धर्मात्मा वित्तपूरितः ॥
राजपूज्यो नरो धीरो महावीरो रणांगणे ॥ १० ॥

शनि जिसका नृत्यलिप्सा अवस्थामें हो वह धर्मात्मा तथा धनसे परिपूर्ण होवै, राजासे पूजा (आदर) पावै, बड़ा धैर्यवान् होवे और रणभूमिमें बड़ी वीरता करनेवाला होवे ॥ १० ॥

भवति कौतुकभावमुपागते रविसुते वसुधावसुपूरितः ॥ अतिसुखी सुमुखीसुखपूरितः कवितयाऽमलया कलया नरः ॥ ११ ॥

शनि कौतुकावस्थामें हो तो मनुष्य भूमि एवं धनसे संपन्न रहे, अति सुखी होवे, सुरूपा स्त्रीके सुखसे पूर्ण रहे और निर्मल कविताकी कलासे पूर्ण रहे अर्थात् कविता जाने तथा कवितारसज्ञ होवे ॥११॥

निद्रागते वासरनाथपुत्रे धनी सदा चारुगुणैरुपेतः ॥
पराक्रमी चंडविपक्षहंता सुवारकांतारतिरीतिविज्ञः १२॥

शनि निद्रा अवस्थामें हो तो मनुष्य धनवान् होवै, उत्तम गुणोंसे युक्त रहे, पराक्रम करनेवाला होवै, बडे प्रचंड शत्रुओंको भी मारडाले, सुंदर वारांगनाओंके साथ (रमण) की विधि जाने ॥१२॥

अथ राहोः प्रत्यवस्थाफलानि ।

गदागमो जन्मनि यस्य राहौ क्लेशाधिकत्वं शयनं प्रयाते ॥ वृषेऽथ युग्मेऽपि च कन्यकायामजे समाजो धनधान्यराशेः ॥ १ ॥

जिसके जन्ममें राहु शयनावस्थामें हो उसको रोगकी प्राप्ति होवे और नानाप्रकारके क्लेश, होवें । यदि उक्त अवस्थाका राहु

वृष, मिथुन, कन्या, मेषराशिमें हो तो अन्न, धनकी राशि (समुदाय) मिलते रहें ॥ १ ॥

उपवेशनमिह गतवति राहौ दद्रुगदेन जनः परितप्तः ॥ राजसमाजयुतो बहुमानी वित्तसुखेन सदा रहितः स्यात् ॥ २ ॥

जिसका राहु उपवेशनावस्थामें हो वह दद्रु (दाद) रोगसे संतप्त रहे तथा राजाकी सभामें बैठनेवाला बडे मानवाला होवै, परंतु धनके सुखसे सर्वदा रहित रहे ॥ २ ॥

नेत्रपाणावगो नेत्रे भवतो रोगपीडिते ॥
दुष्टव्यालारिचौराणां भयं तस्य धनक्षयः ॥ ३ ॥

राहु नेत्रपाणि अवस्थामें हो तो नेत्र सर्वदा रोगसे पीडित रहें और दुष्ट सर्प शत्रु चोर आदिकोंका भय और धनका क्षय होवे ॥ ३ ॥

प्रकाशने शुभासने स्थितिः कृतिःशुभा नृणां
धनोन्नतिर्गुणोन्नतिः सदा विदामगाविह ।
धराधिपाधिकारिता यशोलता तता भवे-
न्नवीननीरदाकृतिर्विदेशतो महोन्नतिः ॥ ४ ॥

राहु प्रकाशनावस्थामें हो तो उत्तम स्थानमें स्थिति होवे, उत्तम यश मिले, धनकी उन्नति (वृद्धि) होवे, ऐसे ही सद्गुणोंकी वृद्धि होवै, सर्वदा पांडित्य, चातुर्यता होकर राज्याधिकारिता मिले, यशरूपी लता बहुत फैले, नवीन मेघ (बादल) कीसी आकृति होवै, परदेशसे बडी उन्नति मिले ॥ ४ ॥

गमने च यदा राहौ बहुसन्तानवान्नरः ॥
पण्डितो धनवान्दाता राजपूज्यो नरोत्तमः ॥ ५ ॥

राहु गमनावस्थामें हो तो मनुष्य बहुत संतानवाला होवै,पंडित तथा धनवान्, उदार, राजपूज्य और मनुष्योंमें श्रेष्ठ होवे ॥ ५ ॥

राहावागमने क्रोधी सदा धीधनवर्जितः ॥
कुटिलः कृपणः कामी नरो भवति सर्वथा ॥ ६ ॥

राहु आगमनावस्थामें हो तो मनुष्य क्रोधी होवै, सर्वदा बुद्धि एवं धनसे रहित रहे, कुटिल होवै, कृपण (कंजूस) होवै और सर्वप्रकारसे अतिकामी होवै ॥ ६ ॥

सभागते यदा राहौ पण्डितः कृपणो नरः ॥
नानागुणपरिक्रान्तो वित्तसौख्यसमन्वितः ॥ ७ ॥

राहु सभावस्थामें हो तो मनुष्य पंडित होवे परन्तु कृपण होवै, अनेकगुणोंसे युक्त एवं धनसुखसे युक्त रहे ॥ ७ ॥

चेदगावागमं यस्य याते तदा व्याकुलत्वं सदाऽरातिभीत्या महत् ॥ बंधुवादो जनानां निपातो भवेद्वित्तहानिः शठत्वं कृशत्वं तथा ॥ ८ ॥

राहु आगमावस्थामें जिसका हो वह सदा शत्रुके भयसे व्याकुल रहे, जातिभाइयोंमें कलह रहे, कुटुम्बमें मनुष्य न रहे, धनकी हानि होवे, मूर्खता रहे, शरीर कृश (माडा) भी रहे ॥ ८ ॥

भोजने भोजनेनालं विकलो मनुजो भवेत् ॥
मन्दबुद्धिः क्रियाभीरुः स्त्रीपुत्रसुखवर्जितः ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यका राहु भोजनावस्थामें हो वह भोजनसे विकल रहे अर्थात् भोजनप्राप्ति कठिनतासे होवै, बुद्धि मन्द होवै, कार्य करनेमें डरे (आलसी) होवे, स्त्रीपुत्रोंके सुखसे वर्जित रहे ॥ ९ ॥

नृत्यलिप्सागते राहौ महाव्याधिविवर्द्धनम् ॥
नेत्ररोगं रिपोर्भीतिर्द्धनधर्मक्षयो नृणाम् ॥ १० ॥

राहु नृत्यलिप्सावस्थामें हो तो मनुष्योंको बडे बडे रोग बढें, नेत्रोंमें रोग रहे, शत्रुका भय होवे, धन और धर्मका क्षय होवे॥१०॥

कौतुके च यदा राहौ स्थानहीनो नरो भवेत् ॥
परदाररतो नित्यं परवित्तापहारकः ॥ ११ ॥

राहु कौतुकावस्थामें जिस मनुष्यका हो वह स्थान (गृह भूमि) से रहित रहे, सर्वदा पराई स्त्रीमें रमित रहे, पराये धनका हरण करनेवाला होवे ॥ ११ ॥

निद्रावस्थागते राहौ गुणग्रामयुतो नरः ॥
कान्तासन्तानवान्धीरो गर्वितो बहुवित्तवान् ॥१२॥

राहु निद्रावस्थामें हो तो मनुष्य अनेक गुणोंके समूहसे युक्त होवे, स्त्रीपुत्रवाला होवे, धैर्यवान् गर्वित (घमंडखोर) और बहुत धनवान् होवे ॥ १२ ॥

अथ केतोरवस्थाफलानि ।

मेषे वृषेऽथ वा युग्मे कन्यायां शयने गते ॥
केतौ धनसमृद्धिः स्यादन्यभे रोगवर्द्धनम् ॥ १ ॥

केतु मेष, वृषभ, मिथुन, कन्या राशिमेंसे किसीमें शयनावस्थाका हो तो धनकी समृद्धि होवे, अन्य राशियोंमें हो तो रोग बढे ॥ १॥

उपवेशं गते केतौ दद्रुरोगविवर्द्धनम् ॥
अरिव्रातनृपव्यालचौरशङ्कासमंततः ॥ २ ॥

केतु उपवेशावस्थामें हो तो दद्रु (दाद) का रोग बढे, शत्रु-समूह, राजा, सर्प, चोरोंसे शंका (भय) होवे॥ २ ॥

नेत्रपाणिं गते केतौ नेत्ररोगः प्रजायते ॥
दुष्टसर्पादिभीतिश्च रिपुराजकुलादपि ॥
वित्तं विनाशमायाति मतिश्च चपला भवेत् ॥ ३ ॥

केतु नेत्रपाणि अवस्थामें हो तो नेत्रोंमें रोग रहे,दुष्टजन्तु सर्पादिकोंका भय होवै तथा शत्रुसे राजकुलसे भय होवै, धनका नाश होवै, बुद्धि चंचल रहे ॥ ३ ॥

प्रकाशने गते केतौ धनधान्यसमुन्नतिः ॥
राजमानं यशोलाभं विदेशे सौख्यमाप्नुयात् ॥४॥

केतु प्रकाशावस्थामें हो तो अन्न धनकी वृद्धि होवै,राजासे मान मिले, यश बढे, विदेशमें सौख्य होवे ॥ ४ ॥

गमने तु यदा केतौ पुत्रसंपत्तिमान्नरः ॥
पण्डितो राजमानी च धनेन परिपूरितः ॥ ५ ॥

केतु गमनावस्थामें हो तो पुत्रोंकी संपत्तिवाला मनुष्य होवै तथा पंडित होवै, राजासे मान पावे, धनसे परिपूर्ण रहे ॥ ५ ॥

केतावागमने दुष्टमतिः श्रीरहितः पुमान् ॥
कामी धीधर्महीनश्च जायते क्रोधनः शठः ॥ ६ ॥

केतु आगमावस्थामें हो तो पुरुषकी दुष्टबुद्धि होवै,लक्ष्मीरहित रहे, कामी होवे, सद्बुद्धि तथा धर्मकर्मसे हीन रहे, क्रोधी और ठगुआ होवे ॥ ६ ॥

सभावस्थागते केतौ वाचालो बहुगर्वितः ॥
कृपणो लंपटश्चैव धूर्तविद्याविशारदः ॥ ७ ॥

केतु सभावस्थामें हो तो बडा वाचाल होवे, गर्वित (बडा मिजाजी) होवे, कृपण (सूम) होवै तथा लोभी होवे और धूर्तविद्यामें भी निपुण होवे ॥ ७ ॥

यदागमे भवेत्केतुः केतुः स्यात्पापकर्मणाम् ॥
बंधुवादरतो दुष्टो रिपुरोगनिपीडितः ॥ ८ ॥

केतु यदि आगमनावस्थामें हो तो मनुष्य पाप कर्मोंका ध्वजा

(पताका) होवे, बंधुजनोंमें विवाद करता रहै, दुष्टता करे, शत्रुसे तथा रोगसे पीडित रहे ॥ ८ ॥

भोजने तु जनो नित्यं क्षुधया परिपीडितः ॥
दरिद्रो रोगसंतप्तः केतौ भ्रमति मेदिनीम् ॥ ९ ॥

केतु भोजनावस्थामें हो तो मनुष्य नित्य क्षुधा (भूँख) से पीडित रहै; दरिद्री तथा रोगसे संतप्त रहकर पृथ्वीमें भ्रमण करे॥९॥

नृत्यलिप्सागते केतौ व्याधिना विकलो भवेत् ॥
बुद्बुदाक्षो दुराधर्षो धूर्त्तोऽनर्थकरो नरः ॥ १० ॥

केतु नृत्यलिप्सा अवस्थामें हो तो मनुष्य रोगसे सर्वदा विकल (दुःखी) रहे, आँख उसकी देखनेमें कांपे (स्थिर दृष्टि न होवे) किसीसे हारे नहीं, धूर्त होवे और अनर्थके काम करे ॥ १० ॥

कौतुकी कौतुके केतौ नटवामारतिप्रियः ॥
स्थानभ्रष्टो दुराचारो दरिद्रो भ्रमते महीम् ॥ ११ ॥

केतु कौतुकावस्थामें जिसका हो वह खेल-तमासा करै, नटनीके संग भोग (रति) को प्रिय माने, स्थानभ्रष्ट हो (घरसे निकल जावे) दुष्ट आचार करे, दरिद्री होकर पृथ्वीमें भ्रमण करे॥११॥

निद्रावस्थागते केतौ धनधान्यसुखं महत् ॥
नानागुणविनोदेन कालो गच्छति जन्मिनाम्॥१२॥

इति भाव० ग्रहाणां शयनाद्यवस्थाविचारे द्वादशोऽध्यायः ॥१२॥

केतु निद्रावस्थामें हो तो अन्न तथा धनका सुख मनुष्योंको बहुत होवे, अनेक प्रकार गुणोंकी चर्चासे खुसीसे दिन कटें॥१२॥

इति भावकुतूहले माहीधरीभाषाटीकायां ग्रहाणां शयनाद्यवस्था-
विचाराऽध्यायः ॥ १२ ॥

त्रयोदशोऽध्यायः ।

अथ ग्रहाणां बालाद्यवस्थाफलानि ।

बालो रसांशैरसमे प्रदिष्टस्ततः कुमारो हि युवाथ वृद्धः ॥ मृतः क्रमाद्युत्क्रमतः समर्क्षे बालाद्यवस्थाः कथिता ग्रहाणाम् ॥ १ ॥ फलं तु किंचिद्धि तनोति बालश्चार्द्धं कुमारः प्रयतेन पुंसाम् ॥ युवा समग्रं खचरोऽथ वृद्धः फलं च दुष्टं मरणं मृताख्यः ॥ २ ॥

अब बालादि अवस्था कहते हैं कि, विषम राशिके प्रथम ६ अंशमें ग्रह हो तो बाल अवस्था, ७से १२ अंशपर्यंत कुमार, १३ से १८ लौं युवा, १९ से २४ पर्यंत वृद्ध, २५ से ३० पर्यंत मृत्यु अवस्था होती है; समराशिमें ग्रह हो तो विपरीत अर्थात् प्रथम६ अंश पर्यंत मृत्यु, ७ से १२ पर्यंत वृद्ध, १३से१८ पर्यंत युवा; १९से २४ लौं कुमार, २५ से ३० पर्यंत बाल अवस्था होती है। इनके फल ये हैं कि, बाल अवस्थावाला ग्रह अपना पूर्वोक्त फल थोडा देता है; कुमारमें आधा; युवामें समस्त; वृद्धमें अनिष्ट फल और मृत्युवाला मृत्यु ही देता है ॥ १ ॥ २ ॥

अथ दीप्ताद्यवस्थाः ।

उच्चे दीप्तः स्वभे स्वस्थो मित्रभे हर्षितो भवेत् ॥
शांतः शोभनवर्गस्थोऽतिशस्तो दीप्तदीधितिः ॥३॥
लुप्तोऽस्ते नीचभे दीनः पीडितः पापशत्रुभे ॥
एवमष्टौ नभोगानां भावा दीप्तादिभेदतः ॥ ४ ॥

अब अन्य प्रकार दीप्तादि अवस्था कहते हैं कि जो ग्रह अपने उच्च राशिमें हैं वह दीप्त अवस्थाका एवं अपनी राशिमें स्वस्थ; मित्रकी राशिमें हर्षित, शुभग्रहकी राशि अंशादिकोंमें शांत, उदयका

अतिशस्त, अस्तंगत लुप्त, नीचराशिमें दीन, पापराशि वा शत्रुराशिमें पीडित हो ऐसे दीप्तादिभेदोंमें ग्रहोंके ८ भाव हैं ॥ ३॥४॥

अथ दीप्तग्रहफलम् ।

दीप्ते मदोन्मत्तगजेन्द्रगन्ता सदारिहन्ता वरतीर्थगन्ता॥ कान्तो मनस्वी नितरां यशस्वी प्रदीप्तवेषो मनुजो महीपः ५

दीप्तग्रहका फल यह है कि–मनुष्य मदसे उन्मत्त हाथीकी सवारीमें चलनेवाला, सर्वदा वैरीको मारनेवाला, श्रेष्ठ तीर्थोंमें जानेवाला; सुरूप, बुद्धिमान्, सर्वदा यशवाला, कांतिमान् राजा होताहै ५

स्वस्थे गुणागारजयालयानामुपार्जको वैरिविनाशकर्त्ता ॥ नरोऽप्युदारो नृपपूजितः स्याद्विशालकीर्तिः कमनीयमूर्तिः ॥ ६ ॥

स्वस्थग्रहवाला मनुष्य गुणोंके गृह अर्थात् विद्याशाला आदि तथा जय और गृह इनका उपार्जक (कमानेवाला) तथा शत्रुका विनाश करनेवाला, उदार, राजपूजित, बडी कीर्तिवाला, सुहावनी मूर्तिवाला होता है ॥ ६ ॥

हर्षिते भवति हर्षितः सदा मित्रपुत्रपरिपूरितो मुदा ॥ धर्मकृन्मणिगणेन मण्डितः परमदैवविपाकविज्जनः॥७॥

हर्षित ग्रहका फल ऐसा है कि, मनुष्य सर्वदा खुश रहे; मित्रोंसे तथा पुत्रोंसे सर्वदा प्रसन्नतापूर्वक परिपूर्ण रहे, धर्म करनेवाला होवै, मणियोंके समूहसे भूषित रहे और दैव (पूर्वार्जित कर्म) अर्थात् कर्मविपाक आदि ज्योतिष जाननेहारा होवै ॥ ७ ॥

शान्तेऽतिशांतो युवराजराजो जनो महौजा जनतासमेतः ॥ अनेकविद्यामलगद्यपद्याभ्यासानुरक्तः खलु वित्तयुक्तः ॥ ८ ॥

शांत ग्रहवाला मनुष्य अति शांतस्वभाव, सर्वदा युवराजोंका राजा होवै, अथवा युवराज (भविष्यराजा) होवै, बडा तेजमान होवै, बहुत मनुष्योंके साथ रहे, अनेक प्रकारके निर्मल गद्यपद्य-सहित विद्याओंके अभ्यासमें तत्पर रहै और निश्चय धनयुक्त सर्वदा रहै ॥ ८ ॥

शस्ते विशेषाद्विदुषां प्रशस्तः प्रशस्तवेषो गतरोग-संघः ॥ विशालमालालसितोऽमलोक्त्या नरो नराणामधिपः प्रधानः ॥ ९ ॥

शस्त ग्रहका फल है कि मनुष्य विशेषतासे विद्वानोंका प्रशंस-नीय (श्रेष्ठ) होवै, सुंदर सुहावना वेष (सजीला जवान) होवै, निरोग रहे, बडी कीमती मालासे भूषित रहे और निर्मल वाणी-करके मनुष्योंका स्वामी किंवा प्रधान (श्रेष्ठ) होवै ॥ ९ ॥

लुप्ते च लुप्ते गुणधर्मभावैः प्रपीडितो रातिकुलेन मर्त्यः ॥ भवेद्विरक्तो गदजालयुक्तो प्रमादशाली खलु पापमाली ॥ १० ॥

लुप्त ग्रहका फल है कि मनुष्य गुण तथा धर्मके कामोंका लोप करे अर्थात् निर्गुणी, विधर्मी होवै, शत्रुकुलसे पीडित (दुःखी)रहे, गृहस्थीसे विरक्त रहे, अनेक रोगोंसे युक्त रहे,प्रमादी होवै,पाप कर-नेवाला होवै ॥ १० ॥

दीनेऽतिदीनो मतितोषहीनो जनो जनेशादिनि-पीडितश्च ॥ गुणेन हीनः परदारलीनः परार्थहारी च कुभूमिचारी ॥ ११ ॥

दीनग्रहवाला मनुष्य अतिदीन (गरीब) होता है, बुद्धिहीन सतोपरहित, राजा आदिसे पीडित गुणहीन पराई स्त्रीमें आसक्त, परायाधन चोरानेवाला और निषिद्ध भूमिमें फिरनेवाला होताहै ११

पीडिते गदनिपीडितः सदा चिन्तया च परया समन्वितः ॥ व्यग्रितो बहुमदोद्धतः पुमानाधिरोगसहितो विशेषतः ॥ १२ ॥

इति भाव० ग्रहावस्थाफलोक्तौ त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

पीडित ग्रहसे मनुष्य सर्वदा रोगपीडित बडी चिंतासे युक्त (व्यग्र) बेफुर्सत, बडे मदसे उन्मत्त रहता है तथा (आधि) मानसी दुःखसे दुःखी विशेषतः रोगी रहता है ॥ १२ ॥

इति भावकुतूहले माहीधरीभाषाटीकायां ग्रहावस्थाफलाऽध्यायः ॥ १३ ॥

अथ मारकविचाराध्यायः ।

चतुर्दशोऽध्यायः ।

शनेः मारकत्वनिरूपणम् ।

मारकग्रहसम्बन्धात् पापकर्त्ता शनिस्तदा ॥
तिरस्कृत्य ग्रहान्सर्वान्निहंता भवति ध्रुवम् ॥ १ ॥

अब मारकाध्याय कहते हैं-समस्त ग्रहोंमें मृत्युकारक यमका भाई होनेसे शनि विशेष है इसलिये वक्ष्यामाणविधिसे मारकत्व जो ग्रह पावे उसके साथ चार प्रकारोंमेंसे किसी प्रकार संबंध शनि पावे तो मारक ग्रहोंको हटाकर आप ही मारक होजाता है, अपने मारकत्व होनेमें तो क्या ही बाकी रहेगा ॥ १ ॥

भवनाधिपानां शुभाशुभसंज्ञा ।

त्रिकोणभवनाधिपाः शुभफलास्तु सर्वे ग्रहा-
स्त्रिवैरिभवभावपाः खलफला निरुक्ता बुधैः ॥
भवंति यदि केन्द्रपाः शुभखगा न शस्ता नृणा-
मतीवशुभदायकाः खलखचारिणो जन्मनि ॥ २ ॥

त्रिकोण ९ । ५ स्थानोंके कोई ग्रह स्वामी हों तो शुभसंज्ञक एवं शुभ फल देनेवाले होते हैं और ३ । ६ । ११ भावोंके स्वामी

पापसंज्ञक एवं क्रूर फल देनेवाले होते हैं ऐसा पंडितोंने कहा है। तथा केन्द्र १ । ४ । ७ । १० स्थानोंके स्वामी शुभग्रह हों तो शुभ फल नहीं देते, पापग्रह हों तो अतिशुभ फल देते हैं. यह विचार जन्ममें मुख्य है ॥ २ ॥

यद्यद्भावगतो राहुः केतुश्च जनने नृणाम् ॥
यद्यद्भावेशसंयुक्तस्तत्फलं प्रदिशेदलम् ॥ ३ ॥

राहु तथा केतु भी मनुष्योंके जन्ममें जिन जिन भावोंमें हों और जिन जिन भावोंके स्वामियोंसे युक्त हों उन उन भावसंबंधी फलोंको निश्चय देते हैं ॥ ३ ॥

मन्दश्चेत्पापसंयुक्तो मारकग्रहयोगतः ॥
तिरस्कृत्य ग्रहान्सर्वान्निहंता पापकृद्यदा ॥ ४ ॥

यदि पापकर्त्ता शनि पापयुक्त होकर मारक (सप्तमेश द्वितीयेश) से युक्त उपलक्षणसे दृष्ट भी हो तो समस्त ग्रहोंके फलोंको हटायके मारनेवाला स्वयं होजाता है ॥ ४ ॥

अल्पमध्यमपूर्णायुः प्रमाणमिह योगजम् ॥
विज्ञाय प्रथमं पुंसां ततो मारकचिन्तना ॥ ५ ॥

प्रथम अल्प, मध्यम, पूर्ण आयुका विचार वक्ष्यमाण योगोंसे करके तब मारकका विचार करना. जैसे—योगसे पूर्णायु है और मारक दशा अल्प वा मध्यमायुके समयमें हो तो अरिष्टमात्र होगा मृत्यु नहीं होगी,ऐसे ही मारकयोग अल्पायु समयमें हो तथा मारक दशापूर्णायु समयमें हो तो ऐसे ही जानना। जब मारक दशा और योगायु भी तुल्य समयपर हो तब मृत्यु होती है ॥ ५ ॥

अल्पायुर्भावादिविचारः ।

चेदङ्गपो यदि रवेररिरेव हीनं पूर्णं सुहृद्यदि समः

समभायुराहुः ॥ बालग्रहो हितसमारिपदेऽपि पूर्णं
मध्यं च हीनमिह जातकतत्त्वविज्ञाः ॥ ६ ॥

योगसे अल्प,मध्यम,दीर्घ आयु कहते हैं कि,यदि लग्नेश सूर्यका शत्रु हो तो अल्पायु, मित्र हो तो पूर्णायु, सम हो तो मध्यमायु होती है। अथवा लग्नेश मित्रगृही हो तो पूर्ण; समके राशिमें हो तो मध्यम और शत्रुराशिमें हो तो अल्प आयु होती है। यह जातकोंके तत्त्व जाननेवाले कहते हैं ।(आयुका प्रमाण ४० पर्यन्त अल्प, ८० पर्यन्त मध्यम, १२० पर्यन्त पूर्ण है,परन्तु कलिकालमें लोभमोहादि तथा अनाचार,कुपथ्य, झूठ,कूट आदिकोंके करनेसे मनुष्योंकी परमायु ६० के लगभग ही हो जाती है इस अवस्थामें इसके ३ भाग २० पर्यंत अल्प, ४० लौं मध्यम, ६० पर्यंत पूर्ण आयु जाननी)॥ ६ ॥

आयुस्थानमारकस्थानकथनम् ।

अष्टमर्क्षं तृतीयं च बुधैरायुरुदाहृतम् ॥
द्वितीयं सप्तमं स्थानं मारकस्थानमुच्यते ॥ ७ ॥

लग्नसे अष्टम तथा तृतीय आयुस्थान पंडितोंने कहे हैं और लग्नसे दूसरा और सप्तम मारक संज्ञक कहे हैं ॥ ७ ॥

मृत्युनिश्चयः ।

मारकेशदशापाके मारकस्थस्य पापिनः ॥
पाके पापयुजां पाके संभवे निधनं विशेत् ॥ ८ ॥

मारकभावका स्वामी दशामें मारकस्थानस्थित पापग्रहकी अन्तर्दशा आनेसे सम्भव रहते मरण कहना। अथवा पापग्रहोंकी दशामें पापयुक्त मारकेशकी दशादिमें भी मृत्यु होती है॥ ८ ॥

असंभवे व्ययाधीशदशायां मरणं नृणाम् ॥
अभावे व्ययभावेशसंबंधिग्रहभुक्तिषु ॥ ९ ॥

मारकग्रहकी दशाके (असम्भव) वर्त्तमान न होने एवं बहुत दूर मारकग्रहदशा होनेमें, अथवा मारकदशा भुक्त होजानेमें व्ययाधीशकी दशामें मनुष्योंकी मृत्यु होजाती है। उसका भी पूर्वोक्त प्रकारोंसे अभाव हो तो व्ययभावेशके साथ जो ग्रहसम्बंध करता हो अथवा मारकेशसे जो सम्बंध करता हो उसकी दशामें मृत्यु होती है ॥ ९ ॥

तदभावेऽष्टमेशस्य दशायां निधनं पुनः ॥
दुष्टतारापतेः पाके निर्याणं कथितं बुधैः ॥ १० ॥

पूर्वोक्तके अभावसे अष्टमेशकी दशामें मरण होता है, अथवा दुष्टराशि८।२ के पतिकी दशामें यद्वा पापग्रहदशामें मृत्यु पंडितोंने कही है ॥ १० ॥

अथ राजयोगाः।

नवमभावपतिस्तनयालये सुतपतिर्नवमे यदि जन्मिनः ॥ अतिविचित्रमणिव्रजमण्डितो वसुमती विभुतां स नरो व्रजेत् ॥ ११ ॥

अब राजयोग कहते हैं-जिसके जन्ममें नवमभावका स्वामी पंचमभावमें तथा सुतेश नवमस्थानमें हो तो बहुत मूल्यके अनेक प्रकार मणि रत्न समूहोंसे भूषित होकर पृथ्वीका राजा होवे॥११॥

कर्माधीशः सुतस्थाने सुतेशः कर्मगो यदा ॥
त्रिकोणपतिना दृष्टो राजा भवति निश्चितम् ॥१२॥

जिसके जन्ममें दशमेश पंचमस्थानमें, पंचमेश दशमस्थानमें; त्रिकोण ९ । ५ भावेशमें दृष्ट हो तो निश्चय राजा होता है ॥१२॥

राज्येशाङ्गपवाहनेशसुतपा धर्मालये स्वामिना
संयुक्ता यदि वीक्षिताश्च बलिनो राजा भवेन्मानवः॥

पुत्रेशो यदि धर्मपेन सहितो लग्नाधिपेनाङ्गगो दृष्टो वा सहितः सुखेऽपि दशमे राजा भवेन्निश्चितम् १३

जिसके जन्मलग्नसे दशमेश; लग्नेश,चतुर्थेश और पंचमेश नवमेशसे युक्त वा दृष्ट हो तथा बलवान् भी हो तो वह मनुष्य राजा होवे और पंचमेश यदि नवमेश तथा लग्नेशसे युक्त होकर लग्नम हो अथवा दशममें यद्वा चतुर्थस्थानमें नवमेश लग्नेशसे युक्त वा दृष्ट हो तो निश्चय राजा होवे ॥ १३ ॥

यत्र कुत्रापि केन्द्रेशस्त्रिकोणपतिना युतः ॥
सबलो मनुजो राजा दुर्बलो धनपो भवेत् ॥ १४ ॥

केन्द्र १।४।७।१० का स्वामी किसी भावमें,त्रिकोण ९।१९भावके स्वामीसे युक्त हो बलवान् भी हो तो मनुष्य राजा होवे,यदि निर्बल हो तो धनवान् होवे ॥ १४ ॥

पुण्यस्थाने गुरुक्षेत्रे दशमे भृगुणा युते ॥
पञ्चमस्वामिना दृष्टे राजपुत्रो नराधिपः ॥ १५ ॥

लग्नेश नवममें अथवा बृहस्पतिकी राशि ९।१२ में वा दशमस्थानमें शुक्रसहित हो तथा पंचमेश उसे देखे तो राजाका पुत्र राजा होवे अन्य नहीं ॥ १५ ॥

अथ धनिकयोगाः ।

पञ्चमे निजभे शुक्रे लाभे रविसुते यदा ॥
भोक्ता मणिसुवर्णानामधिपो जायते नृणाम् ॥१६॥

शुक्र अपनी राशि २।७ का पंचमस्थानमें हो और लाभभावमें शनि हो तो मणि और सुवर्णका भोगनेवाला राजा होवे ॥१६॥

कर्कटे तु कलानाथे पंचमे लाभगे शनौ ॥
नानाधनसमार्द्धिः स्याद्धर्मवृद्धिश्च भूपता ॥ १७ ॥

चन्द्रमा कर्क राशिका पंचमभावमें और शनि लाभभावमें हो तो अनेक प्रकार धनोंकी समृद्धि; धर्मकी वृद्धि और राजत्व भी होवै ॥ १७ ॥

पंचमे तु मृगे कुंभे समन्दे यस्य जन्मनि ॥
बुधे लाभालये तस्य सर्वतो द्रविणोन्नतिः ॥ १८ ॥

जिसके जन्मलग्नसे शनि१०।११का पंचम भावमें तथा बुधग्यारहवें भावमें हो तो उसको सर्वप्रकारसे धनकी वृद्धि होती रहे॥१८॥

पंचमे तु रवौ सिंहे लाभे देवगुरौ सदा ॥
वाहनस्वर्णरत्नानामधिपो जायते क्षणात् ॥ १९ ॥

सूर्य सिंहराशिका पंचभावमें हो, बृहस्पति लाभ ११ भावमें हो तो सर्वदा वाहन (हाथी घोडे आदि) तथा सुवर्ण रत्नोंका स्वामी अकस्मात् ही होवै ॥ १९ ॥

पंचमे तु गुरुक्षेत्रे सगुरौ यदि जन्मनि ॥
लाभगाविंदुभूपुत्रौ पृथ्वीपतिसमो नरः ॥ २० ॥

यदि जन्मकालमें पंचममें बृहस्पति अपनी राशि ९।१२का हो, लाभभावमें चंद्रमा मंगल हो तो मनुष्य राजाके समान होवै॥२०॥

रविक्षेत्रगते लग्ने रविणा संयुते सति ॥
गुरुभौमयुते वापि धनाधिक्यं दिने दिने ॥ २१ ॥

सूर्य्य लग्नमे सिंहका हो अथवा बृहस्पति मंगल करके युक्त भी हो तो दिनोदिन धनकी अधिकता होती रहै ॥ २१ ॥

कर्कभे जन्मलग्ने तु सचन्द्रे यदि जन्मनि ॥
संयुते जीवभौमाभ्यां स सद्यो वित्तपो भवेत् ॥२२॥

जिसके जन्ममें कर्क लग्न हो उसमें चंद्रमा भी हो और मंगल बृहस्पतिसे युक्त हो तो अकस्मात् धनका स्वामी होवै ॥ २२ ॥

कुजक्षेत्रगते लग्ने सभौमे यस्य जन्मनि ॥
ज्ञशुक्रमंदसंयुक्ते स धनेशसमो नरः ॥ २३ ॥

जिस मनुष्यके जन्ममें लग्नका मंगल अपनी राशि १।८ का बुध,शुक्र और शनिसे युक्त हो वह कुबेरके समान धनवान् होवै२३

स्थिरलक्ष्मीयोगः ।

गुरुभे गुरुसंयुक्ते जन्मलग्नगते सति ॥
चन्द्राङ्गारयुतो यस्य तस्य लक्ष्मीरचंचला ॥ २४ ॥

बृहस्पति लग्नमें अपनी राशि ९।१२ का तथा चंद्रमा मंगलसेभी युक्त जिस मनुष्यका हो उसके घरमें लक्ष्मी स्थिर रहे ॥२४॥

कन्यामिथुनयोर्लग्ने सबुधे यस्य जन्मनि ॥
संयुते शुक्रमन्दाभ्यां दृष्टे वा धनिको भवेत् ॥ २५ ॥

जिसके जन्ममें कन्या वा मिथुनका बुध लग्नका हो और शुक्र शनिसे युक्त वा दृष्ट हो तो वह धनवान् होवै ॥ २५ ॥

शुक्रराशिगते लग्ने ससिते यदि जन्मनि ॥
चन्द्रजादित्यजाभ्यां तु युते दृष्टे धनाधिपः ॥२६॥

जन्ममें जिसका शुक्र लग्नमें अपनी राशि २।७ का बुध शनिसंयुक्त हो अथवा दृष्ट हो तो धनका स्वामी होवै ॥ २६ ॥

अथ दरिद्रयोगः ।

त्रिकोणपतिसंबंधी यो यो वित्तप्रदो ग्रहः ॥
स षडष्टव्ययाधीशैर्युतो धनविनाशकः ॥ २७ ॥

अब दरिद्रयोग कहते हैं—जो जो धन देनेवाले ग्रह हैं वह त्रिकोण ५।९ भावेशोंसे संबंधी होकर छठे, आठवें, बारहवें भावोंके स्वामियोंसे भी युक्त हों तो धनका नाश करके दरिद्र करते हैं ॥ २७ ॥

रिपुभावपतौ लग्न - लग्नेशे रिपुभावगे ॥
मारकस्वामिना दृष्टे युते वा निर्द्धनो भवेत् ॥ २८ ॥

षष्ठेश लग्नमें और लग्नेश छठे भावमें हों इनपर मारकेशकी दृष्टि हो अथवा उससे युक्त हो तो मनुष्य निर्द्धन(धनरहित) होवै॥२८॥

चन्द्रादित्यौ यदा लग्न वाङ्गपे निधनालये ॥
मारकेण युते दृष्टे नरो भवति निर्द्धनः ॥ २९ ॥

सूर्य, चंद्रमा लग्नमें हों अथवा लग्नेश अष्टमभावमें हो और मारकसे युक्त वा दृष्ट हो तो मनुष्य निर्द्धन होवै ॥ २९ ॥

ऋणीयोगः ।

यदाङ्गनाथस्त्रिकभावनाथैर्युतेक्षितः पापयुतोऽथवा स्यात् ॥ पुत्रेश्वरेणापि युते विलग्ने शुभैरदृष्टे च भवेदृणी सः ॥ ३० ॥

यदि लग्नेश त्रिक ६।८।१२ भावोंके स्वामीसे युक्त वा दृष्ट हो अथवा पापयुक्त हो, शुभग्रह उसे न देखे तो पंचमेशसे युक्त लग्नेश लग्नमें होनेसे जो धनवान् योग कहा है उसके हुएमें भी वह मनुष्य ऋणी (कर्जदार) होवै ॥ ३० ॥

अस्तारिनीचत्रिकभावगे वा लग्नेश्वरे मारकनाथयुक्ते ॥ भाग्याधिपेनाथ शुभैरदृष्टे भवेदृणीशो मनुजेश्वरोऽपि ॥ ३१ ॥

इति भावकुतूहले नानायोगनिरूपणाऽध्यायः ॥ १४ ॥

यदि लग्नेश अस्तंगत हो अथवा शत्रुराशिमें,नीचराशिमें,त्रिक ६।८।१२ भावोंमें हों मारकग्रहसे युक्त तथा उसे भाग्याधीश यद्वा शुभग्रह न देखे तो वह मनुष्य राजा भी हो तो भी ऋणियोंमें श्रेष्ठ हो ॥ ३१ ॥

इति भाव० माहीधरीभाषा० नानाविधयोगकथनाऽध्यायः ॥ १४ ॥

पञ्चदशोऽध्यायः।

अथ भावविचारः।

तत्रादौ तनुभावविचारः।

अष्टारिव्ययगो यस्य लग्नस्वामी खलैर्युतः॥
सुखं निहन्ति तस्याशु सर्वभावेष्वयं विधिः॥ १॥

जिस मनुष्यका लग्नस्वामी ८। ६। १२ भावोंमें हो और पापयुक्त हो तो उसके सुखको शीघ्र हरण करता है यह विधि सभी भावोंमें जानना॥ १॥

लग्नपश्चन्द्रराशीशो नीचस्तु रिपुराशिगः॥
विना स्वर्क्षे त्रिकस्थश्चेद्बलहीनो ग्रहो भवेत्॥ २॥

लग्नेश अथवा चंद्राशीश नीचराशिमें अथवा शत्रुराशिमें तथा विना अपनी राशिका त्रिक ६। ८। १२स्थानमें हो तो वहग्रह बलहीन कहाता है,अपनी राशिका ६। ८। १२ में भी बली होता है॥२॥

दुष्टस्थानगते यस्य चन्द्रलग्नेश्वरे यदि॥
कार्श्यं गदभयं नित्यं वितनोति रिपूदयम्॥ ३॥

जिसका लग्नेश वा चंद्राशीश दुष्ट स्थान (शत्रु,नीच,त्रिक) में हो उसको कृशता,रोग,भय और शत्रुकी वृद्धि नित्य रहती है॥३॥

निजोच्चे निजभे वर्गे स्वकीये लग्नपे यदि॥
दीर्घायुः सुखसन्तृप्तो बली भोगी प्रजायते॥ ४॥

यदि लग्नेश उपलक्षणसे चंद्राशीश भी अपनी उच्च राशिमें, स्वगृहमें अथवा अपने अंशादिकोंमें हो तो मनुष्य दीर्घायु, सुखी, बलवान् और भोगवान् होता है॥ ४॥

अथ धनभावविचारः।

धनेशः शुक्रसंयुक्तोऽथवा शुक्रात्त्रिके भवेत्॥
सम्बन्धी लग्ननाथेन नेत्रयोः पीडनं भवेत्॥ ५॥

धन (२) भावेश शुक्रके साथ हो अथवा शुक्रसे ६।८।१२ वें स्थानमें हो तथा लग्नेशसे भी संबंध करता हो तो नेत्ररोगी होता है.५

चन्द्रादित्यौ धने स्यातां निशान्धो मनुजो भवेत् ॥
अर्कलग्नपकोशेशाः सुखाधिपतिना युताः ॥ ६ ॥
मात्रादीनां प्रकुर्वन्ति मन्दतां नेत्रयोरपि ॥
उच्चगो निजगेहस्थो ग्रहो नैवात्र दोषकृत् ॥ ७ ॥

जिसके सूर्य चंद्रमा दूसरे भावमें हों वह मनुष्य रात्र्यंध(रतौंधी) वाला होता है- यदि सूर्य, लग्नेश और धनेश चतुर्थेशके साथ हों तो उसके माता आदिकोंको नेत्रमंदता (दृष्टि कम) करते हैं. उक्त योगमें यदि उक्तग्रह अपने उच्च वा स्वराशिका हो तो दोष नहीं करता ॥ ६ ॥ ७ ॥

गुरुवाग्भवनाधीशौ त्रिकस्थानगतौ यदा ॥
मूकतां कुरुतोऽप्येवं पितृमातृगृहेश्वरः ॥ ८ ॥
ताभ्यां युतस्त्रिकस्थाने तेषां मूकत्वमादिशेत् ॥
बलाबल-विवेकेन जातकज्ञैर्विशेषतः ॥ ९ ॥

बृहस्पति और पञ्चमस्थानका स्वामी त्रिक ६।८।१२ स्थानमें हो तो मूकता (गूँगापन) आता है. यदि उक्त बृहस्पति और पञ्चमेशके साथ मातृपितृ आदि जिस भावका स्वामी त्रिकमें हो उसको मूकता कहनी, विशेषतः जातक जाननेवाले उनका बल एवं निर्बलता देखके फल कहें । जैसे-योगकारक ग्रह उच्च स्वराशिमें हो तथा शुभग्रहोंसे युक्त दृष्ट हों तो अनिष्ट फल पूरा नहीं देते । नीच, शत्रुराशिगत, पापयुत ग्रह कष्टफल पूरा ही देते हैं इत्यादि विचार करना ॥ ८ ॥ ९ ॥

धनाधिपो माननवायभावे बली यदा तिष्ठति जन्मकाले ॥ रमा विहारालयवासिनी वा निजोच्चमित्रालयगो जनानाम् ॥ १० ॥

यदि जन्मकालमें बलवान् धनभावेश दशम, नवम, लाभ भावमें हो अथवा अपने उच्च, मित्र राशिमें हो तो लक्ष्मी उसके विहार करनेके घरमें निवास करे ॥ १० ॥

अथ तृतीयभावविचारः ।

सहजे सहजाधीशे षडादित्रयगेऽपि वा ॥
सहजेऽपि विशेषेण भ्रातुः सौख्यं न जायते ॥११॥

तीसरे भावका विचार है-कि, तृतीयभावका स्वामी तीसरा हो अथवा छठे आदि ३ में हो तो भाइयोंका सुख न होवे, विशेपसे सहजभावमें यह विचार है क्योंकि ग्रंथोंमें लिखा है कि जिस भावका स्वामी अपने गृहमें रहता है उसकी वृद्धि करता है, यहां श्लोकार्थविरुद्ध प्रतीत होता है परंतु ग्रंथकर्त्ताका आशय'अपि'तथा'विशेष' शब्दसे है कि, बहुत सुख भाइयोंका न होवे, क्योंकि भाइयोंको दायाद (पितृधन लेनेवाले) कहते हैं. कैसा ही भाइयोंमें मेल हो परंतु कभी न कभी किसी प्रकारकी शत्रुता होती है ॥ ११ ॥

सहोत्थभावेशकुजौ सपापौ पापालये वा भवतो जनस्य ॥ उत्पाद्य सद्यो निहतः सहोत्थानितीरितं जातकतत्त्वविज्ञैः ॥ १२ ॥

तृतीयभावेश तथा मंगल पापयुक्त हों वा पापराशिमें हो तो मनुष्यके भाई जन्म पाकर मरते रहैं, इस प्रकार जातकोंके तत्त्व जाननेवाले कहते हैं ॥ १२ ॥

स्त्रीखेटः सहजाधीशः शुक्रो वाथ निशाकरः ॥
तत्रगो भगिनीं दत्ते भ्रातरं पुरुषग्रहः ॥ १३ ॥

तृतीयभावेश स्त्रीग्रह, शुक्र अथवा चन्द्रमा तृतीयभावमें हो तो भगिनी (बहिन) होवे । यदि पुरुषग्रह तृतीयेश होकर तृतीयमें हो तो भाई होते हैं ॥ १३ ॥

अथ चतुर्थभावविचारः ।

सुखपतिः सुखगस्तनुनाथयुग्जनयति प्रवराल- यमङ्गिनाम् ॥ त्रिकगतो विपरीतमिहादिभिः सुखजनुः पतिरेव तथा बुधैः ॥ १४ ॥

चतुर्थेश चतुर्थस्थानमें लग्नेशयुक्त हो तो शरीरियोंको बडे बडे घर मिलते हैं, यदि त्रिक ६।८।१२ स्थानमें हो तो विपरीत फल करता है। ऐसे ही चतुर्थेश लग्नेशसे भी पंडितोने फल कहा है॥१४॥

सुखाधीशे जीवे सुखनिवहचिन्ता भृगुसुते
विभूषायोषाङ्गप्रवरतुरगाणामपि बुधे ॥
अगौ मन्दे नीचोद्भवसुखमतेरेव दिनपे
पितुश्चन्द्रे मातुःक्षितिनिकरचिन्ता क्षितिसुते ॥१५॥

चतुर्थेश बृहस्पति हो तो बहुत सुखकी चिंता रहे, चतुर्थेश शुक्र हो तो भूषण, स्त्री, शरीर तथा श्रेष्ठ घोडा आदिकोंकी चिंता होवे, ऐसेही बुधसेभी होती है. शनि तथा राहु चतुर्थेश हो तो नीच-जनसंबंधी सुखकी चिंता होवे, सूर्य हो तो पितृपक्षकी; चन्द्रमा हो तो मातृपक्षकी और मंगल हो तो भूमिसमूहसंबंधी चिंता रहे. ऐसाही विचार प्रश्नमेंभी प्रष्टाके मनकी चितामें करना ॥ १५ ॥

त्रिकोणे वाहनाधीशे केन्द्रे च बलसंयुते ॥
निजोच्चादिपदे नूनं वाहनं नूतनं भवेत् ॥ १६ ॥

बलवान् चतुर्थेश त्रिकोण ५।९ में हो अथवा केंद्र १।४।७। १०में अपने उच्चादिपदमें हो तो निश्चय नवीन वाहन मिले ॥१६॥

अथ पंचमभावविचारः ।

लग्नाधीशे कुजक्षेत्रे पुत्रभावपतावरौ ॥
म्रियते प्रथमापत्यं ततोऽपि न सुतोद्गमः ॥ १७ ॥

पंचमभावका विचार है-कि, लग्नेश मंगलकी राशिमें हो तथा पंचमभावका स्वामी छठा हो तो प्रथम सन्तान मरजावे, उपरांत पुत्रोत्पत्ति न होवे ॥ १७ ॥

षडादित्रयगे नीच पुत्रेशे पापसंयुते ॥
काकवंध्यापतिस्तत्र केतुचन्द्रसुतौ यदा ॥ १८ ॥

पंचमेश पापयुक्त होकर ६।७।८ भावमें नीचराशि वा नीचांशकमें हो और पंचममें केतु तथा बुध हो तो वह पुरुष काकवंध्याका पति होवे अर्थात् उसकी स्त्री काकवंध्या (केवल एक ही सन्तान जननेवाली) होवे ॥ १८ ॥

तदीशो नीचगो यत्र पुत्रभावं न पश्यति ॥
तत्रैव बुधमन्दौ वा काकवंध्यापतिर्भवेत् ॥ १९ ॥

पंचमेश नीचराशिमें हो और पंचम भावको न देखे तथा पंचममें बुध शनि हों तो मनुष्य काकवंध्या (एक संतान जननेवाली) स्त्रीका पति होवे ॥ १९ ॥

धर्माधीशोऽङ्गगो नीचे सुतेशो यदि जन्मनि ॥
केतुज्ञौ पंचमे स्यातां पुत्रं कष्टाद्विनिर्दिशेत् ॥ २० ॥

जन्ममें नवमेश लग्नका हो तथा पंचमेश नीचराशिमें हो और बुध, केतु पंचम भावमें हों तो कष्टसे पुत्र कहना ॥ २० ॥

पंचमाधिपतिः केन्द्रे त्रिकोणे वा शुभैर्युतः ॥
तदा पुत्रसुखं सद्यो विलोमेन विलंवतः ॥ २१ ॥

पंचमेश केन्द्रमें वा त्रिकोणमें शुभग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो तो पुत्रका

सुख शीघ्र होता है।यदि विलोमं (पंचमेश केंद्रकोणरहित स्थानोंमें शुभग्रहयोग, दृष्टि रहित) हो तो पुत्रसुख विलंबसे होता है ॥२१॥

सन्तानभवनाधीशो जन्मलग्नाधिपस्तथा ॥
नरराशौ तदा पुत्रः स्त्रीराशौ कन्यका भवेत् ॥ २२ ॥

पंचमेश तथा जन्मलग्नेश पुरुषराशि (विषमराशि) में हों व उपलक्षणसे विषम नवांशोंमें हों तो पुत्र होवे और स्त्रीराशि (समराशि) योंमें हों तो कन्या होती है (मिश्रितमें कन्या, पुत्र, तुल्य जानना ऐसे विचार प्रश्नमें भी है) ॥ २२ ॥

अथारिभावविचारः ।

रोगेशो लग्नगो यस्य निधनस्थोऽपि जन्मनि ॥
व्रणोदयस्तु सर्वांगे सपापो न व्रणं दिशेत् ॥ २३ ॥

छठे भावका विचार है—कि, रोगभाव (छठा स्थान)का स्वामी जिसका लग्नमें हो अथवा अष्टम हो तो उसके सर्वांगमें व्रण (घाव) होवे. यदि वह ग्रह पाप युक्त भी हो तो व्रण न होवे ॥ २३ ॥

एवं तातादिभावेशास्तत्तत्कारकसंयुताः ॥
व्रणाधिपयुताश्चापि षडादित्रयभावगाः ॥ २४ ॥
तेषामपि व्रणं वाच्यं जातकज्ञैः सुकोविदैः ॥
कारकस्य दशाकाले व्रणमागन्तुकं दिशेत् ॥ २५ ॥

इसी प्रकार पितृमातृआदि भावोंके स्वामी उन्हीं उन्हीं कारकोंसे युक्त एवं व्रणाधिप (षष्ठेश) से युक्त हों तथा ६ । ७ । ८ भावोंमें हों तो उन पितृमात्रादियोंके अंगोंमें जातक जाननेवाले अच्छे चतुरोंने विचारपूर्वक चतुरतासे व्रण कहे हैं। ये व्रण उसी कारक ग्रहके दशासमयमें होनेवाले कहने ॥ २४ ॥ २५ ॥

शिरोदेशे भानुर्मुखपरिसरे शीतगुरलं
धरासूनुः कण्ठे जनयति बुधो नाभिनिकटे ॥

गुरुर्नासामध्ये पदनयनयोरेव भृगुजः
शनी राहुःकेतुर्व्रणमुदरभागे जनिमताम् ॥ २६ ॥

उक्तयोगकारक यद्वा षष्ठेश सूर्य हो तो शिरमें, चंद्रमा मुखमें, मंगल कंठ (गले) में, बुध नाभीके समीप, बृहस्पति नाकके बीचमें, शुक्र पैर तथा नेत्रोंमें, शनि राहु केतु उदर (पेट) में मनुष्योंके व्रण (खोट आदि) अवश्य करते हैं ॥ २६ ॥

लग्नेशो यदि भौमभे बुधयुतो रोगं मुखे जन्मिनां
रोगाङ्गाधिपती यदा कुजबुधौ चन्द्रेण वा राहुणा॥
मन्देनापि युतौ प्रयच्छत इति प्रायोऽङ्गगो रात्रिपो
युक्तो वा तमसा सितं च शनिना कुष्ठं तदा
श्यामलम् ॥ २७ ॥

यदि लग्नेश मंगलकी राशिमें बुधसहित हो तो मनुष्योंके मुखमें रोग रहे, लग्नेश तथा षष्ठेश बुध मंगल हों और चंद्रमा अथवा राहु या शनिसे युक्त हो तो कुष्ठ समान रोग होता है। विशेषतः चंद्रमा लग्नमें राहुसे युक्त हो तो श्वेतकुष्ठ और शनियुक्त हो तो कृष्णकुष्ठ होवे ॥ २७ ॥

अथ सप्तमभावविचारः ।

विना स्वर्क्षं कलत्रेशस्त्रिकस्थानगतो यदि ॥
रोगिणीं तरुणीं दत्ते तथा तुङ्गपदं विना ॥ २८ ॥

यदि सप्तमभावेश त्रिक ६।८।१२ भावमें हो अपनी राशि छोडकर तथा उच्चराशि नवांशमें हो तो स्त्री रोगिणी मिले ॥२८॥

जायास्थानगते शुक्रे कामी भवति मानवः ॥
पापभे पापसंयुक्ते कवौ नारीसुखोज्झितः ॥ २९ ॥

जिस मनुष्यका शुक्र सप्तम हो वह कामी (अतिस्त्रीसंग चाहने-

वाला) होवे, यदि शुक्र पापराशिमें पापसंयुक्त हो तो पुरुष स्त्रीके सुखसे रहित रहे ॥ २९ ॥

चतुर्थे महिलाधीशे लग्ने लग्नाधिपे यदा ॥
कलत्रे वा कुटुम्बे वा व्यभिचारी नरो भवेत् ॥३०॥

सप्तमेश चतुर्थमें, लग्नेश लग्नमें यदि हो अथवा सप्तममें वा द्वितीय स्थानमें हो तो पुरुष व्यभिचारी (यथेच्छ स्त्रियोंका गमन करनेवाला) होवे ॥ ३० ॥

यावन्तो निधने खेटा निजस्वामिसमीक्षिताः ॥
तावन्तोऽपि विवाहाः स्युः प्राणिनां कथिता बुधैः ३१

जितने ग्रह अष्टम स्थानमें अष्टमेशसे दृष्ट हों उतने विवाह मनुष्योंके पंडितोंने कहे हैं (ऐसा विचार सप्तम भावमें भी होता है)३१

जायाधीशे निजक्षेत्रे निजोच्चे कोणकंटके ॥
शुभग्रहैर्युते दृष्टे विवाहः सत्वरं भवेत् ॥ ३२ ॥

सप्तमेश अपनी राशिमें अथवा अपने उच्चमें त्रिकोण केंद्रभावमें हो और शुभग्रहसे युक्त या दृष्ट हो तो विवाह वहुत शीघ्र होवै ३२

अथाष्टमभावविचारः ।

अष्टमाधिपतिः पापैर्युतो लग्नेश्वरोऽपि चेत् ॥
करोत्यल्पायुषं जातं शुभेक्षणविवर्जितः ॥ ३३ ॥

अष्टमभावका विचार—है कि, अष्टमेश अथवा लग्नेश पापयुक्त हो उसे शुभग्रह न देखे तो मनुष्योंको अल्पायु करता है ॥ ३३ ॥

तमःशनिभ्यां निधनाधिनाथः पापैर्युतो हीनबलोऽस्तगो वा ॥ अल्पायुषं जातकमेव सद्यः करोति नैवोच्चनिजर्क्षगश्चेत् ॥ ३४ ॥

अष्टमभावेश यदि राहु शनिसे युक्त अथवा पापयुक्त एवं वल-

हीन अस्तंगत हो तो मनुष्यको अल्पायु (थोडे दिन जीनेवाला) करता है परंतु यदि अपने उच्च राशि वा स्वगृहमें न हो ॥ ३४ ॥

अष्टमस्थे रवौ वह्नेश्चन्द्रे तु जलयोगतः ॥
करवालात्कुजे ज्ञेयं मरणं ज्वरतो बुधे ॥ ३५ ॥
गुरौ त्रिदोषतः शुक्रे क्षुधया तृषया शनौ ॥
चरस्थिरद्विस्वभावैः परदेशे गृहे पथि ॥ ३६ ॥

अष्टमभावमें वा अष्टमेश सूर्य हो तो अग्निसे, चंद्रमा हो तो जलके संयोगसे, मंगल हो तो तलवार आदि शस्त्रोंसे,बुध हो तो ज्वरसे, बृहस्पति हो तो (त्रिदोष) वात, पित्त, कफ इन तीनों दोषोंसे, शुक्र हो तो क्षुधा (भूख) अथवा अन्नादिकी अरुचिसे, शनि हो तो तृषा (प्यास)रोगसे मनुष्यकी मृत्यु होती है और उक्त मृत्युकारक ग्रह चर राशिमें हो तो परदेशमें, स्थिरमें हो तो घरमें, द्विस्वभावमें हो तो मार्गमें मृत्यु होवे ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

केन्द्रे कोणेऽष्टमाधीशे तुङ्गादिपदगे तदा ॥
दीर्घायुरुदितं पूर्वैर्व्यत्यये हीनमङ्गिनाम् ॥ ३७ ॥

अष्टमभावका स्वामी केन्द्र अथवा कोणमें हो तथा उच्च स्वराशि आदि पदमें हो तो पूर्वाचार्योंने उस मनुष्यकी दीर्घायु कही है. इनसे व्यत्यय (विपरीत) अर्थात् केंद्र कोणोंसे रहित स्थानोंमें तथा नीच शत्रु आदि राशियोंमें हो तो अल्पायु जानना ॥ ३७ ॥

अथ नवमभावविचारः ।

लग्नादिन्दोर्नवमभवनं भाग्यमार्य्यैः प्रदिष्टं
भाग्यं तस्मात्प्रथममसुतः संविचिन्त्यं प्रयत्नात् ॥
युक्तं दृष्टं जननसमये स्वामिना सौम्यखेटै-
र्जन्तोर्भाग्यं प्रसरति विधोरेव शौक्ली कलेव ॥३८॥

लग्नसे तथा चंद्रमासे नवमस्थान श्रेष्ठ आचर्योंने भाग्य(ऐश्वर्य वा प्रारब्ध)का स्थान कहा है इसलिये इस नवम भावसे ज्योतिषी प्रथम यत्नपूर्वक भाग्यका विचार करे। भाग्यभाव नवमस्थानको कहते हैं, यह जन्मसमयमें भावेश एवं शुभ ग्रहोंसे युक्त दृष्ट हो तो मनुष्यका भाग्य शुक्लपक्षकी चन्द्रमाकी कलाके समान प्रतिदिन फैलता (बढता) है॥ २८ ॥

सहोत्थपुत्राङ्गगतो ग्रहश्चेद्भाग्यं प्रपश्येद्यदि वा सवीर्यः॥हिरण्यमाली खलु भाग्यशाली प्रसूतिकाले यदि यस्य जन्तोः ॥ २९ ॥

जिस मनुष्यके जन्ममें यदि ३।५।१ भावस्थित ग्रह बलवान् हो तथा नैसर्गिक दृष्टिसे नवम भावको देखे तो वह सुवर्णमाला पहरनेवाला धनवान् तथा भाग्यवान् होवे ॥ २९ ॥

निजोच्चभे पुण्यगृहे नभोगो बलिर्यदा तिष्ठति जन्मकाले ॥ स पुण्यशाली नवरत्नमाली धराधिपो राजकुलप्रसूतः ॥ ४० ॥

अपनी उच्चराशिका कोई ग्रह बलवान् नवमस्थानमें जन्मकालका जिसका हो वह पुण्यवान्,नवरत्नोंकी माला पहिरनेवाला होवै, राजवंशमें उत्पन्न भया हो तो राजा ही होवे ॥ ४० ॥

जीवज्ञशुक्रा नवमे बलिष्ठाः सुतेशदृष्टा यदि जन्मकाले ॥ स पुण्यकर्त्ता नृपतेरमात्यो नृपालजातो नरपालवर्य्यः ॥ ४१ ॥

जिसके जन्मकालमें बृहस्पति, बुध और शुक्र नवमस्थानमें बलवान् हों उनपर पंचमभावेशकी दृष्टि भी हो तो वह मनुष्य पुण्य करनेवाला राजाका मन्त्री होवे, राजवंशीका यह योग हो तो श्रेष्ठ राजा होवे ॥ ४१ ॥

भाग्यभावाधिपो नीचे रविलुप्तकरे सति ॥
अरिगेहगतो वाऽपि भाग्यहीनो नरो भवेत् ॥ ४२ ॥

भाग्यभाव (९) का स्वामी नीचराशिमें हो तथा अस्तंगत अथवा शत्रुराशिमें हो तो मनुष्य भाग्यहीन होता है ॥ ४२ ॥

अथ दशमभावविचारः ।

कर्मभावाधिपो नीचे षडादित्रयगोऽपि चेत् ॥
करोति कर्मवैकल्यं स्वोच्चस्वर्क्षपदं विना ॥ ४३ ॥

दशमभावका विचार कहते हैं-(इसकी कर्म, राज्य, तात आदि संज्ञा पूर्व कही है) इसका स्वामी नीचराशिका त्रिक स्थान ६।८ १२ में हो तो कर्मवैकल्य (कार्यमें विघ्न, यद्वा कार्य्यहानि या भाग्यहानि) करता है परंतु उच्च एवं स्वराशिमें न हो तो ॥ ४३ ॥

कर्माधिपे केन्द्रनवात्मजर्क्षे बुधेज्यदृष्टे सवले नराणाम् ॥ तुरङ्गमातङ्गनवाम्बराणि भवन्ति नानाधनसंयुतानि ॥ ४४ ॥

बलवान् दशमेश केंद्र १।४।७।१० नवात्मज ९।५ स्थानमें हो तथा बुध बृहस्पति उसे देखें तो मनुष्य घोडे, हाथी, नवीन वस्त्रादि और अनेक प्रकारके धनोसे सयुक्त रहे ॥ ४४ ॥

कर्मपः केन्द्रकोणस्थो ज्योतिष्टोमादियज्ञकृत् ॥
कूपायतनकर्त्ता च देवतातिथिपूजकः ॥ ४५ ॥

दशमेश केंद्र, कोणमें हो तो ज्योतिष्टोम आदि यज्ञ करनेवाला तथा कूप (कुवा बावड़ी) धर्मशाला, मठ मन्दिर आदिकोंका बनानेवाला होवे तथा देवता एवं अतिथियों (अभ्यागतों) का पूजन करनेवाला होवे ॥ ४५ ॥

लग्नादिन्दोर्दशमभवने जन्मकाले नराणा-
माहित्याद्यैः क्रमत उदिता जीविका खेचरेंद्रैः ॥
तातान्मातुर्निजरिपुकुलान्मित्रपक्षात्सहोत्थात्
पत्न्याः पुत्रादपि बुधवरैर्जातकज्ञैर्विशेषात् ॥ ४६ ॥

लग्नसे अथवा चन्द्रमासे दशमस्थानमें जो ग्रह,मनुष्यके जन्म-कालमें हो उसके अनुसार कर्मसे वा सम्बन्धसे आजीविका (योग-क्षेम) होता है। दशममें कोई ग्रह न हो तो दशमेशसे कहना । सूर्य हो तो पितासे वा पितावाले कर्मसे,ऐसे ही चन्द्रमा हो तो मातासे, मङ्गल हो तो शत्रुकुलसे, बुध हो तो मित्रपक्षसे, बृहस्पति हो तो भ्रातृपक्षसे, शुक्र हो तो स्त्रीसे, शनि हो तो पुत्रसे कर्माजीविका विशेषतः जातक जाननेवाले पण्डितोंने कही है ॥ ४६ ॥

रविशीतकरांगकर्मपानां नरवृत्तिः कथिता लवेंश-वृत्त्या ॥ कनकोर्णतृणौषधैर्दिनेशे कृषिदाराम्बुसमा-श्रयाच्च चन्द्रे ॥ ४७ ॥

दूसरा प्रकार कहते हैं–कि, सूर्य तथा चन्द्रमा और लग्नराशि इनसे दशम स्थानोंके स्वामी जो ग्रह हों वे जिस ग्रहके अंशमें हों उन ग्रहोंकी वृत्ति (आजीवनोपाय) मनुष्यकी होती है। जैसे सूर्य जीविकादाता हो तो सुवर्ण, ऊन, तृण (घास आदि) औषधी अन्नादिके सम्बन्धसे, चन्द्रमा हो तो कृषी (खेती) के कर्म, जल-कर्म स्त्रीके आश्रयसे आजीवन होता है ॥ ४७ ॥

अथ साहसवह्निधातुशस्त्रैः क्षितिजे काव्यकला-पतो ज्ञे ॥ लवणद्विजकांचनेभदेवैर्मणिरौप्यचयैः क्रमाच्च गुर्वोः ॥ ४८ ॥

इसके उपरांत फल है–कि,मङ्गल कर्माजीविका देनेवाला हो तो

साहसके कर्म, अग्निकर्म,धातुसम्बन्धीकर्म, शस्त्रकर्मसे,बुध हो तो काव्य और कलाओंके समूहसम्बन्धी कर्मसे,बृहस्पति हो तो लवण व्यापारसे, ब्राह्मण एवं सुवर्ण, हाथी, देवतासम्बन्धी कर्मसे, शुक्र हो तो मणि, गौ, चांदी समूहसम्बन्धी कृत्यसे जीविका मिले ऐसे जानना ॥ ४८ ॥

रविजे श्रमभारनीचतः स्यादिह कर्मेशभवांशनाथवृत्तिः ॥ हितवैरिनिजर्क्षतुङ्गसंस्थैर्हितवैरिस्ववशाद्धनाप्तिरुच्चैः ॥ ४९ ॥

शनि हो तो श्रम (मेहनत) भार ढोना, नीचकर्म (गुलामी आदि) से आजीविका होवे, यह कर्मेश (दशमेश) जिस नवांशकर्में हो उसका जो स्वामी है उसकी उक्त आजीविका मनुष्यकी होती है । वह ग्रह मित्रराशि अंशकोंमें हो तो मित्रपक्षके, शत्रुमें शत्रुसे, स्वराशिमें अपने पराक्रमसे, उच्चमें अकस्मात् बडे लोगोंसे धनप्राप्ति या आजीविका होती है ॥ ४९ ॥

अथायभावविचारः ।

लाभेशो यदि केन्द्रस्थो लाभाधिक्यं प्रजायते ॥
षडादित्रयगे नीचे लाभबाधा नृणां सदा ॥ ५० ॥

अब ग्यारहवें भावका विचार कहते हैं-कि लाभेश यदि केंद्रमें हो तो मनुष्यको लाभ अधिक होता है । यदि ६ । ८ । १२ भावमें यद्वा नीचराशिमें हो तो लाभकी बाधा करता है ॥ ५० ॥

आदित्येन युतेक्षिते नृपकुलाल्लाभालये चौरतो लाभो नित्यमथेन्दुना गजजलप्रोद्भूतवामाजनैः ॥
भूपुत्रेण विचित्र-यानमणिभूस्वर्णप्रवालादिभिर्जतोश्चन्द्रसुतेन शिल्पलिखनव्यापारयोगैरलम् ५१॥

सूय ग्यारहवें स्थानमें युक्त हो अथवा सूर्य इस भावको देखे तो राजकुलसे, तथा चोर मनुष्यसे नित्य लाभ होवे। उक्त प्रकारसे चन्द्रमा हो तो हाथी, जलसंबंधी कृत्यसे तथा स्त्रीजनोंसे, मंगल हो तो अनेक प्रकारके वाहन, मणि (रत्न), भूमि, सुवर्ण, मूँगा आदिसे, बुध हो तो शिल्प (कारीगरी) लिखना व्यापार आदि कृत्योंसे मनुष्यको लाभ होता रहै ॥ ५१ ॥

जीवेनापि नरेशयज्ञगजभूज्ञानक्रियाभिः सिते-
नालं वारवधूगमागमगुणव्याख्यानमुक्ताफलैः ॥
मन्देनापि गजव्रजव्यसनभूनीलेन्द्रलोहव्रजै-
रित्थं तत्र बहुग्रहैरभिहितो नानार्थलाभो बुधैः॥५२॥

उक्त प्रकारका बृहस्पति हो तो राजासे, यज्ञकृत्यसे, हाथी एवं भूमिसंबंधी कृत्यसे, ज्ञानसंबंधी क्रियाओंसे लाभ होवे। शुक्र हो तो निश्चय वारांगना (वेश्या) ओंके (गमागम) कुकर्मआदिसे, तथा गुणोंके व्याख्यानसे, मोतियोंके व्यापारसे और शनि हो तो हाथियोंके समूहकृत्य, यद्वा गोठ (गोपालकृत्य) व्यसन (द्यूतआदि) भूमि कृत्य, नीलम, लोहा आदिसे होवे। यदि लाभभावमें बहुत ग्रह हों वा उसे देखें तो बहुत ही प्रकारसे धन मिले यह पूर्वपंडितोंने कहा है ॥ ५२ ॥

अथ व्ययभावविचारः।

शुभग्रहाः प्रयच्छन्ति व्ययस्था विपुलं धनम् ॥
विपरीतं खला जन्तोर्जन्मकाले विशेषतः ॥५३॥

बारहवें भावका विचार है–कि, व्ययभावमें शुभग्रह हों तो बहुत धन देते हैं तथा पापग्रह विपरीत फल जन्मकालमें विशेषतासे करते हैं ॥ ५३ ॥

क्षीणेन्दुरन्त्यगो यस्या रविणा सहितो यदि ॥
तस्य वित्तं हरेद्राजा कुजेनापि युतेक्षिते ॥ ५४ ॥

इति भावकुतूहले भावविचारे पंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

जिसका क्षीण चंद्रमा व्ययभावमें सूर्यसे युक्त हो तो उसके धनको राजा हरलेवे । मंगलसे युक्त,दृष्ट होनेमें भी यही फल है ॥५४॥

इति भावकुतूहले माहीधरीभाषाटीकायां भावफलाध्यायः ॥ १५ ॥

षोडशोऽध्यायः ।

अथ दशानयनाऽध्यायः ।

सूर्यादिग्रहाणां विंशोत्तरीदशा ।

रसा आशा शैला वसुविधुमिता भूपतिमिता
नवेलाः शैलेला नगपरिमिता विंशतिमिताः ॥
रवाविन्दावारे तमसि च गुरौ भानुतनये
बुधे केतौ शुक्रे क्रमत उदिताः पाकशरदः ॥ १ ॥

अब दशाविचार कहते हैं कि, सूर्यके ६, चंद्रमाके १०, मंगलके ७, राहुके १८, बृहस्पतिके १६, शनिके १९, बुधके १७, केतुके ७, शुक्रके २० वर्ष नियत हैं, दशाक्रम भी इसी क्रमसे है ॥ १ ॥

कृत्तिकादित्रिरावृत्त्या दशा विंशोत्तरी मता ॥
अष्टोत्तरी न संग्राह्या मारकार्थे विचक्षणैः ॥ २ ॥

कृत्तिकासे तीन आवृत्ति गिननेसे नक्षत्र दशाधिपति मिलता है, जैसे कृत्तिका जन्मनक्षत्रमें सूर्यकी दशा प्रथम, रोहिणीमें चन्द्रमाकी इत्यादि । पुनः दूसरी आवृत्ति उत्तराफाल्गुनीसे, तीसरीमें उत्तराषाढासे गिनना, यह विंशोत्तरी (१२०वर्षके क्षेपककी) दशा कारक मारक विचारमें मुख्य है, जाननेवालोंको इसीसे मारक कारक फल कहना चाहिये, अष्टोत्तरी आदिसे नहीं ॥ २ ॥

दशाभुक्तभोग्यानयनम्।

गतर्क्षनाडीनिहता दशाब्दैर्भभोगनाड्या विहृता फलं यत् ॥ वर्षादिकं भुक्तमिह प्रवीणैर्भोग्यं दशाब्दान्तरितं निरुक्तम् ॥ ३ ॥

नक्षत्रकी भुक्तघटीको जिस ग्रहकी दशा प्रथम है उसके वर्षोंसे गुणकर नक्षत्रके सर्वभोगसे भाग देना लब्धि वर्ष, मास,दिन,घटी, क्रमसे उस ग्रहकी भुक्त दशा होती है, इसको ग्रहके वर्षोंमें घटायके भोग्य दशा होती है. अन्य ग्रहोंके पूरे वर्ष जोडते जाना यह विंशोत्तरी उडुदशा होती है.उदाहरण है कि,यह भरणी नक्षत्रभुक्त २४।२० भोग्य ३९।५ सर्व भोग्य ६३।२५। नक्षत्रभुक्त २४। २० को भरणीमें प्रथम दशापति शुक्रके वर्ष २० से गुणा किया पलात्मक २९२०० हुआ, इसमें सर्वभोग्य ६३।२५ पलात्मक ३८०५ से भोग लिया तो लाभ (७) वर्ष हुए शेष २५६५को १२ से गुणा किया ३०७८० इसे पुनः ३८०५ का भाग लेनेसे लाभ (८) महीना मिले शेष ३४०को३० से गुणा किया१०२०० इसमें भी उसी हारसे भाग लिया तो लब्धि दिन (२) मिले, शेष २५९० को ६० से गुणाकर १५५४०० इसमें भाग लेनेसे लाभ (४०) घटी मिलीं यह भुक्तदशा शुक्रकी हुई, इसको शुक्रके वर्ष २० में घटाया तो शेष १२ वर्ष, ३ महीने, २७ दिन २० घटी शुक्रके भोग्यदशा रही, इसमें सूर्यके वर्ष ६ जोडनेसे १८।३। २७।२० इतने वर्षादि पर्यन्त सूर्यदशा होती है, ऐसे ही सभी ग्रहोंके वर्षादि जानने ॥ ३ ॥

अन्तर्दशा-विदशाकरणम्।

दशा दशाहता कार्या विहृता परमायुषा ॥ अंतर्दशाक्रमादेवं विदशाप्यनुपाततः ॥ ४ ॥

अब अन्तर्दशाकी विधि कहते हैं कि, जिस ग्रहकी दशामें अन्तर लाना है उस ग्रहकी दशा वर्षादिको अन्तरवाले ग्रहकी दशासे गुणाकर परमायु १२० से भाग लेकर पूर्वोक्तरीतिसे वर्षादि ४ अंक लेने, वह वर्षादि ग्रहकी अन्दर्दशा होती है, एक ग्रहकी दशामें. इसी प्रकार प्रत्येक ग्रहोंकी अंतर्दशा लेनी. ऐसे ही अनुपात क्रमसे विदशाएँ भी होती हैं ॥ ४ ॥

अथ दशाफलानि । तत्रादौ सूर्यस्य ।

उद्वेगिता हृदि तता परितो लतावद्दायादवाद उत वित्तवियोगयोगाः ॥ चिन्ता भयं नरपतेरपि पाककाले रोगागमो भवति भानुदशाप्रवेशे ॥ ५ ॥

सूर्यकी दशाप्रवेशमें मनुष्यके हृदयमें चारों तरफसे वृक्षपर लता जैसी फैली हुई उद्वेगिता (अनवस्थिति) रहे. भाई, विरादरीमें कलह होवे, धनहानि होय और धन मिलै भी तौ चिंता रहै, राजासे भय होवे तथा रोग भी होता है ॥ ५ ॥

अथ चन्द्रस्य फलानि ।

सदा पाके राकेशितुरधिकृतिर्भूपतिकृता
सतां संगो रंगोत्सवसवकृतिप्रीतिरतुला ॥
अलङ्कारागारो रिपु-कुलमलङ्कारजसुखं
कलावत्यारत्या गम इभरथारामरमणम् ॥ ६ ॥

चंद्रमाकी दशामें सर्वदा राजासे अधिकार मिले, सज्जनोंकी संगति नाच रंग आदि उत्सव, नाट्य (नाटक, नट खेल आदि) में, यज्ञकर्मोंमें बडी प्रीति होवे, भूषण वस्त्र आदि अलंकारोंका घर होवे, शत्रुकुलके क्षय होनेसे सुख होवे । षोडशवर्षकी सुरूपा स्त्रीके साथ रतिक्रीडा मिले, हाथी, रथ आदि वाहन मिलें, बाग आदिकोमें रमित रहे ॥ ६ ॥

अथ भौमस्य फलानि ।

अनलगरलभीतिः शस्त्रघातो नराणामरिगणनृपचौरव्यालशङ्काकुलत्वम् ॥ क्षितिसुतपरिपाके कामिनीपुत्रकष्टं भवति वमनमाधिर्व्याधिरर्थक्षतिश्च ॥७॥

मंगलकी दशामें मनुष्योंको अग्नि, विषका भय, शस्त्रसे घाव होवे, शत्रुजन तथा चोर, राजा, सर्पसे भय होनेकी शंका एवं व्याकुलता होवै; स्त्रीपुत्रोंको कष्ट मिले, वमन (वांति) का रोग होवे. मानसी चिंता, रोग और धनहानि भी होवै ॥ ७ ॥

अथ राहोः फलानि ।

राकेशारातिपाके नृपकुलवशतो द्रव्यनाशो विनाशो मानस्यातीवरोगागमनमपि नृणां तातकष्टं विशेषात् ॥ कान्तापत्याकुलत्वं हितजनखलताऽरातिरायाति सद्मव्यामोहागारमंतःपरित उत ततातुंगताताङ्कता वा॥८॥

राहुकी दशामें मनुष्योंको राजकुलके वशसे धनका नाश, मानका विनाश होवे, बहुत रोग उत्पन्न होवैं तथा विशेषतः पितृकष्ट मिले, स्त्रीपुत्रोंकी ओरसे व्याकुलता रहे, मित्रजनोंके साथ दुष्टता होवै,शत्रु चढकर मकानहीपर आजावे,चित्तमें चारों ओरसे अज्ञानता आवे, नीचत्वको प्राप्त करे और भययुक्त रहे ॥ ८ ॥

अथ गुरुदशाफलम् ।

उर्वी गुर्वी समायात्यवनिपतिकुलान्नामकत्वं जनानां कान्तादन्तावलाग्रागम इह कमलालंकृता वासशाला॥ मैत्री सद्भिर्महद्भिर्गुरुजनगरिमा कालिमारातिकास्ये हृद्या विद्यानवद्या भवति च वचसामीशितुः पाककाले॥

बृहस्पतिकी दशामें मनुष्योंको राजकुलसे श्रेष्ठ पृथ्वी मिलती है. तथा अधिकारिता (प्रधानता) होती है, रमणीय स्त्री मिलती है, सवारीको श्रेष्ठ हाथी मिलता है, रहनेका बहुत बडा घर धनादि शोभासे भूषित रहता है, सज्जनोंसे तथा वडे लोगोंसे मित्रता, गुरुजनोंसे गौरव(मान)मिलता है, शत्रुके मुख काले होते हैं, रमणीय एवं अतिप्रशंसनीय विद्या होती है ॥ ९ ॥

अथ शनिदशाफलम् ।

मिथ्यावादेन तापोऽरिनरजनकृतातङ्कता रङ्कता वा
कृत्या गुप्ता प्रतप्ता मतिरपि कुजनैरर्थनाशो जनानाम् ।
कान्तापत्यादिरोगो जनककनकगोवाजिदन्तावलानां
विच्छेदो मित्रभेदो दिनदसुतदशायामनर्थो विशेषात्॥

शनिकी दशामें मनुष्योंको झूठे कलंक लगनेसे संताप, शत्रुजनके किये उपद्रवसे क्लेश होता है, अथवा फकीरी (भीख मांगनी) होती है, गुप्तकृत्या (अभिचार) से संतप्तता रहै, बुद्धि भी सन्तप्त होजावै, दुष्टजनोंकरके धननाश होवै, स्त्री पुत्रादिकोंको रोग होवै, पिता, सुवर्ण, गौ, घोडे, हाथियोंका वियोग (नाश) होवै, मित्रोंसे शत्रुता होवै, विशेष करके इस दशामें अनर्थ होते हैं ॥ १० ॥

अथ बुधदशाफलम् ।

दिव्याहारविहारयानजनतापत्यार्थमानांवर-
श्रेणीग्रामनवालयेन्दुवदनालाभं विशेषादिह ॥
सद्भिः सङ्गमनङ्गमङ्गमतुलं प्रोत्तुंगमातंगजं
सौख्यं संतनुते दशा सुतयशोवृद्धिं च सिद्धिं विदः ११

बुधकी दशामें मनुष्योंको दिव्य (उत्तम) आहार (भोजन), विहार, सवारी, मनुष्यसंगम, यद्वा मनुष्यता, संतान, धन, मान, वस्त्र, ग्राम, भूमि, नवीन मकान, चंद्रमुखी (सुरूपा) स्त्री इतनी वस्तु-

ओंका विशेषतः लाभ होता है, सज्जनोंका संग, कामदेवकी वृद्धि, ऊंचे हाथीकी सवारीका सुख मिलता है, संतानवृद्धि,यशकी वृद्धि और सब कार्यमें सिद्धि होती है ॥ ११ ॥

अथ केतुदशाफलम् ।

मनस्तापं तापं निजजनविवादं खलकृतं
सदा चन्द्राशतेरुदरभवरोगं वितनुते ॥
दशा पुंसामारादनुगतिमपायं निजमतेः
कृशत्वं वित्तानामवनिपतिकोपेन परितः ॥ १२ ॥

केतुकी दशामें मनुष्योंके मनमें संताप; ज्वर; अपने मनुष्योंमें (विवाद) कलह होवे, दुष्टजनोंसे मुकाविला होवे, पेटमें रोग उत्पन्न करता है, शीघ्र ही शीघ्रगमन, भ्रमण होते हैं, अपनी ही बुद्धिसे धनादिकोंका नाश होवे, शरीरमें कृशता आवे, सर्वप्रकार राजाके कोपसे धनका क्षय होवे ॥ १२ ॥

अथ शुक्रदशाफलम् ।

तुल्यत्वं धरणीधवेन महता मित्राज्जयो जन्मिनां
मारोल्लासविकास एव कमलालावण्ययुक्तं गृहम् ॥
दिव्यारामसुधामसामबहुला व्याख्यानगानध्वनिः
प्रज्ञासौख्यमतीवपाकसमये शाला विशाला कवेः १३

शुक्रकी दशामें मनुष्योंको वडे राजाकी तुल्यता मिलती है, मित्रसे जय (जीत) भलाई होती है, कामक्रीडाका उत्सव,विलास हासमें आनंद होता है,घरमें लक्ष्मी,कोमल स्त्रीका वास होवे, उत्तम बाग वगीचा,उत्तम मकान आदि वहुत होते हैं,शास्त्रोंका व्याख्यान, गायनका शब्द, बुद्धिकी कुशलता आदिकोंका वहुत सुख होता है तथा वडे वडे घर,बनते हैं ॥ १३ ॥

अथ उच्चगतग्रहदशाफलम् ।

निजोच्चगामिनो यदा तदा तता यशोलता नवा-म्बरादिभूषणैः सुखं वराङ्गनागमः॥ उपेन्द्रतुल्य-तामता गजेन्द्रवाजिराजिका रथा वृषाश्च वैरिणः कृशा वशा दशा यदा ॥ १४ ॥

जो ग्रह जन्ममें उच्चका हो उसकी दशा जब हो तब मनुष्योंकी लता बहुत फ़ैलती है, नवीन वस्त्र, भूषण आदिकोंका सुख मिलता है, श्रेष्ठअंगवाली स्त्री घरमें आती है,उपेंद्र(श्रीकृष्ण) यद्वा चक्रवर्ती राजाके समान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यवान् होता है, श्रेष्ठ हाथी, घोडे, रथ, बैल आदि मिलते हैं, शत्रु दुर्बल होकर वश होते हैं ॥ १४ ॥

अथ स्वक्षेत्रगतदशाफलम् ।

दशा निजागारगतस्य यस्य नवाम्बरागारवि-हारसौख्यम् ॥ नवीनयोषा बहुभूमिभूषा यशो-विशेषादरिवर्गहानिः ॥ १५ ॥

जो ग्रह अपनी राशिका हो उसकी दशामें नवीन वस्त्र, नवीन घर, विहार आदिकोंका सौख्य होवे,नवीन स्त्री मिले, बहुत भूमि, बहुत भूषण मिलते हैं,शत्रुपक्षकी हानि होती है ॥ १५ ॥

अथ मित्रक्षेत्रगतग्रहदशाफलम् ।

कलत्रपुत्रैरपि मित्रपुत्रैरतीव सौख्यं हितराशि-गस्य ॥ दशाविपाके वसनं नृपालाद्विशेषतो मानविवर्द्धनं स्यात् ॥ १६ ॥

जो ग्रह अपने मित्रकी राशिमें हो उसकी दशामें स्त्री, पुत्रोंसे तथा मित्र, एवं उनके पुत्रोंसे अतीव सुख मिले तथा राजासे वस्त्र खिलत मिले, विशेषतः मानकी वृद्धि होवे ॥ १६ ॥

रिपुराशिस्थग्रहदशाफलम् ।

मनोजवेगो रिपुवर्गभीतिः कृशत्वमर्थक्षतिरास्तिवाधा ॥ दशा यदारातिगृहस्थितस्य तदा नरस्य प्रकृतिश्चला स्यात् ॥ १७ ॥

जो ग्रह शत्रुराशिमें हो उसकी दशामें मनुष्यको कामदेवका वडा वेग रहता है, शत्रुपक्षसे भय, शरीरमें कृशता, धनकी हानि, आदमनीमें विघ्न वा विलम्व होता है, स्वभाव भी चलायमान हो जाता है; यानी बुद्धि ठिकाने नहीं रहती ॥ १७ ॥

अथ रोगेशदशाफलम् ।

रोगाधीशदशाऽबला जनकलिं रोगागमं जन्मिनामाधिव्याधिमरिव्रजव्रणगणातङ्कं कलङ्कं खलात् ॥ मानध्वंसमतिक्षयं कलयति ज्ञानार्थनाशं तथा चित्तव्याकुलता च पापवशतो धातुक्षयं प्रायशः॥१८

निर्बल रोगेश (षष्ठेश) की दशा-मनुष्योंके स्वजयके साथ कलह, रोगकी उत्पत्ति, मानसी चिन्ता, रोग शत्रुसमूहकी वृद्धि, व्रण (घाव) समूहोंसे क्लेश, दुष्टजनोंसे कलंक (झूँठा अपवाद) मानका विध्वंस, बुद्धिका नाश, ज्ञानका व धनका नाश, चित्तमें व्याकुलता और पापके वशसे धातुक्षय करती है ॥ १८ ॥

अष्टमेशदशाफलम् ।

निधनभावपतेरवनीपतेरतिभयं गदजालभयं दशा॥कलयति स्वजनस्य विनाशनं निधनतामपि वा भविनामिह ॥ १९ ॥

अष्टमेशकी दशा जन्मियोंको राजासे वडा भय, रोगसमूहोंका भय, अपने मनुष्योंका नाश और मृत्युका भय भी देती है ॥ १९ ॥

व्ययेशदशाफलम् ।

वित्तक्षतिरवनीशादाधिव्याधिर्व्ययेशपरिपाके ॥
कष्टं मृत्युसमानं भवति कुयानं कुसङ्गसंयोगः॥२०॥

व्ययेशकी दशामें राजासे धनका क्षय होता है, मानसी चिन्ता रोग होते हैं, मृत्युके समान कष्ट मिलता है. भैंसा, गदहा आदि निषिद्ध सवारी मिलती हैं और कुसङ्गियोंकी सङ्गति होती है॥२०॥

सप्तमेशदशाफलम् ।

जायापतिपरिपाके रोगज्वाला हृदि स्थिता भवति॥
रिपुजनजनिता बाधा वित्तविनाशो नरेशभीतिश्च२१

सप्तमेशकी दशामें रोगकी ज्वाला हृदयमें स्थिर रहती है, शत्रुसे उत्पन्न बाधा(दुःख) रहती है. धनका नाश, राजाका भय होता है २१

अस्तङ्गतग्रहदशाफलम् ।

दशाधीशे वास्तं गतवति विरोधो बलवता
सदा रोगागारं हृदयकुहरे वाथ जठरे ॥
अरेराधिव्याधिव्यसनमुत मानक्षतिरथो
विरामो वित्तानामवनिपतिकोपेन भविनाम् ॥२२॥

दशापति ग्रह अस्तंगत हो तो अपनेसे बलवान् मनुष्यके साथ विरोध होवे, सर्वरोगका मकानही मनुष्यके हृदयमें यद्वा पेटमें बना रहे । शत्रुसे चिन्ता, रोग, व्यसन और मानक्षय होवे । राजाके कोपसे धनका नाश होवे ॥ २२ ॥

चन्द्रबलानुसारेण ग्रहदशाफलम् ।

दशाप्रवेशे सबलः शशाङ्को दशाफलं शस्तमतीव जन्तोः ॥ अतोऽन्यथा चेद्विपरीतमार्य्यैरुदीरितं चन्द्रबलानुमानात ॥ २३ ॥

दशाके प्रवेश समयमें तत्काल लग्नसे चन्द्रमा बलवान् हो तो जीवको उस दशाका फल अतिशुभ होता है, निर्बल होनेमें विपरीत फल होता है. इसी रीतिसे श्रेष्ठ आचार्य्योंने चन्द्रमाके बलानुसार फल कहा है ॥ २३ ॥

बलानुकूलदशाफलम् ।

वलवन्तो दशाधीशा दिशन्ति सकलं फलम् ॥
निर्वला नैव कुर्वंति मध्यं मध्यवला नृणाम् ॥ २४ ॥

जो ग्रह बलवान् हैं वे अपनी दशामें अपना उक्त फल पूर्ण देते हैं, निर्बल ग्रह पूरा फल नही देते, जो मध्यबली हैं वे फल भी मध्यम ही करते हैं ॥ २४ ॥

भावाधीशानां बलानुसारफलम् ।

लग्नेशस्य दशाफलं बहुधनं वित्तेशितुः पञ्चतां
कष्टं वेति सहोदरालयपतेः पापं फलं प्रायशः ॥
तुर्य्यस्वामिन आलयं किल सुताधीशस्य विद्यासुखं
रोगागारपतेररातिजभयं जायापतेः शोकताम्॥२५॥

लग्नेशकी दशामें बहुत धन होना फल है. द्वितीयेशकी दशामें मृत्यु अथवा कष्ट, तृतीयेशकी दशामें बहुधा पाप फल होता है, चतुर्थेशकी दशामें गृहसुख, पंचमेशकी दशामें विद्याका सुख, षष्ठेशकी दशामें शत्रुभय, सप्तमेशकी दशामें शोक होता है ॥ २५ ॥

मृत्युं मृत्युपतेः करोति नियतं धर्मेशितुः सुक्रियां
वित्तं राज्यपतेर्नृपाश्रयमथो लाभं हि लाभेशितुः ॥
रोगं द्रव्यविनाशनं च बहुधा कष्टं व्ययेशस्य वै
पूर्वैरङ्गभृतामुदीरितमिदं तन्वादिभावेशजम् ॥२६॥

अष्टमेशकी दशामें मृत्यु निश्चय करता है, नवमेशकी दशामें

पुण्यादि कृत्य, दशमेशकी दशामें धन एवं राजाका आश्रय मिलता है, लाभेशकी दशामें लाभ, व्ययेशकी दशामें रोग, धन-नाश, बहुतसे कष्ट होते हैं. इस प्रकार साधारणफल पूर्वाचार्योंने लग्नेश आदिकोंके शरीरधारियोंको कहे हैं ॥ २६ ॥

भावाधिपो बलयुतो निजगेहगामी तुंगत्रिकोणशुभ-वर्गगतोऽपि पूर्णम्॥जन्तोः फलं किल करोति यदारि-नीचस्थानस्थितोऽशुभफलं विबलो विशेषात् ॥ २७ ॥

इति श्रीजीवनाथविरचिते भाव०दशाफलाऽध्यायः ॥ १६ ॥

जिस भावका स्वामी युक्त होकर अपनी राशि, अपने उच्च मूल त्रिकोण, शुभग्रहोंके अंशादि वर्ग आदिमें हो वह दशोक्त पूर्णफल तो निश्चय देता है, यदि शत्रुग्रह, नीचराशि आदिमें होने-से निर्बल हो तो विशेषतः अशुभफल देता है ॥ २७ ॥

इति भावकुतूहले माहीधरीभाषाटीकायां दशाफलाऽध्यायः ॥ १६ ॥

सप्तदशोऽध्यायः ।

अथ ग्रहाणां गर्वितादिभावाऽध्यायः ।

कोणे तुंगगृहे गतो निगदितः खेटस्तदा गर्वितो मित्रर्क्षे गुरुसंयुतोऽपि मुदितो मित्रेण युक्तेक्षितः ॥ पुत्रस्थानगतोऽगुभौमरविजार्कैः संयुतो लज्जितः पापारिग्रहवीक्षितो हि रविणा संक्षोभितः कीर्तितः १

अब ग्रहोंकी गर्वितादि दशा कहते हैं-कि, जो ग्रह अपने मूल त्रिकोण वा उच्चमें हो वह गर्वित कहाता है, मित्रराशिवाला तथा बृहस्पतिके साथवाला तथा अपने मित्रसे युक्त वा दृष्ट भी मुदित होता है । और पंचमस्थानमें स्थित एवं राहु, मंगल, सूर्य,शनिसे युक्त लज्जित, पापग्रह अथवा शत्रुसे दृष्ट वा सूर्यसे दृष्ट ग्रह क्षोभित कहाता है ॥ १ ॥

यो मन्दारियुतेक्षितोऽरिभगतः खेटः क्षुधापीडितो
यः पापारियुतेक्षितो न च शुभैर्दृष्टस्तृषार्तोऽम्बुभे ॥
गर्वाद्यो मुदितोऽथ लज्जित इति प्रक्षोभितः कीर्तितो
विद्भिः संक्षुधितस्तृषार्त इह षड्भावा ग्रहाणाममी २॥

जो ग्रह शनि अथवा शत्रुग्रहसे युक्त वा दृष्ट हो और शत्रुराशिमें हो वह क्षुधापीडित और जो पापग्रहसे,शत्रुग्रहसे युक्त दृष्ट हो परन्तु शुभग्रह उसे न देखे,चतुर्थस्थानमें हो वह तृषार्त होता है. गर्वित १ मुदित २, लज्जित ३, क्षोभित ४, क्षुधित ५, तृषार्त ६ ये छः भाव ग्रहोंके विद्वानोंने कहे हैं ॥ २ ॥

गर्वितादिभावफलम् ।

क्षुधितः क्षोभितो वापि यत्र तिष्ठति तं बलात् ॥
विनाशयति पुष्णाति मुदितो गर्वितो ग्रहः ॥ ३ ॥

क्षुधित तथा क्षोभित ग्रह जिस भावमें हो उसका जबरदस्ती नाश करता है । जिसमें मुदित वा गर्वित ग्रह हो उस भावको पुष्ट करता है ॥ ३ ॥

कर्मभावगतो यस्य लज्जितस्तृषितोऽथवा ॥
क्षोभितः क्षुधितो वापि स दरिद्रो नरो भवेत् ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके दशमभावमें लज्जित अथवा तृषित यद्वा क्षोभित और क्षुधित ग्रह हो वह दारिद्र होता है ॥ ४ ॥

लज्जितः पुत्रभावस्थः पुत्रनाशकरो मतः ॥
क्षोभितस्तृषितो यस्य सप्तमे स्त्री न जीवति ॥ ५ ॥

लज्जितग्रह पंचमभावमें हो तो पुत्रनाश करनेवाला कहा है । जिसका क्षोभित वा तृषित ग्रह सप्तमभावमें हो उसकी स्त्री नहीं बचती है ॥ ५ ॥

अथ गर्वितदशाफलम्।

नवालयारामसुखं नृपत्वं कलापटुत्वं विदधाति पुंसाम् ॥ मदार्थलाभं व्यवहारवृद्धि दशा विशेषादिह गर्वितस्य ॥ ६॥

गर्वितग्रहकी दशा पुरुषोंको नवीन घर,बगीचाका सुख, राजत्व तथा कला (६४ कलाओं) में चातुरी, मद, धनका लाभ तथा व्यवहारमें वृद्धि करती है ॥ ६ ॥

मुदितग्रहदशाफलम्।

भवति मुदितपाके वासशाला विशाला
विमलवसनभूषाभूमियोषासुसौख्यम् ॥
स्वजनजनविलासो भूमिपागारवासो
रिपुनिवहविनाशो बुद्धिविद्याविकासः ॥ ७ ॥

मुदित ग्रहकी दशामें रहनेका घर बडा बनता है,निर्मल वस्त्र, भूषण तथा भूमि और स्त्रियोंका सुख मिलता है । अपने मनुष्य तथा साधारण मनुष्योंसे विलास, राजाके घरमें निवास, शत्रुसमूहका विनाश, वुद्धि तथा विद्याका प्रकाश होता है ॥ ७ ॥

लज्जितग्रहदशाफलम्।

दिशति लज्जितखेटदशावशाद्रतिविराममतीव मतिक्षयम् ॥ सुतगदागमनं गमनं वृथा कलिकथाऽभिरुचिं न रुचिं शुभे ॥ ८ ॥

लज्जितग्रहकी दशा विवशतासे रतिक्रीडाका विराम (वियोग), बुद्धिका क्षय, पुत्रको रोग, व्यर्थ सफर, कलहसंबंधी वार्तामें रुचि और शुभकृत्यमें अरुचि करती है ॥ ८॥

क्षोभितग्रहदशाफलम्।

संक्षोभितस्यापि दशा विशेषाद्दरिद्रजातं कुमतिं च कष्टम् ॥ करोति वित्तक्षयमंघ्रिबाधां धनाप्तिबाधामवनीशकोपात् ॥ ९ ॥

क्षोभित ग्रहकी दशा विशेषतः दरिद्रताका क्लेश करती है तथा कुत्सित बुद्धि, अतिकष्ट, धनक्षय, पैरोंमें पीडा, धनके आमदमें राजकोपसे बाधा करती है ॥ ९ ॥

क्षुधितग्रहदशाफलम्।

क्षुधितखगदशायां शोकमोहादितापः
परिजनपरितापादाधिभीत्या कृशत्वम् ॥
कलिरपि रिपुलोकैरर्थबाधा नराणा-
मखिलबलनिरोधो बुद्धिरोधो विशेषात् ॥ १० ॥

क्षुधित ग्रहकी दशामें मनुष्योंको शोक, मोह (अज्ञान) आदि संताप होते हैं, स्वजनोंसे संताप मिलता है, मानसी व्यथा और भयसे शरीर दुबला होता है, शत्रुजनोंसे कलह होता है तथा धनकी पीडा, समस्त बलका निरोध (रुकावट), बुद्धिका रोध भी विशेषतः होता है ॥ १० ॥

तृषितग्रहदशाफलम्।

तृषितखगदशायामङ्गनामङ्गमध्ये
भवति गदविकारो दुष्टकार्याधिकारः॥
निजजनपरिवादादर्थहानिः कृशत्वं
खलकृतपरितापो मानहानिः सदैव ॥ ११ ॥

तृषितग्रहकी दशामें शरीरियोंके शरीरके बीचमें रोगका विकार होवै, दुष्टकार्यका अधिकार मिले, अपने मनुष्योंसे विवाद होवे,

जिससे धनहानि होवे, अंग माडे होजावें, दुष्टजनके कृत्यसे संताप युक्त रहे, सर्वदा मानहानि होवे ॥ ११ ॥

ग्रंथकर्तृप्रशंसा ।

आसीच्छ्रीकरुणाकरो बुधवरो वेदाङ्गवेद्याकरं-
स्तत्सूनुः क्षितिपालवंदितपदः श्रीशंभुनाथः कृती ॥
विद्वव्रातकृतादरो गणितविज्ज्योतिर्विदां प्रीतये
चक्रे भावकुतूहलं लघुतरं श्रीजीवनाथः सुधीः॥१२॥

इति श्रीमन्मैथिलशंभुनाथगणकात्मजजीवनाथ-विरचिते भावकुतूहले ग्रहाणां गर्वितादिदशाफलाऽध्यायः ॥१७ ॥

पहिले मैथिलदेशमें श्रीकरुणाकरनाम पंडितश्रेष्ठ वेदवेदांगके जाननेवालोंमें श्रेष्ठ यद्वा खान (उक्तविद्याओंको प्रगट करनेवाली भूमि) में भया,इनका पुत्र पण्डित शम्भुनाथ भया,जिसके चरणोंकी वंदना राजालोग करते थे तथा विद्वानोंके समूहते आदरणीय एवं गणितविद्या जाननेवाला रहा, इसका पुत्र श्रीजीवनाथ नामा पंडितने ज्योतिर्विज्जनोंके प्रसन्नताके लिये छोटासा ग्रंथ भावकुतूहल (जिसमें पाठ स्वल्प, प्रयोजन बहुत है) बनाया ॥ १२ ॥

इति भावकुतूहले माहीधरीभाषा० ग्रहाणां गर्वितादिदशाफलाऽध्यायः॥ १७॥

नवाब्धिनवभूमिविक्रमदिवामणेर्वत्सरे महीधरधरा-सुरष्टिहरिसंज्ञके पत्तने ॥ विवर्णमिह भाषाया फलि-तभावकौतूहलेऽकरोच्छिशुमनोमुदे चपलतां क्षम-ध्वं बुधाः॥१॥ जातकेषु बृहदाख्यजातकस्ताजिकेषु खलु नीलकंठिका॥होरिके फलविधौ शिरोमणी तौ मया प्रकटितौ विवर्णितौ ॥ २ ॥ लक्षणैरसमस्तोपि

ग्रहावस्थाविधानतः ॥ सामुद्रिकविचारैश्च विशेषोऽत्र प्रदृश्यते॥३॥अतो मया प्रकटितं लौकिक्या भाषया भुवि ॥ वेणीमाधवसंतुष्ट्यै ग्रंथो भूयात्समर्पितः॥४॥

भाषाकारका समर्पण है कि, विक्रमार्क संवत् १९४९ में महीधर शर्मा ब्राह्मणने राजधानी टीहरी नगर (जिला गढवाल) ने पाठक बालकोंकी मनप्रसन्नताके हेतु इस फलितग्रंथ भावकुतूहलका विवरण भाषामें किया इस भाषामें जो कुछ गलती हो उसे विद्वान् लोग क्षमा करें ॥ १ ॥ जातकों (जन्मफलों) में बृहज्जातक,ताजिकों (वर्षफलों) में प्रश्नसहित नीलकंठी, ज्योतिषके फलप्रकरणमें शिरोमणि है इनको मैंने भाषाटीका करके लोकोपकारार्थ प्रकट कर दिया कि, जिससे अन्य ग्रंथोंमें श्रम करनेकी आवश्यकता नहीं है ॥ २ ॥ यह ग्रंथ तो जातकलक्षणोंसे संपन्न नहीं परंच इसमें ग्रहोंकी अवस्थाओंके तथा सामुद्रिक लक्षणोंके विचार विशेष होनेसे इसकी विशेषता देखनेमें आई ॥ ३ ॥ इससे मैंने इसको देशभाषामें टीका करके संसारमें प्रकट किया । यह ग्रंथ मेरा वेणीमाधवकी प्रसन्नताके अर्थ समर्पित होवे ॥४॥ शुभम्॥

॥ समाप्तोऽयं ग्रन्थः ॥

